# सुभ

## अथवा

# मरणोत्तर-जीव

सौ० सुभद्राबाई ( श्री० व्ही० डी० ऋषी की पत्नी )

# सूचीपत्र

# लेखक का निवेदन

---

परलोकविद्या-ग्रंथ-माला की यह प्रथम संख्या है। इसमें दिया हुआ वर्णन कदाचित् अन्य लोगों के अनुभव से तथा अभिमत से असङ्गत हो। किन्तु मेरे प्रयोग में जो अनुभव आये हैं, वे इसमें लिख दिये गये हैं। मनोरञ्जक सन्देश जो भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा आए हुए हैं, उन सब के सङ्कलित करने से कदाचित् पाठकों को समझने में कुछ कठिनाई होती, अतः इसके लिए वे क्षमा करेंगे। द्वितीय संख्या में परलोक-विद्या का तत्व तथा चिकित्सा और आक्षेप निरसनादि भाग रहेंगे। प्रायः पुनर्जन्म का सिद्धान्त इस विद्या से असंगत समझा जाता है। उन सब बातों का विवेचन भी उसमें रहेगा। यदि इस प्रथम प्रयत्न को हिन्दीजनता उत्तेजित करेगी तो द्वितीय भाग शीघ्र ही प्रकाशित किया जायगा। इस पुस्तक के प्रकाशन में श्रीमान् रीवाँनरेश महाराज गुलाब सिंह जी, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा और श्रीयुत चिन्तामणि पाँडे ने सहायता दी है। इसलिए मैं इन महानुभावों को धन्यवाद देता हूँ।

—वि० दा० ऋषि।

---

# भूमिका ।

( ले०—श्रीयुत् चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा, एम. आर. ए. एस. )

मरणोत्तर अवस्था का नाम परलोक है। परलोक का अस्तित्व प्रायः सब आस्तिक स्वीकार करते हैं। किन्तु, जड़वादी और आधुनिक शिक्षा-सम्पन्न विद्वानों को परलोक के अस्तित्व पर विश्वास नहीं। प्राचीन कालीन लोगों को परलोक के अस्तित्व पर दृढ़ विश्वास था। हमारे भारतवर्ष में चर्वाकादि नास्तिकों को छोड़ यावत् सनातनधर्मी पारलौकिक जीवन तथा परलोकगत मनुष्यों से बातचीत करने के सम्बन्ध में पूर्ण आस्थावान् थे। आज धर्मग्लानि के कारण हममें से अनेकों को अपने पूर्वजों के वचनों पर यथोचित विश्वास नहीं रहा। लोग परलोक की बातों को दन्तकथा मानने लगे हैं। भारतीय महायुद्ध के पश्चात्, भगवान् वेदव्यास के अनुग्रह से, कौरवों की विधवा स्त्रियों को उनके परलोकगत पतियों के दर्शन प्राप्त हुए थे और उनमें परस्पर बातचीत भी हुई थी। रामायणकाल में इस लोक और परलोक—स्थित मनुष्यों में घनिष्ट सम्बन्ध था। अग्निपरीक्षा के पीछे महाराज दशरथ का लंका में प्रकट होकर श्रीराम जी के सामने सीता जी की विशुद्धता का प्रतिपादन करना अब गन्धर्वनगरी अथवा

आकाशपुष्प के समान असम्भव कल्पना नहीं है। हम लोगों के सौभाग्य से परलोक के अस्तित्व के विषय में नवीन नवीन प्रमाण उपलब्ध हो रहे हैं, जिनके सहारे डँवाडोल विचारों के अनेक जन परलोक के अस्तित्व पर पूर्ण आस्थावान् होते चले जा रहे हैं।

इस लोक का जीवन समाप्त होने पर मनुष्य की आत्मा का क्या होता है, यह एक निरतिशय महत्वपूर्ण प्रश्न है। जीवन भर की कमाई को और अपने प्राणोपम आत्मीय जनों को छोड़, मनुष्य कहां चला जाता है, क्या इसका भी कुछ पता लगा है? इस प्रश्न के उत्तर में अनेक लोग तो कह उठेंगे कि, यह प्रश्न करना ही निर्थक है। क्योंकि हमारे शास्त्रों में स्पष्ट ही लिखा है—"कर्मानुगो गच्छति जीव एकः" किन्तु, सूक्ष्म रीत्या विचार करने से यह मालूम पड़ेगा कि, ऐसी जिज्ञासा आवश्यक है। केवल आत्मा का अमरत्व प्रतिप्रादन करने से कुछ समाधान अवश्य हो जाता है, किन्तु आत्मा का स्वरूप वर्णन करना कठिन है। स्वयं वेदों ने 'नेति' "नेति" कहकर इस विषय में अपनी असमर्थता प्रकट की है। ऐसी दशा में मरणोत्तर परिस्थिति का ज्ञान सम्पादन करना बड़े महत्व का विषय है। कठोपषिद् में एक जगह लिखा है कि, यमराज से नचिकेत ने पूछा कि, मरने के बाद आत्मा का क्या होता है। इसके उत्तर में यमराज ने कहा कि, "तुम अन्य जो चाहो सो पूछो, मैं बतलाऊँगा, किन्तु यह बात मुझसे मत पूछो।" इससे भी इस विषय का महत्व तथा इसकी गूढ़ता और भी अधिक बढ़ जाती है। साथ ही इससे यह भी प्रकट होता है कि,

लोगों को प्राचीन काल से इस विषय की जिज्ञासा चली आ रही है। ऐसी दशा होने पर, यह कम सौभाग्य की बात नहीं है कि, आधुनिक विचारवान लोगों ने परलोकविद्या द्वारा, इस विषय में अप्रतिभ ज्ञान प्राप्त किया है।

इस विद्या की उत्पत्ति आज से पचहत्तर (७५) वर्ष पूर्व अमेरिका देश में हुई। तब से लेकर आज तक, योरोप आदि सुशिक्षित देशों में, इस विद्या का प्रचार और उन्नति दिन दूनी रात चौगुनी हुई है। यह तो इस संसार की चिर-प्रचलित प्रथा है कि, जब कभी किसी ने नया सिद्धान्त स्थापित किया, अथवा कोई नया आविष्कार किया; तब लोगों ने उसकी हँसी ही नहीं उड़ाई, किन्तु आविष्कारकर्ता के प्राण तक लेने का उद्योग किया गया। संसार की इसी चिर-प्रचलित प्रथा के अनुसार परलोकविद्या का भी उपहास किया गया और अब भी किया जाता है। अनेक विद्वान कहने लगे, और कहा भी करते हैं कि, परलोक का हाल जानना संभव नहीं। जो इसे जानने का दावा करते हैं, वे चालबाज़ या धूर्त हैं। इन विद्वानों का ऐसा मत प्रकट होने पर अनेक जिज्ञासुजनों ने इस विद्या की जांच के लिये कई संस्थाएँ स्थापित की हैं। इन संस्थाओं ने अविरल परिश्रम किया है और अन्त में वे इस परिणाम पर पहुंची हैं कि, परलोकविद्या सत्य है और इसके द्वारा मृत्युलोकवासी और परलोकस्थित आत्माओं का घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। इस विद्या की सत्यता की जाँच करनेवाले स्वनामधन्य विद्वानों ने अपने कई एक अत्यन्त

उपयोगी अनुभव लोगों के सन्मुख प्रकट किये हैं। सुप्रसिद्ध सर आलिवर लाज ने भी केवल इस विद्या का सत्य होना ही स्वीकृत नहीं किया, प्रत्युत इस विद्या पर अपना पूर्ण विश्वास भी प्रकट किया है।

ईश्वर का अस्तित्व, आत्मा का अमरत्व, मरणोत्तर सूक्ष्म शरीर-युत मानवी अस्तित्व, परलोक-गत मनुष्यों से वार्तालाप, कर्मफलोपभोग और पुनर्जन्मादि सिद्धान्त इस विद्या की सहायता से सिद्ध हो चुके हैं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में इन सिद्धान्तों का वर्णन तो पाया ही जाता है, किन्तु आजकल के हुज्जती लोगों के मन में, इन शास्त्रीय सिद्धान्तों पर विश्वास उत्पन्न करने के लिये परलोकविद्या अपूर्व साधन है। इस विवेचन से पाठकों को विदित होगा कि, इस विद्या का धर्म से कैसा घनिष्ट सम्बन्ध है। इन सिद्धान्तों पर श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए अन्तःस्फूर्ति, दन्तकथा आदि विवादग्रस्त प्रमाणों का सहारा लेने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। प्रत्यक्ष-प्रमाण से ये सिद्धान्त अपने आप प्रतिपादित हो जाते हैं। बेलजियम में गत वर्ष परलोक विद्या-विशारदों की एक कांग्रेस में उक्त सिद्धान्त सर्वसम्मति से ग्रहण किये गये थे।

योरोप तथा अमेरिका में इस विद्या के प्रसार के लिये बड़े जोरशोर से उद्योग किया जा रहा है। इन देशों में इस विद्या के प्रचार के लिये कई एक मासिक एवं साप्ताहिक पत्र निकलते हैं। अनेक स्थानों पर व्याख्यानों द्वारा परलोक विद्या के सिद्धान्त तथा

महत्व समझाये जाते हैं। इस हुज्जत पसन्द ज़माने में उन देशों में बसने वाले लोगों का ईसाई धर्म में विश्वास नहीं रहा। अतएव उनके गिरजाघरों में सुशिक्षित लोगों की उपस्थिति दिन दिन घटती चली जा रही है। जो लोग उपस्थित होते हैं, वे भी केवल "गतानुगतिकत्व" की लोकोक्ति को चरितार्थ मात्र करते हैं। उधर जहाँ परलोकविद्या संबन्धी सभायें होती हैं, वहां श्रोताओं की संख्या हज़ारों पर पहुँच जाती है। उस दिन लण्डन की एक सभा में डेढ़ हज़ार श्रोता उपस्थित थे। उस सभा में परलोकविद्या-विशारद सर आर्थर कोननडाइल का व्याख्यान हुआ था। केवल इंगलेंड ही में इस विद्या का प्रचार करने वाली चार सौ संस्थाएँ हैं। अमेरिका में कई लाख परलोक विद्यावादी हैं। अखिल संसार के परलोक-विद्या-वादियों का एक अन्तर्राष्ट्रीय संघ फ्राँस की राजधानी पेरिस में स्थापित हुआ है। इस विद्या का नियमित रीति से अभ्यास करना, प्रचार करना और परलोकविद्यावादियों में भ्रातृभाव बढ़ाना इस संघ के मुख्य उद्देश्य हैं। इन बातों से पाठक समझ सकेंगे कि, इस विद्या का प्रचार करने के लिये प्रगमनशील पाश्चात्य देशवासी कितने अग्रसर हो रहे हैं।

भारतवर्ष में भी इस विद्या का प्रचार करने के हेतु कई एक महानुभावों ने उद्योग करना आरम्भ कर दिया है। समाचारपत्रों एवं मासिकपुस्तकों के पाठकों को विदित होगा कि, श्रीयुत वि० दा० ऋषि, बी० ए० एल-एल० बी० इस विद्या का प्रचार, इस देश में करने के लिये गत कई वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु,

दुर्भाग्यवश आप का कार्य सङ्गठित रीति से अभी तक अग्रसर नहीं हो पाया। गत वर्ष पेरिस के अन्तर्राष्ट्रीय सङ्घ की जनरल कमिटी में भारत की ओर से श्रीयुत ऋषि जी प्रतिनिधि की हैसियत से आमंत्रित किये गये थे, किन्तु आर्थिक साहाय्य के अभाव से आपका जाना नहीं हो सका! आप व्याख्यान, लेखन तथा प्रत्यक्ष प्रयोगों द्वारा इस विद्या का निरन्तर प्रसार करने का सराहनीय कार्य कर रहें हैं। गत वर्ष अखिल भारतवर्ष की प्रथम परलोकविद्या कान्फरेंस जो कोकनाड़ा में दिसम्बर मास में हुई थी, उस कान्फरेंस के सभापति का आसन श्रीयुत ऋषि जी ने ही सुशोभित किया था। अब इस कान्फरेंस में स्वीकृत मन्तव्यानुसार कार्य होना परमावश्यक है। गतवर्ष ही से ऋषि जी ने The Indian Spiritualistic Society ( भारतीय परलोक-विद्या-प्रसारक मण्डल ) नाम की एक संस्था स्थापित की है। इसके उद्देशों के पढ़ने से ऐसी संस्था की इस देश के लिये कैसी आवश्यकता है, यह बात सहज ही में अवगत हो जाती है। सच तो यह है कि, श्रीयुत ऋषि जी ने एक बड़ी कमी को पूरा किया है।

इस राजनीति प्रधानयुग में हमारे अनेक बन्धु यह पूछने लगेंगे कि, क्या ऐसी संस्था की स्थापना से भारतवर्ष को स्वराज्य प्राप्ति में भी कुछ सहायता मिल सकेगी, अथवा उसका मार्ग सुगम हो सकेगा ? यदि ऐसा नहीं है तो, इसके द्वारा हमें कौनसा व्यावहारिक अथवा पारमार्थिक लाभ प्राप्त हो सकेगा ? इन प्रश्नों के उत्तर में मुक्तकण्ठ से कहा जा सकता है कि, इस विद्या के

प्रचार से देश की आशानुरूप उन्नति हो सकती है। क्योंकि हमारा भारतवर्ष धर्म-प्रधान देश है। किसी देश में खुदा का कोई पैग़म्बर और किसी देश में खुदा का इकलौता बेटा उत्पन्न हुआ। किन्तु, इस पृथिवीतल पर भारतवर्ष को छोड़, अन्य कोई भी ऐसा देश नहीं, जहाँ साक्षात् भगवान् अवतीर्ण हुए हों। यह गौरव भारतवर्ष ही को प्राप्त है। इसलिये यह देश सभ्यता और आध्यात्मिक ज्ञान में सारे संसार का गुरु माना जाता है। ऐसा होने पर भी अन्य देशों की तरह इस देश में भी लोगों के मन में धर्म की ओर से ग्लानि बढ़ती जा रही है। इसी से इस देश के उत्थान के लिये अनेक देशभक्तों के अपना सर्वस्व बलिदान करने पर भी, देश उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो रहा है। धर्म पर लोगों की पूर्ण अटल आस्था हुए बिना देश का उद्धार होना सम्भव नहीं। महात्मा गांधी जी जैसे राजनीति-शिरोमणि नेता का भी यही सिद्धान्त है। तब इस सिद्धान्त के अनुसार धर्मजागृति कैसे हो ? यद्यपि भगवान् की प्रतिज्ञा है कि, जब जब धराधाम पर धर्मग्लानि बढ़ती है, तब तब वे स्वयं अवतीर्ण होते हैं; तथापि उनके अवतीर्ण होने के लिये भूमि तैयार करना हम लोगों का कर्तव्य है। धर्म के सिद्धान्तों का, परलोक का अस्तित्व सिद्ध किये बिना, स्थापित होना कठिन है। शास्त्रीय वचनों के अतिरिक्त लोग अन्य प्रमाण भी तो चाहते हैं। अतः इस विद्या का प्रचार होने से लोगों की श्रद्धा इस ओर सहज ही में बढ़ जायगी। हमारे किये हुए भले बुरे कर्मों का क्या परिणाम होता

है ? यह बात, यदि हमारे प्रिय परलोकगत इष्टमित्र तथा आत्मीय जन बतलाने लगें, तो इस लोक के लोगों के आचरण बहुत कुछ सुधर सकते हैं।

इतना ही नहीं, किन्तु इस विद्या के जानने से मृत्यु का भय भी जाता रहता है। एक बार महात्मा गांधी ने लिखा था कि, देश-सेवकों को मृत्यु से डरना न चाहिये। इस विद्या के प्रचार से यह मृत्युभय अपने आप दूर हो जायगा। अतः देश के अभ्युदय में इस विद्या द्वारा आशानुरूप साहाय्य प्राप्त होगा।

अपने प्राणोपम बन्धु बान्धवों की मृत्यु होने पर उनका वियोगजन्य शोक लोगों को असह्य हो जाता है। ऐसे समय शोकसन्तप्त हृदयों में सान्त्वना प्रदान कर उनको उनके कर्तव्य-पथ पर आरूढ़ .कराना हम लोगों का परमावश्यक कर्त्तव्य हो जाता है। ऐसे समय, क्या यह कह देने से कि "आत्मा अमर है", कोई शान्त हो सकता है ? क्या अपने मृत सम्बन्धियों को कोई सहज में भूल सकता है ? विरह-विदग्ध जन तो यही इच्छा रखते हैं कि, मृतक से फिर मिलें और उसको परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करें। अतः परलोकविद्या ही ऐसी सब कठिनाइयों को दूर करने और विरह-विदग्ध-जनों के हृदय में सान्त्वना प्रदान करने का एकमात्र साधन है। इस विद्या द्वारा मृत ननुष्यों के संदेश आते हैं। उनकी ध्वनि सुन पड़ती है और कहाँ तक लिखें उनके छायाचित्र ( फोटो ) भी लिये नाते हैं। यही क्यों, अब तो मृत लोगों से हम लोग प्रत्यक्ष वर्त्तालाप भी कर सकते हैं। ये सब

काम तभी हो सकते हैं, जब हम उचित-मार्ग का अवलम्बन करें। और यथाविधि उद्योग करे।" इस संसार में प्रायः दुःख, मृत्यु-जन्य-विपत्ति से लोगों को सहन करना पड़ता है" यह कथन स्वर्गीय मोतीलाल घोष (सम्पादक, 'अमृतबाजार पत्रिका') का है। जलबाढ़ से अथवा अन्य किसी कारण से मनुष्यों पर जो विपत्ति पड़ती है, उसको दूर करना "भूतदया" का काम माना जाता है। इन कामों में लोग हजारों रुपये खर्च करने के लिये बाढ़ पोड़ित स्थानों में भेजा करते हैं। किन्तु मृत्यु-जन्य दुःख से सन्तप्त हृदयों की सान्त्वना के लिये कोई कुछ नहीं करता! लोग इसे "ईश्वर की इच्छा" बतला सन्तोष कर बैठ जाते हैं। निस्सन्देह हरेक कार्य ईश्वर की इच्छा ही से होता है; किन्तु मानवीय प्रयत्न भी तो अवश्य ही किया जाता है। अतः विरह दग्धों को उनके परलोकगत प्रिय जनों के साथ बातचीत करवाना भूतदया का कार्य है और अवश्य करणीय काय है। यह बड़ी से बड़ी समाज सेवा है। ऐसे सेवासङ्घ प्रत्येक नगर और गाँव में स्थापित करने की आवश्यकता है। Parshotidal

धर्म सम्बन्धी झगड़ों की जड़ अज्ञान और दुराग्रह है। अपने धर्मग्रन्थों पर अनुचित कट्टरता के भाव रखने के कारण लोग आपस में लड़ बैठा करते हैं। स्वतंत्र प्रमाण की आवश्यकता का अनुभव इने गिने लोगों ही को होता है। यदि धर्म-ग्रन्थों के अतिरिक्त धर्म के तत्वों के विषय में स्वतंत्र प्रमाण उपलब्ध करने का प्रयत्न सफल हो जाय, तो अनेक धार्मिक बखेड़े अपने आप

मिट जायँ। उदाहरण के लिए हिन्दुओं के पुनर्जन्मवाद ही को ले लीजिये। इस सिद्धान्त को मुसलमानों और ईसाइयों के धर्मग्रन्थ मानने को तैयार नहीं हैं। यदि ये दोनों धर्म वाले शान्ति के साथ विचार करें और धार्मिक कट्टरपन को छोड़ परलोकवासियों से पूछें कि "क्या मनुष्य का पुनर्जन्म होता है ?" और इस सिद्धान्त में उनका अनुभव जानने का प्रयत्न करें, तो यथार्थ बात जानने में बिलम्ब न लगे और झगड़ा भी दूर हो जाय। इसी प्रकार आर्य-समाजी भाई श्राद्ध तर्पणादि की उपयोगिता स्वीकार नहीं करते और तर्कवाद से इस विषय पर वितण्डावाद करते हैं। यदि पर-लोक वासियों की साक्षी से इस प्रश्न की मीमांसा करने को तैयार हों, तो यह मतभेद भी सहज ही में मिट सकता है। इन विचारों पर ध्यान देते हुए, कहा जा सकता है, कि परलोक विद्या का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तीर्ण है और धार्मिक वादविवादों को मिटाने के लिए यह एक अनुपम साधन है। अतः इस विद्या के प्रचार की नितान्त आवश्यकता है।

स्वर्गीय महानुभावों की पुण्यतिथियां मनाई जाती हैं। उनकी स्मृति में पुस्तकालय अस्पताल अथवा उनकी पत्थर की मूर्तियाँ या उनके तैलचित्र रखे जाते हैं। यह एक प्रथा सी हो गयी है। किन्तु उन स्वर्गीय महानुभावों की वास्तविक क्या इच्छा है, यह जानने का प्रयत्न कोई नहीं करता। क्योंकि यह प्रयत्न नितान्त असम्भव माना जाता है। किन्तु यथार्थ में ऐसा है नहीं। थोड़े दिनों की बात है कि, रूस के मृत लेनिन की आत्मा ने इंगलेंड में

जाकर संदेशा दिया था। श्रीयुत ऋषिजी के पास भी श्रीरामतीर्थ का संदेशा आया था, जो इस पुस्तक में अन्यत्र उद्धृत कर दिया गया है। इससे यह बात संभव है। आवश्यकता केवल सच्चे एवं सतत प्रयत्न की है। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि, मृत मनुष्यों को आत्मायें इहलोक को नहीं भूलतीं। उनका प्रेम-बन्धन अटूट बना रहता है। कितनी बार वे हमसे मिलने आती हैं, किन्तु स्थूल दृष्टि से हम उनको देख नहीं पाते। अतः परलोकविद्या द्वारा हमको उचित है, हम उनके विचार, उनकी इच्छाएं तथा अन्य आवश्यक बातें जानें। इन सब कारणों से यह परमावश्यक है कि, परलोकविद्या सम्बन्धी आन्दोलन देशी भाषाओं में अव्याहत गति से चलाया जाय। इससे हमारी देशी भाषाओं में परलोकविद्या सम्बन्धी साहित्य तैयार होगा। देशी भाषाओं में परलोकविद्या के प्रचार से सर्वसाधारण की रुचि इस विद्या की ओर बढ़ेगी और वे दत्तचित्त हो इस कार्य के करने में अग्रसर होंगे। आशा है, इस प्रधान उद्देश्य की सिद्धि में यह पुस्तक बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

—:o:—

सौ० सुभद्राबाई की मृत्यु के उपरान्त का फ़ोटोग्राफ़

# मरणोत्तर-जीवन

## प्रथम अध्याय

### परलोकविद्या की खोज

गरेज़ी भाषा में एक कहावत है—कभी कभी बुराई से भी भलाई होती है। इस कहावत का अनुभव कभी कभी बड़ी अद्‌भुत रीति से होता है। चार पाँच वर्ष पूर्व मेरे जीवन में एक ऐसी घटना हुई कि जिससे मेरे समस्त पूर्व विचारों में एक विलक्षण परिवर्तन हो गया।

संसार में देखा जाता है कि प्रत्येक क्षण अनेक देहधारी मरते रहते हैं। वास्तव में कवि-कुल-गुरु कालिदास के कथनानुसार मृत्यु शरीरधारियों की प्रकृति है और जीवन विकृति है। इस वचन की ओर जैसा चाहिये वैसा ध्यान लोगों का नहीं जाता,

किन्तु आगे के अध्यायों में मरने के बाद की अवस्था के विषय में दिया हुआ वर्णन पढ़ने से इस महत्वपूर्ण विलक्षण विषय के सम्बन्ध में यथार्थ ज्ञान होगा, ऐसी हमें आशा है।

लगभग पाँच वर्ष हुए मेरी धर्मपत्नी के उदर में एक भयङ्कर रोग उत्पन्न हुआ। उस रोग को दूर करने के लिये यथासम्भव सब प्रकार के उपायों का आश्रय ग्रहण किया गया, किन्तु फल कुछ भी नहीं हुआ। अन्त में यही रोग उसके लिये प्राणघातक सिद्ध हुआ। उसकी मृत्यु के समय जो डाक्टर आये थे उनसे मैंने पूछा—"क्या यह जा रही है ?" मेरे मुँह से "क्या यह मर रही है ?" ऐसा प्रश्न न निकल सका। प्रायः ऐसे अवसर पर लोग यही पूँछा करते हैं कि "क्या अमुक मर रहा है या मर रही है ?" मुझे यह विश्वास या आशा नहीं थी कि मेरे मुख से निकली ऊपर की शब्दराशि इतनी महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। किन्तु इस घटना के पीछे जो अनुभव प्राप्त हुआ उससे यह सिद्ध हो गया कि मेरी प्रिय पत्नी मृत्यु के समय मेरी सब बातें सुन रही थी और समझ रही थी। उसने मुझसे कहा कि—"तुम मरने पर भी मेरा पीछा न छोड़ोगे और जहाँ मैं जाऊंगी वहाँ भी तुम मुझे सुख से न रहने दोगे।" वास्तव में उसके ये वाक्य सत्य निकले। उसकी मृत्यु इतनी शीघ्र हो जायगी मुझे इसकी स्वप्न में भी कल्पना नहीं हुई थी, किन्तु ईश्वर के नियम अनिवार्य हैं। इसी अनिवार्यता के

कारण मेरी प्रिय पत्नी का देहान्त शस्त्र-चिकित्सा कराने के बाद हो गया ।

आरम्भ में इस घटना के वर्णन को पढ़कर हमारे नवीन शिक्षा से दीक्षित नवयुवक एवं समालोचक कह उठेंगे कि क्या केवल आप ही की पत्नी का इस प्रकार शरीरान्त हुआ है ? क्या उन अन्य पुरुषों का, जिनकी स्त्रियां अब इस संसार में नहीं हैं, अपनी पत्नियों पर प्रेम न था ? यदि नहीं, तो इस घटना के उल्लेख में विचित्रता क्या है ? प्रिय पाठकों ! आप का यह कहना सत्य है । मेरी तरह कितने ही लोगों को अपनी पत्नियों के वियोग का दारुण दुःख सहना पड़ा होगा । इस अनन्त असीम संसार में न मालूम कितनी स्त्रियों का देहपात हुआ होगा और उनके पतियों का अपनी धर्मपत्नियों के ऊपर अवश्य ही अटूट प्रेम भी रहा ही होगा । किन्तु मैंने जिस घटना का ऊपर वर्णन किया है उसमें जो विशेषता है, वह आगे चल कर आप स्वयं जान जायेंगे । परलोकगमन के पीछे अपने पति को अपनी वहाँ की परिस्थिति तथा परलोकवर्णन एवं अन्य प्रकार की उपयोगी बातें कदाचित् ही किसी स्त्री ने बतलाई हों । मृत्यु के बाद कदाचित् ही किसी स्त्री ने अपना अस्तित्व सिद्ध करके अपने पति का तथा अन्य विरहियों का समाधान किया होगा । जो बात पहले असम्भव एवं कल्पनातीत मानी जाती थी, वह जिस स्त्री की मृत्यु से सत्य सिद्ध

हो गई उसके जीवन की अन्तिम घटना विशेषता रखने के कारण उल्लेखनीय है। मरने के बाद भी जिसके मानवी जीवन की अविच्छिन्न शृङ्खला स्थापित हुई है और जिसके कारण मृत्यु के पश्चात जीवन का आन्दोलन उत्तरोत्तर दृढ़ होता जा रहा है, जिसकी परलोक यात्रा से मानवी विचारों में युगान्तर उपस्थित हो गया है, जिसके परलोक से भेजे संदेश भारतवर्ष एवं इंगलेंड में भी छप चुके हैं, उसके परलोकगमन के पूर्व का वृत्तान्त जानना आवश्यक है। इस बात को ध्यान में रख कर आरम्भ की वर्णित घटना को पढ़ना उचित होगा।

परलोक से वार्तालाप करने वाला और नास्तिकों के विचारों में परिवर्तन करने वाला सर आलिवर लाज का पुत्र रेमंड जिस प्रकार एक सामान्य इंजीनियर ही था, उसी भाँति मेरी प्रिय पत्नी यद्यपि सुशिक्षिता और अंगरेज़ी पढ़ी लिखी न थी तथापि इस अपूर्व ज्ञान का परिचय देने वाली होने के कारण उसका परिचय देना परमावश्यक था। उसकी गुणराशि तथा धर्मपरायणता आदर्श एवं अनुकरणीय थी। किन्तु उसके उन सब गुणों का वर्णन करना यहाँ आवश्यक प्रतीत नहीं होता। केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है कि उसका अल्प अवस्था में मृत्यु को प्राप्त होना, अंगरेज़ी की उस कहावत को चरितार्थ करता है जिसका अर्थ यह है कि ईश्वर जिस पर प्रेम करता है वह अल्पायु में ही उसके समीप जाता है।

इस ग्रन्थ में वर्णित अनुभवों को पढ़कर पाठक यह प्रश्न करेंगे कि क्या हम भी इस सत्य का अनुसन्धान करने में प्रवृत्त हों ? क्या हमें अन्य सांसारिक कार्य करने को नहीं हैं ? ऐसे विचार वालों के प्रति हमें केवल इतना ही कहना है कि लेखक का यह अभिप्राय कदापि नहीं कि लोग सारे सांसारिक काम-काजों को छोड़ कर इसी काम में लग जायें। प्रत्युत जो ऐसा करने का विचार रखते हों, उनको हम सावधान करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि वे ऐसा कदापि न करें। किन्तु साथ ही यह बतलाना भी आवश्यक है कि लोगों को जिस प्रकार अन्य शास्त्रीय बातों पर पूर्ण विश्वास है, उसी प्रकार मरणोत्तर मानवी जीवन के सिद्धान्त पर भी उन्हें पूर्ण आस्थावान् होना चाहिये। शास्त्रीय सिद्धान्तों की सत्य विवेचना के लिये प्रत्येक मनुष्य प्रयोग द्वारा अपना विश्वास दृढ़ नहीं कर सकता, अथवा आकाशस्थ ग्रहों के वेध दूर्वीन से देख कर उन पर विश्वास नहीं करता; किन्तु प्रायः लोग अन्य अनुभवी विद्वानों के अनुभवों पर पूर्ण आस्था रख, उन पर विश्वास कर लिया करते हैं। इसी प्रकार इन विषय में लोगों को पूर्ण विश्वास करना आवश्यक है। यदि इस बातों को सत्यता कुछ अंश में प्रतीत हो कर लोग इनके अनुसार आचरण करने लगें तो मुझे इस परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त हो जायगा। भारतवर्ष के लिये पर-लोक सम्बन्धी विचार कोई नई कल्पना नहीं है, बल्कि यह कहा जा सकता है कि भारतवर्ष ही इस विद्या का उद्भवस्थान है।

प्रिय पत्नी का परलोकवास होने पर जिस प्रकार अन्य लोग आकर शोकान्वित पति को आश्वासन प्रदान करते हैं, वसे ही लोगों ने मुझे भी बहुत कुछ धीरज बंधाने का प्रयत्न किया। ऐसे अवसरों पर यह कहने की चाल है कि यह संसार अनित्य है, इसमें कभी कोई चिरकाल तक नहीं रहता, कर्मानुसार कुछ दिनों वास करने पर मृत्यु अवश्यम्भावी है, इसके लिये शोक करना अथवा बार बार स्मरण करना अनावश्यक है, संसार की गति देख कर अपना काम करना चाहिये, जो गया सो गया, वह फिर मिल नहीं सकता, रघुवंश में इन्दुमती की मृत्यु होने पर राजा अज को समझाते हुए कालिदास ने लिखा है कि "हे राजन्! भवतानानु मृतोपि सा लभ्यते।" अथात् यदि कोई स्वयं मर भी जाय तो गये हुए प्राणी से भेंट होनी असम्भव है। पुण्डरीक की अकस्मात् मृत्यु होने पर महाश्वेता ने देह त्यागने का निश्चय किया था। उस समय उसे इस अनुचित कार्य से रोकने के लिये और सतीगमन की निष्फलता समझाने के लिये कवि बाण भट्ट ने लिखा है कि यह मार्ग अज्ञानता द्योतक एवं मूर्खता पूर्ण है। क्योंकि कर्मानुसार वह प्राणी भिन्न भिन्न लोकों में गमन करता है। उससे फिर मिलना असम्भव है। वेदान्तियों का कथन है कि आत्मा अमर है, और सागर का एक जल विन्दु उसी सागर में मिल जाने पर जैसे उसका पता नहीं चलता वैसे ही मृत मनुष्य का व्यक्ति-गुण-विशिष्ट अस्तित्व नहीं रह जाता। अर्थात् वह अनन्त ब्रह्माण्ड

सागर में जल विन्दुवत लीन हो जाता है। उसका पुनर्दर्शन सर्वथा असम्भव है।

सारांश यह है कि इस प्रकार के उपदेशों से मेरा चित्त शान्त न हो सका। मेरे मन में ऐसी दृढ़ उत्कण्ठा उत्पन्न हुई कि जिसके साथ जीवन के इतने दिन व्यतीत किये, जो मेरे सुख दुःख की साथिन थी, जिसको कई वर्षों तक शारीरिक व्याधियों ने पीड़ा पहुँचाई जिसको शस्त्रचिकित्सा के समय और पश्चात् बहुत कष्ट सहना पड़ा, जिसने स्वयं शस्त्रचिकित्सा कराने का आग्रह पूर्वक अनुरोध किया, जिसको परलोकगमन की अतीव लालसा लग रही थी, उस व्यक्ति से फिर वार्त्तालाप करना क्या असम्भव है? आरम्भ में इतना ही जानने की लालसा थी कि वह वहाँ सुख अथवा दुःख में है। क्योंकि उसका जीवन कष्टमय परिस्थिति में व्यतीत हुआ था, उसके गुणों के विकास होने का अवसर न मिलने से वे लुप्त हो गये थे। अतः समझ लिया गया था कि उसके में ऐसे कोइ गुण थे ही नहीं, किन्तु यह बड़ी भारी भूल थी। उस गुण-विकास की स्वल्प इच्छा की पूर्त्ति का भी कोई साधन सुलभ न था। बल्कि जिन लोगों ने इसे सुना वे हँसे और इस इच्छा को मूर्खतापूर्ण बतलाया।

और्ध्वदैहिक कृत्यों से निवृत्त हो कर मैंने अनुसंधान करना आरम्भ किया। मेरा अनुमान था कि मुझे अपने उद्देश्य की सिद्धि में थियासोफिस्टों से सहायता प्राप्त होगी। अतः मैंने

श्रीमती एनो बेंसट को पत्र लिखा। पत्र के उत्तर में श्रीमती जी ने मेरे प्रति पूर्ण समवेदना प्रकट करते हुए लिखा था कि "तुम्हारी पत्नी परलोक में होगी और पारस्परिक प्रेमाकर्षण के कारण तुमको निद्रावस्था में वह मिलती होगी। यदि तुम कुछ प्रयत्न करोगे तो तुमको उसका दर्शन भी हो जायगा।" इस उपदेश से मेरी जिज्ञासा बढ़ी और इस अनिश्चित उपदेश से सन्तुष्ट न हो कर मैंने पुनः उनसे पत्रव्यवहार किया। किन्तु इससे मेरा उत्साह न बढ़ा। तत्पश्चात् आस्ट्रेलिया वासी मि० लैडबिटर से पत्र व्यवहार किया। उनसे मालूम हुआ कि मेरी पत्नी सुख में है और मेरे शोक से वह कष्ट पाती है। मेरा संदेसा उस तक पहुंचाने तथा उसका संदेसा मेरे पास लाने की उन्हें अनुमति नहीं थी। मि० लैडबिटर के इस आशय के पत्र को पा कर मुझे सन्तोष न हुआ। उक्त महानुभाव ने अपने पत्र में वाडिया का नाम लिखा था। उनसे पत्रव्यवहार करने पर उनको मैंने अपनी स्त्री का फोटो भेज दिया। किन्तु फोटो भेजे चार वर्ष होने पर भी वहाँ से कुछ भी सन्तोषप्रद उत्तर न मिला। इस बीच में मैं अपने उद्योग में शिथिल न रहा और मुझे पता चला कि इंगलैंड के अन्तर्राष्ट्रीय होम सरकिल फेडरेशन के अधिपति मि० बुश से इस कार्य में मुझे पर्याप्त सहायता प्राप्त हो सकती है। यह मालूम होते ही मैंने तुरन्त उनको पत्र दिया और उत्तर में उन्होंने जो साधन बतलाये उनसे कुछ सिद्धि भी हुई।

मि० ब्रुश ने एक मीडियम का नाम बतलाया। उन्होंने साइ-कोमैट्री करके मेरी पत्नी के बारे में बहुत सी बातें बतलाईं। मि० ब्रुश ने लिखा था कि यदि मैं अपने हाथ से पत्र लिख कर उसके साथ पत्नी की कोई वस्तु मिडियम के पास भेज दूँ तो पत्नी के विषय में कुछ पता लगेगा। पाठक यहां विस्मित हो पूंछेगे कि साकोईमैट्री का अर्थ क्या है? इससे क्या हो सकता है? इसके उत्तर में इतना बतला देना पर्याप्त है कि मनुष्य के समीप रहने वाली प्रत्येक वस्तु पर उस मनुष्य के आचार विचार का संस्कार बन जाता है। वह संस्कार सूक्ष्म शक्तियुक्त मनुष्य को मालूम हो सकता है। यदि ऐसी कोई वस्तु मीडियम के हाथ में दी जाय तो उस मनुष्य के सम्बन्ध में वह कितनी ही आश्चर्यजनक बातें कह सकेगा। अस्तु, मैंने बुश के लेखानुसार उस मीडियम के पास अपनी पत्नी के पैर की अंगुली का एक छल्ला भेजा। इससे कई अद्भुत बातें मालूम हुईं। यद्यपि वे सब बातें ठीक न थीं तथापि जो बातें मीडियम ने बतलाईं वे ऐसी भी न थीं जिन्हें वह मिडि-यम किसी प्रकार भी अन्य रीति से जान सकती। यहाँ यह भी बतला देना आवश्यक है कि यह मीडियम कोई भारतवासी न थी। किन्तु लंदन में रहने वाली एक स्त्री है जिसका नाम है मेडम राबर्टसन। श्रीमती राबर्टसन ने उस छल्ले के बनाने वाले सुनार तक की हुलिया लिख भेजी। मेरी पत्नी के स्वभाव, बीमारी एवं दिनचर्या के बारे में अनेक सत्य बातें लिख भेजीं।

मीडियम ने उस आभूषण को हाथ में ले कर जो बातें जानीं वे आगे लिखी जाती हैं। यह भी जान लेना आवश्यक है कि मीडियम जो वस्तु हाथ में लेता है उस वस्तु के मालिक के संस्कार मीडियम में दिखलाई पड़ने लगते हैं।

मीडियम ने लिखा कि " चाँदी का छल्ला हाथ में लेने से मुझको गरमी मालूम हो रही है, मेरी पीठ में जलन हो रही है। कंधे में दर्द हो रहा है और भीतर भी दर्द है। खास कर पेट की बांई तरफ वेदना हो रहा है. कमजोरी होने से मुझे चक्कर आ रहे हैं, साँस लेने में भी कष्ट मालूम होता है।" यह अनुभव पत्नी की बीमारी से आए होंगे; विशेषत: पेट की बांई तरफ का दु:ख महत्वपूर्ण है। उसी तरफ उसको बीमारी थी। आगे उसने लिखा :—

" मुझे प्रतीत होता है कि वह अपने हर एक कार्य नियम से करती होगी। सब चीज़ें साफ सुथरी रखने की उसकी आदत रही होगी। कोई कार्य गड़बड़ करना उसको पसंद नहीं होता होगा।" यह वर्णन उसके स्वभाव का द्योतक है। उसके आचरण के बारे में उसने लिखा कि " काला कपड़ा पहने हुई और माला फेरती हुई वह दीखती है।" प्रतिदिन भगवान् के नाम की माला फेरने का उसका नियम था। उसकी मनास्थिति आगामी वर्णन से प्रकट होगी।

" वह थकी हुई हाथ फैला रही है। बहुत यातना से ग्रस्त

दीखती है। तो भी धीरज से सहन करती हुई करुणारस की मूर्ति प्रतीत होती है।" बहुत वर्ष की बीमारी से ऐसा होना सम्भव है। एक समय का वर्णन मीडियम ने इस प्रकार लिखा :—

"आज सबेरे से मुझ को ख्याल आया कि एक संदेश लिखूं। मुझको प्रतीत होता है कि कोई स्त्री यह संदेश दे रही है; किन्तु मुझे कोई दीखता नहीं, मुझे प्रतीत होता है कि, वह एक मनुष्य से कहना चाहती है कि, समय का कुछ ख्याल नहीं, विलंब हुआ तो भी शान्ति रखनी चाहिए। अधीर नहीं होना, मैं अधिक साहाय्य करूँगी।" इसी प्रकार के कई संदेश स्वयं लेखन द्वारा मुझे पत्नी ने दिये थे। मीडियम को वे मालूम न थे। मेरी पत्नी ने ही उसको ये सूचित किये होंगे।

उसके स्वरूप वर्णन के बारे में मीडियम ने लिखा—"मुझे एक सांवले रंग की सुन्दर स्त्री का अस्तित्व प्रतीत होता है। उसके नेत्र चमकदार और भौं बड़ी खूबसूरत काले रंग की हैं। उसके कपोल गोल हैं, उसका शरीर नरम और ताम्रवर्ण का है, वह काले रंग की नहीं दीखती। उसके ओंठ ज़रा मोटे और बहुत अच्छे आकार के हैं, उसका मुँह बड़ा नहीं है; स्वरूप ठीक अवयव युक्त हैं। मैंने जो ऊपर कहा कि उसके ओंठ मोटे हैं, इसका अर्थ यह है कि, इंगलैंड के लोगों के मुकाबले में वह मोटे हो सकते हैं। किन्तु काले लोगों के मान से वह ओंठ मोटे नहीं हैं, वह कुछ लंबी सी हैं। सरदारी चेहरा है और युवावस्था में है।

उसने अच्छे कपड़े पहने हैं। वह मुझे अपने हाथ बतला रही है ऐसा मुझे प्रतीत होता है। मैं उनका वर्णन कैसे कर सकूंगी ? वह बहुत सुन्दर है। मृतात्मा के हाथ के सरीखे वे मुझे प्रतीत होते हैं, वे ज़रा पतले हैं। उनका आकार बहुत अच्छा है। जीवितावस्था में उनका ताम्र वर्ण होगा। वह मुझे चित्ताकर्षक मालूम होते हैं। वह कहती है कि, प्रेम अटूट रहता है। उससे हृदयों का बंधन होता है।" यह वर्णन बहुत यथार्थ है। छायाचित्र देखने से उसकी सत्यता प्रतीत होगी। शरीर का वर्ण मीडियम के लिखे अनुसार था, रूप-रेखा भी वैसी ही थी। यह वर्णन अनुमान से आना असम्भव है।

स्वयंलेखन का प्रयोग करते समय इंगलैंड से मि० बुश का मुझे एक तार मिला जिसमें लिखा था कि कुछ दिनों स्वयंलेखनादि का प्रयोग बंद कर दो। तदनुसार कुछ दिनों तक मैंने इन प्रयोगों को बंद रखा। इसके कुछ ही महीनों बाद मेरी पत्नी ने स्वयं मि० बुश को सूचना दी कि वे उसके पति से ( अर्थात् मुझ से ) कहें कि वे फ़िर प्रयोग करना आरम्भ करें। इसका कारण यह था कि मेरी पत्नी मुझ से बातचीत करने के लिए अत्यन्त उत्सुक थी। अतः मैंने प्रयोग करना आरम्भ किया और समयानुसार तब से बराबर करता चला आता हूं। मुझे मेरी पत्नी से अनेक संदेश प्राप्त होते हैं। इसका कारण यही है कि मेरा उस पर अगाध प्रेम है।

इस सम्बन्ध में मि० बुश ने ता० ३० मार्च १९२२ के पत्र में लिखा कि "मुझे मार्च २८ को शाम को साढ़े छः बजे एक आश्चर्यजनक अनुभव आया। मेरी सब पीठ में गरम प्रवाह सा प्रतीत हुआ, यह आप की स्त्री के आने का एक लक्षण है। मैंने मन से प्रश्न पूँछा "क्या मिसेस ऋषि यहाँ है?" उसी वक्त मेरे हाथ से घुटने पर अनुमति प्रदर्शक तीन खटके हुए। मैंने उसका अभिनन्दन करके कुछ थोड़ा सा वार्तालाप मन से किया, उसने मेरे हाथ के इशारे से 'हाँ' या 'नहीं' उत्तर दिये। मैंने पूँछा "क्या मेरी मनाई दूर होने पर आपने अपने पति से वार्तालाप किया ?" उसने उत्तर दिया—'हाँ' उसी समय आप का ता० ९ का पत्र डाकिये ने घर में लाकर दिया, किन्तु मुझे वह मालूम न था। मुझ को उस रोज़ रात को साढ़े दस बजे तक वह पत्र नहीं मिला। इससे यह निःसन्देह सिद्ध होता है कि वह आप के पत्र सहित आई होगी।

इंगलैंड में क्लेअरव्हायंट को उसका दर्शन हुआ था। इस सम्बन्ध में मि० बुश ने ता० २८-११-२१ के पत्र में लिखा कि "आपकी पत्नी हमारे प्रयोग में दो बार और क्लेअरव्हायंट को एक बार दीख पड़ी, और उसने एक मीडियम के शरीर में प्रवेश भी किया था। वह घबराहट में है। इस लोक के धर्म सम्बन्धी विचार छोड़ना उसे कठिन हो रहा है। मुझे प्रतीत होता है कि अप्रगतिशील हिंदू मृतात्माओं का उस पर बहुत दबाव है, उसको

किसी धर्म विशेष या उसके बाह्य आचरणों के दास्य में नहीं रहना चाहिए। उसे उन सब से ऊंचा जाना चाहिए। दूसरे उपदेशकों को ढूंढ़ कर उनका उपदेश उसे सुनना चाहिए, वह एक अच्छी आत्मा है। किन्तु पुराने विचार रूपी भूसी से अभी तक निर्मुक्त नहीं हुई। उसके लिए प्रार्थना करो, कि ईश्वर उसे सुबुद्धि दे। आप अपने चित्त से उस उपदेश को ग्रहण कीजिये और किसी बात की हानि का ख्याल न करके उस प्रकाश के अनुसार चलिये। इससे आप उसको साहाय्य कर सकेंगे और वह भी आपको साहाय्य कर सकेगी। इससे आप दोनों की उन्नति होगी।

आपकी पत्नी के फोटो से वह एक सुन्दर स्त्री, सुन्दर आत्मा दीख पड़ती है। उसका चेहरा भगवान् बुद्ध देव जैसा है। आप को यह पढ़ कर आश्चर्य होगा कि उसके संवाद में जो कभी कभी विक्षेप पड़ता है वह उसके लाभ के लिए ही पड़ता होगा। आपकी पत्नी विशेष आत्मिक उन्नति के लिए तैयार है। उसमें कई सद्गुण हैं। किन्तु उसकी आत्मिक उन्नति नहीं हुई। आप अधिक शान्ति से ध्यान कीजिए, और नये सिद्धान्त खुले दिल से ग्रहण करने को तैयार रहिए, भले ही वे कट्टर हिंदू कल्पनाओं से विसङ्गत हों, तो भी इसका ख्याल न कीजिए। कदाचित् आप समझते होंगे कि आपकी पत्नी के संदेशों में शाश्वत सत्य भरा है और उसमें उच्चतम प्रकाश है। आपकी पत्नी के जो धार्मिक विचार

पहिले थे वे ही अब भी बने हुए है। उसकी दिनचर्या में भी अन्तर नहीं पड़ा। पहिले जो धर्मविधि वह करती थी वह ही अब भी करती है। इहलोक में होते हुए जिन देवताओंकी उपासना वह करती थी उन्हीं देवताओं की उपासना वह करतीथी उन्हीं देव-ताओं की पूजा वह अब भी करती है। वह परलोक में गयी है, किंतु उसकी आत्मिक उन्नति नहीं हुई। एकाएक परिवर्तन होने की आशा मत करो। शान्ति से और स्वच्छ हृदय से बर्ताव करो।

— —

# दूसरा अध्याय

## आधारभूत संदेश।

स ग्रन्थ में प्रतिपादित किये हुए सिद्धान्तों का क्या प्रमाण है—यह प्रश्न पाठक अवश्य पूँछ सकते हैं। विशेषतः जिस व्यक्ति का नाम-निर्देश ग्रन्थ के शिरोभाग में किया गया है, वह मरणोत्तर अबाधित जीवित है, इस बात को प्रमाणित करने के लिये कौन कौन से आधार विश्वसनीय माने जाने चाहिये ? इसका विवेचन तथा वर्णन करना आवश्यक है। एक व्यक्ति के विषय में यदि यह तत्त्व, सिद्ध हो जाय तो सामान्यतः अन्यान्य व्यक्तियों के बारे में भी यह नियम निश्चित करने में हानि न होगी। प्रायः लोगों की यह धारणा रहती है कि इस मत के समर्थनार्थ जैसा चाहिये वैसा कोई प्रमाण नहीं है। कई लेख लिखे जाते हैं, किन्तु उनमें स्वानुभव अथवा दीर्घाभ्यास का आधार नहीं रहता। जिसको यह प्रमाण समझने की इच्छा होगी उसको दीर्घकाल तक

अभ्यास करना होगा। यदि इतना समय न हो तो संशोधकों के अनुभव तथा बचनों पर विश्वास रखना उचित है। यह शास्त्र ऐसा नहीं है कि क्षण मात्र में किसी को इसकी सत्यता प्रतीत हो जाय। कदाचित् कालान्तर में ऐसे कुछ साधन उपलब्ध हो जायंगे; किन्तु प्रस्तुत साधनों से यह कार्य इच्छामात्र से नहीं होगा। प्रस्तुत लेखक को जब से इस विषय का ज्ञान हो गया है तब से आज तक अन्यान्य प्रमाण प्राप्त करने के हेतु उसने अत्यन्त परिश्रम किया है और दिवंगत पत्नी से सैकड़ों बार वार्तालाप करने का अनुभव प्राप्त किया है। उसी भाँति अन्य परिचित तथा अपरिचित मृतात्माओं से बातचीत की गई है। दूसरे मीडियमों द्वारा आये हुए अनुभव और संदेश पढ़े हैं। जिनको क्लेअरव्हॉयंस (दिव्यदृष्टि) होती है, उनके प्रयोग देखे हैं। इन सब कारणों से मेरी समझ में यह मत केवल मेरे अनुभव ही से निश्चित नहीं हुआ है, किन्तु सैकड़ों संशोधकों का भी यही मत है। किन्तु अनुभवशृङ्खला एक एक कड़ी से बढ़ती है। इसी कारण निज अनुभव यहाँ ग्रथित किये गये हैं। अनुभूत बातें मेरी व्यक्तिगत हैं, इसलिये उनको प्रकट करना उचित नहीं समझा जाता। किन्तु इससे अखिल मानव जाति को लाभ होने की सम्भावना होने से, उनमें से कुछ यहाँ उद्धृत किये जाते हैं। कुछ लोगों को इस अध्याय का ही महत्व अधिक मालूम होगा। कारण, प्रत्येक मनुष्य को किसी व्यक्ति विशेष के परलोकगत अस्तित्व के बारे में

क्या प्रमाण है—जानने की स्वाभाविक जिज्ञासा रहती है। वे जानना चाहते हैं कि कौन से अनुभव से तथा संदेशों से यह मत स्थापित किया गया है। विचार-संक्रमण, अप्रतीत-प्रेरणा, अतिन्द्रिय-संवेदना, अज्ञात मन या अन्य किसी कारण से इसका स्पष्टीकरण हो सकेगा या नहीं। कई लोग इसमें ज्ञात तथा अज्ञात छल का भी अन्तर्भाव मानते हैं। इन सब के लिये यह अध्याय मनोरञ्जक तथा महत्वपूर्ण होगा। परलोकविद्या सम्बन्धी अनुभव स्वयं लेखन, टेबलटिल्टींग, क्लेअरव्हायंस आदि साधनों से आये हैं। मेरी परलोकगत पत्नी से अनेक समय निज हाथ से तथा अपरिचित मध्यस्थ द्वारा संदेश आये हैं और आते हैं। कलेव्हरव्हांयंट मनुष्यों ने उसको देखा है। आंग्ल साइकोमैट्रायजिङ्ग मीडियम को उसके अस्तित्व का ज्ञान हुआ है। अपरिचित मनुष्यों को उसने संवेदना द्वारा संदेश दिये हैं। परलोकवासी मनुष्यों ने उसका स्वभाव तथा रूप वर्णन यथार्थ किया है। उसने अपनी पहिचान की कई बातें आश्चर्यजनक रीति से स्वयं भी बतलाई हैं। इस लिए मुझको उसका अस्तित्व मानने में सन्देह नहीं है। मेरे अनुभव प्रायः स्वयंलेखन द्वारा आये हैं। इसके अतिरिक्त जब मैं सर्व राष्ट्र परलोक विद्या परिषद में सन् १९२५ और १९२८ में गया तो पेरिस के तीन मीडियमों को और लंदन के एक मीडियम को उसका (सुभद्रा देवी) का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ जिसका विस्तृत वर्णन आगे के परिच्छेदों में है। वहाँ मैं स्वयं भी अपनी पत्नी

की आवाज़ ट्रम्पेट द्वारा सुन सका हूँ और एक बैठक में तो उनका फ़ोटो भी आगया है जो इसी पुस्तक में दे दिया गया है। स्वयं लेखन द्वारा मेरी पत्नी श्रीमती सुभद्रा देवी से कितने ही संदेश आये हैं जिनसे उनके जीवन काल की अनेक घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है और साथ ही उनका अनवरत प्रेम और स्मृति प्रगट होती हैं; उदाहरण के लिये कुछ बातें नीचे लिखते हैं :—

" आप को उन पत्रों की याद है जो मैं आप को बंगले से लिखा करती थी। "

" मैंने आपरेशन करवाने के लिये बहुत ज़ोर दिया था। "

" जिस प्रकार मैं बंगले में अकेली रहती थी उसी भांति अब मुझे एकान्त जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता है। "

" मैं कहा करती थी कि आप मेरे पत्र संसार को दिखा दें।"

" जब हम लोग बम्बई में थे तो मैं कई प्रकार की मिठाइयां बनाया करती थी और हम दोनों बड़ी दूर तक घूमने जाया करते थे। "

"आप सदा मेरी इच्छाओं का परवाह नहीं किया करते थे।"

" आप अपने साथ रात में मित्रों को क्यों लाते थे। "

" जीवित अवस्था में मैंने तुम्हें धन दिया था। "

" मेरा विवाह मेरे पिता जी के ही घर में हुआ था। "

" हम लोग इलाहाबाद में ३-४ सप्ताह तक रहे थे। "

" मैं अपने जीवन से तंग आगयी थी । "

" मेरा जीवन अन्य स्त्रियों की भांति नहीं था ; मैं हतभागनी थी जिसे मैं बताना नहीं चाहती । "

" मीरज में जिस कमरे में हम लोग ठहरे थे उस में किवाड़ नहीं थे । "

" एक बार अस्पताल में मैं मूर्छित हो गयी थी । "

" मेरा आपरेशन शनिवार को हुआ था । "

" जब मैं आपरेशन कराने आपरेशन-रूम में जा रही थी तो मैंने आप से पूछा था—क्या मैं अच्छी हो जाउंगी ? "

" मेरा इलाज दो अस्पतालों में होता रहा । "

" मेरे ट्रंक में ३ चोलियां, एक लकड़ी का छोटा संदूक, एक रबर की ट्यूब, दो संगीत की पुस्तकें थीं । इसके अतिरिक्त एक गोल बक्स भी है जिसमें मेरी एक सखी का फोटो भी है । "

" आप से एकान्त में शायद ही कभी भेंट होती थी—प्रायः आप के मित्र आप को घेरे रहते थे । "

" मैं आभूषण बहुत कम पहनती थी इसलिये मुझे अकेले रहने में डर नहीं लगता था । "

" मैं दिन में कुछ भी भोजन नहीं करती थी केवल कुछ फलाहार कर लेता थी । मेरी खाट के नीचे दूध का बर्तन रखा रहता था । मैं अपने बालों में शाम को कंघी करती थी । "

" मैं लगभग ६ वर्ष तक बीमार रही और अन्त में मैंने यह यह इच्छा की कि मेरा आपरेशन हो जाना चाहिये । "

" प्रसव के समय मैं अपने जीवन से तंग आगयी थी । "

" मैं इलाहाबाद में गंगा नहाने के लिये गयी थी । "

" मीरज में ( जहाँ श्रीमती का देहान्त हो गया ) निश्चय नहीं कर सकी कि अब मरना है या जीना । "

" मैं आलमारी में अपनी चीजें रखा करती थी ; उस में अब भी कितनी ही चीज़े होंगी । "

" आपरेशन का मैंने इसलिये आग्रह किया था कि बहुत से रोगी जिन्हें मेरी भांति पेट का रोग था, आपरेशन कराकर अच्छे हो गये । "

" हम लोग इलाहाबाद में सुखी थे । "

" कभी कभी मैं आप को क्रोध के आवेश में भी पत्र लिख दिया करती थी । "

" मीरज में हम लोग सन्ध्या समय तालाब के किनारे बैठा करते थे । "

" मुझे किसी का भय नहीं लगता था । मुझे आधुनिक सभ्यता पसन्द नहीं थी इसलिये दूसरे लोगों से बातें करना मुझे पसन्द न था । "

"विवाह के समय कितने ही लोगों ने मुझे पसन्द नहीं किया।"

"मैं एक समय में दो साड़ियां पहन सकती थी।"

"मेरे पेट में व्याधि थी—मेरा एक्स-रे (X—Ray) से बम्बई और मीरज में फोटो लिया गया था।"

"मेरा स्वभाव तेज़ था—मैं थोड़ा सा भी अपमान सहन नहीं कर सकती थी।"

"मैंने जो कविता की थी, वह आप को क्या याद है?"

"एक दिन मैं गुटकेश्वर मंदिर में कुए के पास सो गयी थी।"

"क्या आप को उन लड्डुओं की याद है जो मैंने मीरज में बनाये थे। उनमें एक लड्डू तो वर्षों तक ट्रंक में रहा—वह कितने वर्ष तक रहा था?"

"प्रायः मैं अपना समय पूजा-पाठ में व्यतीत किया करती थी; कुछ लोग इसका विरोध करते थे।"

"मेरे विवाह के पश्चात् मेरी सास थोड़े ही वर्ष जीवित रही।"

"मेरी पुरानी चीज़ों में से अब एक भी नहीं रही—दूसरे लोगों ने सब फ़ेंक दी।"

"दृढ़-प्रतिज्ञ थी और आज भी वैसा ही बनी हुई हूं"

"मुझे प्रतिदिन वमन हुआ करता था।"

## सान्त्वना देनेवाले संदेश

"आप को दुखी देख कर मुझे भी दुःख होता है। व्यर्थ दुःख करना हम दोनों के लिये हानिकारक होगा।"

"आपरेशन ने मुझे कष्टोंसे मुक्त कर दिया। अब मैं सुख पूर्वक हूं—आप भी मेरे दुःख से मुक्त हो गये। फिर आप क्यों दुखी रहते हैं ? कृपा कर मुझे इसका कारण बताइये।"

"मेरी एकमात्र इच्छा यही है कि आप मेरी प्रत्येक वस्तु का उपयोग करें—मुझे इसमें कुछ भी आपत्ति नहीं है आप जो कुछ मेरे लिये करेंगे उससे मुझे प्रसन्नता होगी और मेरी इच्छा पूर्ण हो सकेगी।"

"मैं आप के हृदय की सचाई को समझती हूं। यह सत्य है कि आप को केवल मेरा ही विचार बना रहता है और आप का मन किसी दूसरे व्यक्ति से बात करने में नहीं लगता। मेरी इच्छा है कि आप का यश फैले। आप दुःख क्यों करते हैं ? यदि आप मुझे देखेंगे या मेरी आवाज़ सुनेंगे तो आप को और अधिक दुःख होगा।"

"आप को रोता देख कर मुझे अत्यन्त दुःख होता है—आप प्रत्येक समय रोने क्यों लगते हैं ? क्या मुझे दुखी करना आपको अभीष्ट है ? जब आप चार दिन तक दुःख करते रहते रहे तो मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। आप उदास क्यों हैं ? आप को दुःखी

देख कर मैं रात्रि को आप से नहीं मिली ; मैं आप से कितने ही बार कह चुकी हूं कि आप दुखी न रहा करें।"

"प्रत्येक वस्तु से आप को जो बैराग्य हो गया है उसका कारण मैं ही हूं। आप ऐसा क्यों करते हैं ? मैं आप से यह कितनी बार कहूं कि आप निराश और दुःखी न हुआ करें ; यदि आप दुःखी रहेंगे तो मुझे सुख नहीं होगा। आप की सहन-शीलता के लिये मैं आप की प्रशंसा करती हूं।"

"मृत्यु के समय मुझे कुछ भी दुःख नहीं हुआ था। मेरी मृत्यु तो निश्चय ही थी। वह आपरेशन के कारण नहीं हुई— मृत्यु होना अनिवार्य्य था। मैं आप की सब तरह से सहायता करती हूं। आप के आह्वान करने से मुझे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। मेरी अपनी इच्छा भी आप के साथ बात-चीत करने की हुआ करती है। आप से पिछली घटनाओं की बातें करके मुझे दुःख देता है।"

"अस्पताल में मैं दवा आदि पीने की जो उपेक्षा करती थी उसके लिये मुझे पश्चाताप है। आप चाहे जो कहें परन्तु मैं अपने विचार प्रकट किये बिना नहीं रह सकती। मैं आप के सच्चे प्रेम को उस समय और भी अधिक समझ गयी जब आपने डाक्टर को डबल फ़ीस देने का वचन दिया। आप को परलोक-विद्या का ज्ञान मुझ से ही प्राप्त होना था। आप ने कहा था कि अब मैं दुःख नहीं करूँगा, परन्तु अभी तक आप आपने बचन का पालन

नहीं कर सके ? मेरी जीवित अवस्था में अपने मेरे गुणों की परवाह नहीं की।"

"मीरज में मैं ८ बजे दिन के अचेत हो गई और ४ बजे शाम को मेरा प्राणान्त हो गया। मेरे अन्तिम समय में जब डाक्टर आया तो उस समय मुझे कष्ट हो रहा था। मेरा अन्त्येष्टि संस्कार आप बहुत अच्छी तरह नहीं कर सके इस का मुझे कुछ भी दुःख नहीं है। मुझे लेने के लिये दो स्वर्गीयदूत अस्पताल आये थे वे मुझे 'सत्य लोक' में ले गये।"

"निस्संदेह, परलोक विद्या मुझे बड़ी प्रिय है और मेरे ही द्वारा इसमें आप की भी प्रवृत्ति हुई है। आप को सब प्रकार से सहायता करना मेरा कर्त्तव्य है। आप यह नहीं समझ सकते कि मेरी अवस्था की स्त्री जिसे अपनी जीवन-लीला बीच में ही समाप्त कर देनी पड़ी है, उसे मरने के बाद भी इस संसार से अनुराग बना रहता है। परन्तु इस का अर्थ यह नहीं है कि हम फिर संसार में आना चाहते हैं। संसार में आने की हमारी लेशमात्र भी इच्छा नहीं है। वह बात मैंने केवल आप को अपनी वर्त्तमान अवस्था बताने के लिये ही कही थी। जब मैं आप को शान्त और चिन्ता-रहित प्रसन्नता पूर्वक बातें करते देखती हूं तो मुझे हर्ष होता है। इसके विपरीत जब आप को दुःखी अथवा अशान्त चिन्ताग्रस्त देखती हूं तो मुझे बेचैनी होती है। हम परलोक-वासी आत्माओं का ध्यान आप की ओर विशेष रूप से आकृष्ट है इस

लिये हम परलोक की बातों की ओर विशेष ध्यान नहीं दे सकते। इसका परिणाम यह होता है कि हम अपने परलोक के कार्य्य ठीक तरह से नहीं कर सकते। आप को दुःखी देख मेरे हृदय को अत्यन्त दुःख होता है, इसलिये आप से प्रार्थना है आप शान्त और सुखी रहिये जिससे मुझे भी सुख रहे और परलोक के गुरु की नाराज़ी मुझ पर न हो सके। मैं आप को तीन दिन से लगातार दुखी देख रही हूं। इससे मेरे हृदय को अत्यन्त दुःख होता है। अब मेरी प्रार्थना यही है कि आप दुःख न कीजिये? अब मैं जाऊँ?"

"मैं जब आप को चिन्ता से मुक्त देखती हूं तो मुझे बड़ा हर्ष होता है। जब आप प्रसन्न दिखते हैं तो मुझे कुछ दुःखी नहीं होता। आप को मेरा स्वभाव विदित है। कभी कभी मुझे भी कुछ घटनाओं की याद आजाती है जिससे मुझे दुःख होता है। उस समय मैं भगवान श्री कृष्ण की प्रार्थना करने लगती हूं इससे मुझे तुरन्त सन्तोष हो जाता है।"

"मैं आप को यह कितनी बार कहूं कि आप को दुःखी देख मुझे दुःख होता है। कितनी बार मेरा ध्यान आप की ओर आकृष्ट हो जाता है जिससे परलोक के कामों में गलती हो जाती है। कभी कभी तो मेरा चित्त जप में भी नहीं लगता। मैं केवल आपके दुःख से अत्यन्त दुखी रहा करती हूं। आप इसे मत भूलिये। मुझे मालूम था कि आप को यह कष्ट होगा आप को इस कार्य्य में

सफलता प्राप्त होगी। किसी बात से डरिये नहीं। जब मैं आप को दुखी देखती हूं तो मुझे बड़ी बेचैनी होती है। आप चिन्ता करना छोड़ दीजिये—चिन्ता करने से कुछ भी लाभ नहीं। मैं जानती हूं कि आप अपने दुःखों को नहीं मिटा सकते पर आप मेरा कहना मानिये और चिन्ता छोड़िये।"

"कल रात को मैं ईश्वर का भजन कर रही थी कि एकाएक मेरी माला रुक गयी। आँख खोल कर देखा तो मुझे अपने में कुछ परिवर्त्तन मालूम पड़ने लगा। पहले मैंने इस परिवर्त्तन का कारण ढूंढना चाहा, परन्तु कुछ भी मालूम नहीं हुआ। तब मैंने अनुमान किया कि कहीं आप को तो कोई कष्ट नहीं है। मैं सीधी आप के यहाँ आयी और सब चीज़ों को देखने लगी। मैं रात भर इसी जगह रही—इसी सबब आपको रात भर नींद नहीं आ सकी। मैं अपना सब काम छोड़ कर यहाँ रात भर रही थी।"

"क्या बताऊँ कि मैं इतनी अधिक उत्तेजित क्यों हो रही हूं। जिसका आपके प्रति अनन्य प्रेम है उसके उत्तेजित होने का आप के सिवा दूसरा कोई कारण नहीं हो सकता। कितने ही बार मैंने इस विषय पर लगातार रूप से कई रातों तक विचार किया है, परन्तु मुझे इस समस्या को हल करने का कोई साधन नहीं मिलता। हम लोग भाग्यहीन हैं हमें सहायता कैसे मिल सकती है। हाँ, मैं आपको सहायता करने को तैयार हूं, परन्तु मैं सब बातें नहीं कर सकती। मुझे प्रत्येक बातों के लिये यहाँ के अधिकारियों से आज्ञा

प्राप्त करनी पड़ती है। मुझे मालूम नहीं कि किस बात के लिये मुझे आज्ञा लेना चाहिये। कितने ही बार मैं कुछ करना चाहती हूं। परन्तु परलोक अधिकारियों की आज्ञा प्राप्त नहीं होती। और जब समय आ जायगा तो मुझे आज्ञा प्राप्त हो जायगी। मुझे जो कठिनाइयां पड़ती हैं, उन्हें आप नहीं समझ सकते। ऐसे कितने ही काम हैं जिन्हें मैं तुरन्त कर लेना चाहती हूं, परन्तु अभी वे सब करने में असमर्थ हूं। कुछ काम करने में मुझे कष्ट होता है। हम कष्ट की तो परवाह नहीं करते परन्तु परलोक के अधिकारी हमें कष्टप्रद काम करने की मनाही करते हैं। हम उनकी इच्छानुसार ही करना उचित समझते हैं। जिस काम को मृत्यु लोक में थोड़े समय में किया जा सकता है उसके करने में हमें कष्ट नहीं होता। इसके अतिरिक्त जब हम कोई काम करना चाहते हैं तो उसके लिये उपयुक्त समय नहीं मिलता। हमें उचित समय के लिये ठहरना पड़ता है। सच पूछा जाय तो आपकी इच्छा पूरी करने के लिये हमारे पास थोड़ी ही शक्ति है—बल्कि यूं कहना चाहिये कि हम पराधीन हैं।

हम परलोक में प्रत्येक काम कर सकते हैं, परन्तु आप की पृथ्वी पर ऐसा नहीं हो सकता। आप कहेंगे कि ऐसी कितनी ही बातें हुआ करती हैं और कितनी ही ऐसी बातें हो गयीं। ऐसी बहुत आत्माएं हैं जो मनुष्य को दुःख देती हैं परन्तु वे सिवाय दुःख देने के और कुछ नहीं कर सकतीं। वे पृथ्वी के बहुत समीप

रहती हैं। वे हमारी तरह ऊँचे लोकों में नहीं जा सकतीं, और लोगों को सताने के कारण उन्हें परलोक में दण्ड मिलता है। आप से मिलने के लिये आने में कुछ भी हानि नहीं; हम अपने अधिकारियों की आज्ञा लेकर आती हैं। कुछ आत्माएं बिना अधिकारियों की आज्ञा के चली आती हैं, परन्तु मैं ऐसा नहीं करती।"

---

# तीसरा अध्याय

## कुछ अन्य अनुभव और स्वप्न में संवाद

स्वप्नावस्था में हम सब उसी अवस्था में रहते हैं जिसमें परलोकगत आत्माएं रहती हैं। कभी कभी हम से उनकी स्वप्नावस्था में भेंट हो जाती है, परन्तु जागने पर हमें उनकी कही हुई बातें बहुत कम याद रहती हैं। यदि कुछ लोगों को बातें याद भी रहीं तो वे समझते हैं कि वे केवल हमारी मनकी कल्पना हैं, अथवा अधिक भोजन कर लेने के कारण ऐसा स्वप्न आया था। इसमें संदेह नहीं कि इन कारणों से भी स्वप्न आ जाते हैं, परन्तु कभी कभी स्वप्नावस्था में हमारी परलोकगत आत्माओं से भी भेंट हो जाती है। इन स्वप्नों में किस में हमसे आत्माओं की भेंट होती है और किस में हमारी अपनी कल्पनाएं रूप धारण कर लेती है, इसका निर्णय करने में बड़ी कठिनाई होती है और जब तक किसी दूसरे साधन से इस भेंट का निर्णय आत्माओं से पूछ कर न कर

लिया तब तक स्वप्न का निर्णय कठिन है। इस का निर्णय बैठक ( Seance ) से हो सकता है और मैंने कई बार बैठक कर के ऐसे निर्णय किये हैं।

मुझे अपनी परलोकगत स्त्री से स्वप्नावस्था में कई बार परलोक में भेंट हुई, परन्तु जागने पर मुझे उनकी बातें याद नहीं रहती। मैंने उनसे कई बार पूछा कि क्या आप मुझे स्वप्नावस्था में मिली थीं ? उसके उन्होंने जो उत्तर दिये उन्हें हम नीचे प्रकाशित करते हैं:—

कल मैं आप के साथ रात को १ बजे से ३॥ बजे तक थी। आप मेरे साथ एक घंटे तक बातें करते रहे। आपने मेरे सब प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया, परन्तु आपने कुछ आभूषणों की बात की थी।"

"मैं रात को १२॥ बजे आयी थी। आप दो घंटे तक तो सोते ही रहे थे—फिर जाग कुछ वैयक्तिक बातें करने लगे। मुझे वे बातें अच्छी नहीं लगी। नाराज हो कर जब मैं जाने लगी तो आपने मुझे खींच कर दूसरे प्रसंग की बातें करना आरम्भ की।"

"मैं रात को तीसरे महले पर सो रही थी कि आप वहां आये और मुझे वहां बुलाया। मैं जागकर आप के साथ चली आयी। आप अपने स्वभाव को जानते हैं—मुझे उसे बताने की आवश्यकता नहीं। इसके बाद मैं ४॥ बजे चली गयी।"

"परसों मैं आप के पास आयी थी। हम लोगों की ऐसी बातें हुईं कि जिससे दोनों के अश्रु प्रवाह होते रहे।"

"प्रायः मैं रात में मिलने की आज्ञा, परलोक के अधिकारियों से नहीं लेती, क्योंकि इससे बहुत सी गलतियां हो जाती हैं। उदाहरण के लिये यदि मैं आप के पास मिलने के लिये आऊं और मिल कर तुरत वापिस जाऊं तो इसमें कोई हानि नहीं है परन्तु दूसरे दिन मुझे आप से फिर मिलने की इच्छा होती है पर अधिकारियों की आज्ञा के बिना मैं कैसे आ सकती हूं। जब तक मैं आज्ञा लेने जाती हूं तब तक काम का समय आ जाता है। यदि मैं काम छोड़कर आ जाऊं तो मुझे ऐसा कष्ट होता है जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकती। इसलिये मैं काम छोड़ कर आना पसन्द नहीं करती। पहले मैं आज्ञा प्राप्त कर लेती हूं फिर मैं निश्चिन्त भाव से घंटे आधे घंटे के लिये आ जाती हूं। कभी कभी काम छोड़ कर भी आ जाने की इच्छा होती है, परन्तु दूसरे दिन अधिक काम करनेसे मैं थक जाती हूं। मैं अपने अधिकारियों को आज्ञा लेने के लिये बार बार कष्ट नहीं देती। सप्ताह में दो बार मैं गुरु जी से आज्ञा लेती हूं—और उसी के अनुसार मैं आपके पास आती हूं यह मत समझो कि मैं नहीं आती। आपको मालूम है कि मैं शुक्रवार को रात के दो बजे आयी थी। उस समय जो बातें हुईं थीं उनका वर्णन मैं कैसे कर सकती हूं। मैं यह कभी नहीं भूल सकती कि हम आधे घंटे तक बैठे और कई

विषयों पर बातें करते रहे। मेरे साथ मि० ओक (एक दूसरी आत्मा) भी आयी थी, परन्तु वह ५ मिनट से अधिक नहीं ठहरी। मालूम नहीं कि वे एकाएक इतनी जल्दी उठकर क्यों चले गये। उसके पश्चात हम दोनों खुले दिल से बात करते और हंसते रहे। आप वहुत आनंदित दिखते थे, और अपनी इच्छा के अनुसार वर्ताव करते थे। मैं स्पष्ट कहती हूं कि आप के काम में मैं आप की पूरी सहायता कर रही हूं इसमें कभी त्रुटि न होगी। आप चिंता नहीं छोड़ते इस से मुझे दुःख होती हैं।"

## पेरिस व लंदन में क्लेयरवायंस के प्रयोग

अपनी सन् १९२५ की यूरोप यात्रा में जब मैं अन्तर्राष्ट्रीय स्पिरिचुअलिस्ट कांग्रेस में भाग लेने गया था, मुझे पारलौकिक विद्या के उच्चतर सिद्धान्तों को चरितार्थ करके देखने का अवसर मिला। कई मीडियम उस अवसर पर वहाँ उपस्थित थे और मैंने उनकी मिडियमिस्टिक शक्ति से लाभ उठाया। पेरिस में मैं तीन क्लेयरवायंस मिडियम्स से मिला, जिन्होंने मुझे बताया कि मेरे साथ एक स्त्री की आत्मा है। इन तीनों ने उस स्त्री आत्मा का जो वर्णन दिया वह एक दूसरे से अधिकांश मिलता जुलता था। इन में से एक मीडियम मेडम लूसिला ने बताया कि उक्त स्त्री की आत्मा कुछ पत्र भी दिखा रही है। वह ठीक ठीक उन पत्रों के सम्बन्ध में न कह सकी क्योंकि उसने कहा कि वे ऐसी भाषा में हैं जिसे वह नहीं जानती। मेरे पास एक पुस्तक थी, जिसमें मेरी

स्त्री के नाम के कुछ पत्र थे। इन पत्रों को दिखा कर मैंने उक्त मेम साहिबा से पूछा कि क्या इन पत्रों से वे पत्र मिलते जुलते हैं। उन्हें देख कर उक्त विदुषी ने बताया कि हाँ ठीक ऐसे ही वे पत्र भी हैं। सम्भव है कि मेरी स्वपत्नी ने इन पत्रों को क्लेयरवायंस मिडियम के सामने छाया रूप में प्रकट किया हो। मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि मैंने इन में से किसी भी मिडियम को यह न बताया था कि मेरी स्त्री मर चुकी है या मैं उसके साथ बातचीत करना चाहता हूँ।

लंदन में मेरे अनुभव प्रयोग इतने संतोषप्रद न हुए; वहाँ मैं बहुत कम ठहर पाया था कदाचित इसीलिये ऐसा हुआ और कोई सियांस ख़ास तौर से मेरे लिये हुआ भी नहीं। मि० बुश की सलाह मिलने पर मैं लंदन स्पिरिचुअलिस्ट एलायंस के एक प्रयोग में सम्मिलित हुआ। उसमें मि० वाउट पेटर्स क्लेयरवायंस का प्रयोग करके दिखाने वाले थे।

कुछ अन्य आत्माओं का वर्णन करने के बाद उन्होंने बताया कि मेरे समीप भी एक पुरुष-आत्मा सफ़ेद पोशाक पहने खड़ा है। जहाँ तक मेरा ख़याल है उस वक्त कोई भी पुरुष-आत्मा की मेरे समीप रहने की कोई सम्भावना न थी। अतः मैंने यह निश्चय किया कि मि० पेटर्स ने मेरे पास खड़ी आत्मा का अवलोकन अच्छी तरह से नहीं किया। मैंने अपने निजी सियांसों में अपनी स्त्री-आत्मा से पूछा तो विदित हुआ कि उक्त अवसर वहीं मेरे

समीप थी किन्तु मीडियम ने उसके स्वरूप के वर्णन में गलती की थी। अगर मैं और प्रयत्न करता तो मि० पेटर्स की सहायता से मुझे और भी अधिक अच्छे परिणाम मिलते क्योंकि मि० पेटर्स इंग्लेंड के उच्च कोटि के और परम प्रसिद्ध मीडियम हैं।

सन् १९२८ की दूसरी लंदन यात्रा में मेरी स्त्री की आत्मा को कई क्लेयरवायंट मीडियमों ने देखा तथा उसका यथार्थ वर्णन भी किया। अन्य मीडियमों में मिस फ्रांसिस का नाम उल्लेख्य है, जिन्होंने "साइकिक सायंस के ब्रिटिश कालेज में २१-८-२८ को बताया कि मिसेज़ ऋषि, मेरी वर्त्तमान धर्म पत्नी से कुछ लम्बी क़द की एक महिला को वे देख रही हैं। प्रतीत होता है कि अभी ही किसी लम्बी बीमारी से उठीं हैं, और २५-३० वर्ष की अवस्था की प्रतीत होती हैं। ये सब बातें सच हैं मीडियम को उनकी बिलकुल खबर न थी। अन्यान्य सियान्सों में भी मीडियमों ने हमें हमारी स्त्री के विषय में बताया तथा उसके स्वरूप का अधिक स्पष्ट रूप से वर्णन किया।

## आत्माओं के प्रत्यक्ष आवाज़ सुनने के प्रयोग

ऐसे मीडियम बिरले ही मिलते हैं कि जिन की सहायता से बात चीत न करके आत्माओं के शब्द स्पष्ट रूप से सुन सकते हैं। मीडियम अपनी शक्ति उस अस्पष्टी भूत आत्मा को समर्पित कर देता है जिस का उपयोग करके आत्मा का शब्दोच्चार पास बैठने वालों को सुन पड़ता है। ऐसे मीडियम

बहुत ही कम होते हैं। मि० डेनिस ब्राडले कहते हैं कि संसार भर में गिनती के १२ ही ऐसे मीडियम प्रसिद्ध हैं जिनमें आत्मा के शब्दोच्चार स्पष्ट कराने की शक्ति है। ऐसे प्रयोगों में मीडियम की चेतना शक्ति ट्राँस-प्रयोग में हो जाने के समान विहीन नहीं हो जाती। ये प्रयोग अंधेरे में किये जाते हैं, क्योंकि अन्धकार के योग से आत्मा का शब्दोच्चार सुनाई पड़ता है। यह संपूर्ण प्रयोग बहुत ही रहस्यमय है तथापि इन उपयोगों की परीक्षा कई बार की जाचुकी है अतः ये प्रयोग संशय से परे हैं। लंदन के ब्रिटिश कालेज आफ साइकिक सायंस के ऐसे ही एक प्रयोग में मुझे भाग लेने का अवसर मिला था। जब मैं लंदन में ठहरा हुआ था तो एक दिन शुक्रवार की शाम को कालेज के प्रिंसिपल मि० मेकेंज़ी ने इस प्रयोग की तयारी की थी। मैं लगभग सात अंग्रेज़ सज्जन व महिलाओं के साथ सियांस रूम में पहुँचा। मिसेज़ कूपर इस प्रयोग में मीडियम बनी, और अन्य लोग जो इस प्रयोग में सम्मिलित हुए, एक दूसरे से हाथ में हाथ मिला करके बैठे। कमरे में बिलकुल अँधेरा था। कुछ देर तक बाजा बजने के बाद आत्मा-गाइड ने बोलना शुरू किया और मुझे ही पहले उसने सम्बोधित किया। यद्यपि मुझे प्रयोग सम्बन्धी आवश्यक बातें पहले से ही बता दी जा चुकी थीं तथापि पहले मेरा चित्त बहुत अस्तव्यस्त हुआ। उस पारलौकिक गाइड ने बताया कि यहाँ पर एक भारतीय आत्मा है। वह तुम्हारे पास खड़ी है। वह कहती

है कि "मैं प्रसन्न हूँ और तुमसे वह तुम्हारी भाषा में बातचीत करेगी।" यह बहुत स्पष्ट शब्दोच्चार था। और मैं यह जान कर स्वभावतः परम प्रसन्न हुआ कि मेरी स्त्री की आत्मा मुझसे स्पष्ट शब्दोच्चार पद्धति के अनुसार बातचीत करेगी। जब मैंने अपनी भाषा मराठी में उस से बात पूछना आरम्भ किया, मुझे बहुत महीन आवाज़ में मेरे प्रश्नों के उत्तर मिलने लगे। मैं उस से कहने लगा कि ज़रा ज़ोर से बोलो। इतने ही में उस पारलौकिक गाइड ने बताया कि "वह चली गयी"। इससे मुझे बड़ा ही खेद हुआ, पर मैं कर ही क्या सकता था। फिर प्रयोग में बैठने वाले लोगों ने अपने परलोकगत प्रिय व सम्बन्धियों से बातचीत की। इन का शब्दोच्चार स्पष्ट था।

अपने निजी सियांस में मैंने अपनी परलोकगत स्त्री की आत्मा से सारा रहस्य जानने का प्रयत्न किया। उसने उस समय मुझे बताया कि वह वहाँ थी और ज़ोर से शब्दोच्चार करने का प्रयत्न भी उसने किया लेकिन अभ्यास न होने से वह कृतकार्य न हो सकी। कुछ भी हो इस से यह यथेष्ट रीति से स्पष्ट है कि जो शब्दोच्चार उक्त प्रयोग के समय हुआ था वह मेरी परलोकगत स्त्री का ही था।

उक्त प्रयोग के समय मुझे बताया गया कि वह मुझे छूना चाहती है। मेरी अनुमति मिलने पर मुझे प्रत्यक्षतः ऐसा प्रतीत हुआ कि मानों कोई मेरे पैर छू रहा है। मेरी दाहिनी ओर बैठी

हुई एक स्त्री को उसके परलोकगत मित्र की आत्मा से गुलाब का एक फूल मिला और मुझे भी एक वैसा ही फूल मिला।

यह सारा प्रयोग लगभग एक घंटे तक होता रहा। जब रोशनी की गयी तो मैंने देखा कि तीन बिगुल जो पहले सीधे टंगे थे उन में से दो औंधे हो गये हैं और जो गुलाब के फूल प्रयोग में बैठने वाले अपने साथ लाये थे वे ज़मीन पर बिखरे पड़े थे। यह प्रयोग बहुत ही अधिक सफल हुआ। अगर मुझे इंग्लेंड से चलने की अधिक जल्दी न होती तो में फिर अपनी परलोकगत स्त्री की आत्मा से अधिक बातचीत करता। इन प्रयोगों में काम में लाये जाने वाले बिगुल एल्यूमिनियम या ऐसी किसी हलकी धातु के बने रहते हैं। कभी कभी पुट्ठे के बने हुए भीकाम में लाये जाते हैं। वे आत्माओं के शब्दोच्चार को प्रबल करने के काम में उपयुक्त होते हैं और एक प्रकार से मेगाफ़ोन का काम करते हैं। आत्माएं इन बिगुलों को कभी छत की तह तक उठा लेजाते हैं और वे वहाँ तैरते हुए से दीख पड़ते हैं।

सन् १९-८ में जब मैं लंदन की अन्तर्राष्ट्रीय स्पिरिचुअलिस्ट कांग्रेस में समिल्लित होने के लिये गया था, उस समय भी मुझे मिसेज़ राबर्टसन के घर पर आत्माओं के शब्दोच्चार प्रयोगों में बैठने का अवसर मिल था। इन दोनों प्रयोगों के मौकों पर मैं तथा मेरी जीवित पत्नी उपस्थित थे। सर्किल के गाइड को उक्त ट्रम्पेट के द्वारा बोलते थे और हमें दोनों अवसरों पर

आत्माओं का शब्दोच्चार सुन पड़ा। कई बार ऐसा हुआ कि उक्त बिगुल हवा में उड़ जाता था और बड़ी खुशी में हम लोगों को थप थपाता था। गाइड के कथनानुसार सुभद्राबाई भी वहाँ मौजूद थी किन्तु यद्यपि अभ्यास न होने के कारण व उनका शब्दोच्चार इतना प्रबल न हो सका। बिगुल में एक जगह एक प्रकार का चमकीला पन था। इसके ही सहारे उस अंधेरे कमरे में उक्त बिगुल की गति हम देख सके थे। इन दोनों प्रयोगों के समय मि० राबर्टसन उनकी पत्नी तथा उनके दो कुटुम्बी मित्र बैठे थे। आत्माएँ प्रायः उन्हें सलाह देती थीं कि ईश्वर की प्रार्थना किया करो और उस म्यूजिकल बावल का प्रयोग करके अधिक शक्ति प्राप्त करलो।

## फ़ोटो लेने के प्रयत्न

जब तक मैं लंदन में ठहरा तब तक बराबर परलोक विद्या सम्बन्धी सारी बातों की ही छानबीन करता रहा। मेरे मित्र मि० बुश भी उस समय वहीं थे। उन्होंने मुझे मेरे काम में यथेष्ट सहायता भी की थी। उन्हीं के प्रयत्न से स्टेड ब्योरो में मिसेस डीन के साथ फ़ोटोग्राफिक प्रयोग करने का निश्चय किया गया। मिसेस राबर्टसन व श्रीयुत श्रीनारायण जी चतुर्वेदी भी उस समय सियांस में आये थे। सभी को बड़ा उत्साह था क्योंकि हम लोगों में से दो व्यक्ति तो मेरी मृत स्त्री की आत्मा से परिचित ही थे और हम लोग चाहते थे कि मीडियम की साइकिक शक्ति के

सफल प्रयोग की सहायता से मेरी मृत स्त्री के सूक्ष्म शरीर का प्रतिबिम्ब फ़ोटो में यथावत् खिंच जाय।

प्रारंभिक कृत्यों के हो चुकने के बाद हम लोगों ने चार प्लेटों को हाथों में पकड़ कर उन्हें मेग्नेटाइज़ किया। इस कार्य में लगभग १० मिनिट लगे। इस अवधि में हम लोग बराबर प्रार्थना करते रहे कि आत्मा गण हमारे इस कार्य को सफल करने में पूर्ण सहयोग देवें। इस मेग्नेटाइज़ेशन के बाद कमरा खोल कर पहले मुझे और मिसेज़ राबर्टसन को सामने बिठाल कर तसवीर खींची गई। बाद में हम चारों तसवीर में शामिल हुए। उस तरह कुल दो बार तसवीरें ली गयीं। प्रतिवार दो दो प्लेट लिये गये। तसवीर खींचने और कैमरे में प्लेट रखने का काम मिसेस डीन ने अपने हाथों किया था। प्लेटों का 'एक्सपोज़' लगभग दस मिनिट बराबर रखा गया था। इतनी देर इस लिये लगी कि उस समय दिन था और मामूली रोशनी से ही काम लिया गया था।

इन चार प्लेटों में से दो प्लेटों में बैठने वालों के अतरिक्त एक अन्य प्रतिबिम्ब भी था। मैंने सोचा कि यह प्रतिबिम्ब अवश्य ही मेरी पत्नी का होगा। किन्तु अभाग्यवश वह मेरी मृतपत्नी का प्रतिबिम्ब न था। दोनों में ही एक ही प्रकार का प्रतिबिम्ब था। इसे किसी ने न पहचान पाया। बाद में मुझे बताया गया कि वह चित्र मिसेस राबर्टसन के मृत चाचा के सूक्ष्म शरीर का चित्र था। उनकी तसवीर कैसे आई इसका हम लोग ठीक ठीक भेद न

पा सके। क्योंकि हम लोगों को उनके आने का कुछ भी अनुमान न था।

सदा की भांति जब हमने अपने निजीसियांस में सुभद्रा बाई से पूछा कि वह फ़ोटो में अपना चित्र क्यों न दे सकी तो उसने कहा कि हम ने प्रयत्न तो बहुत किया किन्तु असफल रही। वस्तुतः बात यह है कि ऐसे प्रयोगों को सफल करने के लिये दोनों ओर से प्रयत्न करने और उसका अभ्यास करने की पूरी आवश्यकता है। मैं यहां यह भी बता देना चाहता हूँ कि इस फोटोग्राफिक प्रयोग के समय सभी कार्य बड़ी सफ़ाई के साथ हम लोगों के सामने किये गये थे। प्लेट का डेवलपमेंट भी हम लोगों की उपस्थिति में डार्क रूम में किया गया था और प्लेटसे भी बिलकुल नये थे। और सारी कार्रवाई में लेशमात्र भी संशय करने का अवकाश नहीं दिया गया।

जब मैं दुबारा लंदन गया था तो मुझे मि० होप और मिसेस बकस्टन के साथ प्रयोग करने का अवकाश मिल गया। ये लोग भी उस समय वहां परलोक विद्या विशारदों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिये आये थे। ये दोनों प्रसिद्ध फ़ोटोग्राफिक मीडियम्स हैं और इनके प्रयोग भी बहुत सफ़ल होते हैं। अतर्राष्ट्रीय पारलौकिकफ़िडरेशन के वाइस प्रेसीडेंट मि० मेयर से एक सियांस का प्रबंध किया था। उनके साथ हम लोग भी स्टीड व्यूरो में उस अवसर पर फिर गये। इस बार जो प्रयोग

हुआ उसमें सुभद्रा बाई का चित्र आया देख हमें बहुत ही हर्ष हुआ।

इस सफलता की कार्रवाई बड़ी ही मनोरंजक थी। उसी दिन सबेरे अपने निज प्रयोग में सुभद्राबाई ने हम से कहा था कि हम अवश्य अपनी फ़ोटो उतारने में सहायता करेंगी। और इसी वचन को उसने संध्या को फ़ोटोग्राफिक प्रयोग में पूरा किया था। एक बात मार्के की यह भी है कि मैंने न तो इस विषय में मि० होप से किसी तरह की चर्चा की थी और न वे ही यह बात जानते थे कि मेरी श्री पत्नी का देहावसान हो चुका है। हम उस समय अपने भाग्य की सराहना किये बिना न रह सके क्योंकि प्रायः फ़ोटोग्राफिक प्रयोगों में अनजान व्यक्तियों के प्रतिबिम्ब आ जाया करते हैं। यद्यपि मि० मेयर को अपनी साध पूरी करने की बड़ी उत्सुकता थी तथापि उनकी इच्छा पूरी न हो सकी।

उस समय लंदन में मि० बजाज और मि० ठाकुरप्रसाद एम० ए० हमारे ही साथ साथ ठहरे थे। उन लोगों के आग्रह करने पर हम ने मिसेज़ डीन की सहायता से एक फ़ोटोग्राफिक प्रयोग किया। इसमें एक स्त्री का चित्र उतरा जो श्री ठाकुरप्रसाद की समीप की सम्बन्धिन थीं। उनका देहावसान हुए लगभग ११ वर्ष बीत चुके थे। इस प्रयोग की सारी कार्रवाई हम लोगों के सामने की गयी थी और यह बात हम दावे के साथ कह सकते हैं कि उसमें किसी प्रकार के संशय की लेशमात्र भी गुंजाइश नहीं है।

यहाँ पर इस फ़ोटोग्राफ़िक प्रयोग की प्रक्रिया का पूरा विवरण उन लोगों को समझा देना आवश्यक है कि जो लोग इस प्रक्रिया को बिलकुल नहीं जानते। इस प्रयोग के समय मीडियम अपने हाथों से प्रयोग में बैठने वालों की तसवीर केमरे द्वारा खींचता है। तसवीर खींचते समय उन प्लेटों पर उनके मृत मित्रों परिजनों और सम्बन्धियों के भी प्रतिबिम्ब उन पर उल्लिखित हो जाते हैं। प्रायः ऐसी आत्माओं के प्रतिबिम्ब भी प्लेटों पर उतर आते हैं कि जिनका पता निशान भी बैठने वालों को मालुम नहीं होता। प्रयोगों के समय आत्माओं के सूक्ष्म शरीर किसी भी तरह दीख नहीं पड़ते और न प्रयोग में बैठने वालों या मीडियम को ही उनके आने या न आने का भान उस समय होता है। आत्माओं के चित्र खिंच जाने के बाद जब उनके प्लेट्स डेवलप होते हैं तभी वे दीख पड़ते हैं। वस्तुतः अपरिचित आत्माओं के चित्रों की संख्या औसत में परिचितों की संख्या से अधिक रहती है। अल्ट्रा वायोलेट किरणों को फ़ोटो उतर आना इस बात को प्रमाणित करता है कि जिस पदार्थ का प्रतिबिम्ब चित्रित होता है उसे प्रकट होने की आवश्यकता नहीं है। फ़ोटो उतारने से पहले प्लेटों का जो मेग्नेटाइज़ेशन होता है उससे प्लेटों में 'साइकिक' शक्ति का उनमें समावेश हो जाता है और इस शक्ति के कारण ही पार-लौकिक सूक्ष्म शरीर फ़ोटो में अंकित हो जाते हैं।

कुछ लोग समझते हैं कि सूक्ष्म शरीरियों के फोटो लेने का

काम बिलकुल नई बात है। परन्तु बात ऐसी नहीं है। सन् १८६१ में जब ममलर अपनी प्रयोग शाला में प्रयोग कर रहा था तो उसे भी ऐसे ही सूक्ष्म शरीरियों के चित्रों के अंकित होने का अनुभव हुआ था। वह इस बात को ठीक न समझ सका था। इस लिये उसने यह समझा कि उसके प्रयोग में कोई त्रुटि रह गयी है। अच्छी प्रकार इस बात का अनुसंधान करने पर उसे निश्चय हो गया कि उसके प्रयोग में किसी तरह की त्रुटि नहीं थी। जिसे वह अपनी त्रुटि का फल समझ रहा था वस्तुतः ऐसे प्रतिबिंब का चित्र था कि जो प्रत्यत्त नहीं देखा जा सकता था। लेकिन उसे अपने ही विचारों पर पूरा विश्वास न हुआ। अतः उसने अपने सारे अनुष्ठान को बड़े निपुण लोगों के सामने भी रखा। वे भी उसके उपर्युक्त विचार से ही सहमत हुए। उसी समय से समय समय पर इस प्रयोग का अभ्यास कर कतिपय मि० मीडियम्स इस सिद्धान्त की यथार्थता प्रमाणित करते चले आते हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि ऐसी शक्ति वाले मीडियम इनेगिने ही हैं और जो हैं वे भी प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करने में असमर्थ हैं।

## ट्रांस के अनुभव

कभी कभी आत्माएँ मीडियम के शरीर को अपने वश में कर के उसकी वाक शक्ति का भी उपयोग करते हैं। इस तरह वे अपने विचारों मानवी वाणी में परिणत कर प्रकट करते हैं। ऐसे प्रयोगों के समय मीडियम को अपनी सुधबुध नहीं रहती और न इन

प्रयोगों में बीती बातों का ही उसे स्मरण रहता है। लेकिन यह याद रखना चाहिये कि "आवेश" अवस्था इससे बिलकुल ही भिन्न है क्योंकि "आवेश" अवस्था में मीडियम की इच्छा न रहते हुए भी बरबस कोई आत्मा उसे अपने काबू में कर लेती है और तब तक वह उसे काबू में रखता है जब तक कि वह स्वयं उसे नहीं छोड़ता। 'ट्रांस' में मीडियम स्वतः अपनी शरीर शक्ति किसी आदूत आत्मा को काम निकालने के लिये देता है। इस समय की निद्रा या तंद्रा मेस्मेरिज़्म या हिप्नोटिज़्म के कारण उत्पन्न नहीं होती। प्रार्थना करने पर और आत्मा का सहयोग प्राप्त होने पर मीडियम निद्रावस्था में हो जाता है और शान्ति के साथ बेहोशी उसे आजाती है इस शरीर के ही द्वारा आदूत आत्मा अपने विचार प्रकट करके कुछ देर बाद शरीर को फिर अपनी पूर्वावस्था में ला देता है। आत्माओं को भी इस प्रकार मानवी शरीर की सहायता लेने के लिये पूरा अभ्यास करना पड़ता है और प्रारंभ में वे भी इस कार्य में सफल नहीं होते।

जब हम लोग लंदन में थे तो वहाँ ब्रिटिश कालेज आवसाइकिक सायंस नाम के विद्यालय में मिसेज़ ऋषि ने ट्रांस का भी अभ्यास किया था जिसे वे अब सफलता से कर सकती हैं। जिस आत्मा का प्रभाव प्रायः मिसेज़ ऋषि पर हुआ करता है वह हम लोगों का परिचित नहीं है तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि वह आत्मा हम लोगों की सहायता करने में पूर्णरूप से उत्सुक रहती है

वह अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करती है ।जिस भाषा का मिसेज़ ऋषि को ज्ञान नहीं है। सुभद्राबाई ने भी इस प्रकार बोलने का प्रयत्न किया है किन्तु इस अपरिचित आत्मा के समान वह सफल नहीं हुई। उनकी आवाज़ अभी भी साफ़ नहीं निकल पाती। ये प्रयोग प्राय: ड.० इकजील तथा अन्य श्रद्धालु सदस्यों के सामने किये गये हैं। सदा की भाँति प्रार्थना करने के उपरान्त यानी १५ मिनट प्रार्थना करने के बाद ट्रांस की प्रारंभिक अवस्था प्रारंभ होती है और मिसेज़ ऋषि के शरीर के सारे अंग शिथिल हो कर एक दम कड़े पड़ जाते हैं। शरीर की यह अवस्था लगभग एक घंटे तक रहती है। ऐसी अवस्था में नाड़ी संचालन और श्वास-प्रश्वास की गति अत्यधिक तेज़ हो जाती है। प्रयोग के समय नाड़ी का स्वंदन ७२ हो जाता है किंतु मामूली अवस्था में केवल ७० रहता है। जिस समय यह प्रयोग समाप्त होने को होता है तो बड़ी ज़ोर की एक अंगड़ाई आती है और फिर वह अपना पूर्वा-वस्था में हो जाती है। उस प्रबल आत्मा से हमने कई वार अन्य आत्माओं के विषय में भी प्रश्न किये हैं। उनकी उपस्थिति तथा उनके संदेशादि के विषय में उसने यथावत उत्तर दिये हैं। प्राय: ऐसे प्रयोगों के अवसर पर सुभद्राबाई सदैव उपस्थित रहती हैं। किंतु वे उस प्रबल आत्मा के द्वारा अपने विचार न प्रकट कर मामूली हस्त लेख प्रयोग द्वारा ही अपने विचार प्रकट किया करती हैं।

---

# चौथा अध्याय

## परलोक वर्णन

ल देहत्याग के पश्चात् अपना तथा हर एक मनुष्य का क्या होता है, इस विषय का ज्ञान अखिल मानव जाति को होते हुए भी, यह ज्ञान प्राप्त करने के सम्बन्ध में उपहास किया जाता है। बिना मरे स्वर्ग यानी परलोक नहीं दीखता, यह एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है। लेकिन कई एक असम्भव बातें आज नयी खोज से नित्य परिचय की जैसी हो गयी हैं। जिन साधनों से यह ज्ञान हो सकता है, उनका विवेचन स्थानान्तर में किया गया है। यह ज्ञान किसी शास्त्रवचन, दन्तकथा अथवा अंतस्फूर्ति से नहीं हुआ। स्वयं परलोकगत मनुष्यों की आत्माओं द्वारा प्राप्त हुआ है। इसकी सत्यता मानने के लिए जो प्रमाण हैं, वे तर्क शास्त्र से सिद्ध और अनेक समय किये हुए प्रयोग द्वारा अनुभूत हैं। भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न व्यक्तियों की दी हुई परलोक सम्बन्धी अवस्था की मुख्य बातों में एकवाक्यता

है। जिन मीडियमों द्वारा कई सन्देश आये हैं वे असामान्य साइकिक शक्ति युक्त थे। डी० डी० होम नाम के मीडियम में इतनी शक्ति थी कि वे वातावरण में निरालम्ब रह सकते थे। इस दृश्य के साक्षी कई विद्वान् हैं। परलोकगत आत्माओं ने जब पार्थिव वस्तुओं के सम्बन्ध में सत्य वर्णन दिये हैं और अपना अस्तित्व प्रमाणित किया है; तब उन्होंने अपनी स्थिति के बारे में जो वर्णन दिया है, वह असत्य क्यों कर माना जा सकता है? मान लो, किसी परलोकगत मनुष्य ने अपनी पहिचान की कई बातें बतलायीं और चिकित्सकों का समाधान किया। ऐसी दशा में उसने जब अपनी दिनचर्या का या पारलौकिक स्थित का वर्णन किया तो वह असत्य क्यों कर कहा जाय?

कई लोग इस वर्णन को केवल पुराण ग्रन्थों के विरुद्ध होने के कारण अविश्वसनीय मानते हैं। उनका यह मत है कि परलोकगत आत्माओं से वार्तालाप होना यदि सम्भव भी हो तो उनका वर्णन किया हुआ पारलौकिक वर्णन सत्य नहीं मानना चाहिये। कारण, पुरातन मुनियों के बचनों के वह विरुद्ध है। ऐसे लोगों का मत कहाँ तक यथार्थ है, इसका निर्णय विद्वान विचार पूर्वक स्वयं कर लें। यदि इस मत को पुष्ट करना हो तो यह माना पड़ेगा कि परलोकगत आत्माएँ पार्थिव जीवन के विषय में तो सत्य भाषण करती हैं, किन्तु स्वस्थिति के बारे में निष्कारण झूठ बोलती हैं। जिनका कभी प्रयोगकर्ताओं से परिचय नहीं था, ऐसी आत्माएँ

अपना परिचय तथा अस्तित्व निःसन्देह बतलाती हैं और परलोक विषयक सुसङ्गत वर्णन देती हैं। उनकी कही हुई पार्थिव बातें तलाश करने पर सत्य निकलती हैं। तब उनका वर्णन किया हुआ पारलौकिक वर्णन क्यों असत्य मानना चाहिये? उपरि निर्दिष्ट मतवादियों का यह आग्रह है कि प्रेतात्माओं के अतिरिक्त अन्य आत्माएं इन साधनों द्वारा वार्तालाप करने को नहीं आसकतीं और सत्यलोक, तपोलोकादि के लोगों का वर्णन ग़लत है। प्रेतात्मा इस शब्दसमुच्चय का धात्वर्थ न देख कर वे रूढार्थ को देखते हैं और उसी को ठीक मानते हैं। प्रेत शब्द का रुढ अर्थ घृणा-व्यञ्जक हो गया है, किन्तु इस शब्द का धात्वर्थ निःसन्देह यथार्थ और परलोक विद्या के लिये पुष्टिकारक है। प्रेत-शब्द का विग्रह प्रइत याने प्रकर्षेण गतः होते हुए भी अब इस शब्द का अर्थ कितना परिवर्तित हो गया है? पद्मपुराण या महाभारतादि ग्रन्थों में प्रेत का अर्थ नीच अवस्था द्योतक दिया है, इस लिये अपने परलोकगत प्रिय बाँधवों को प्रेतात्मा न लिख परलोकगत लिखना आवश्यक है। इस अध्याय में दिया हुआ वर्णन परलोकविद्या प्रणीत साधनों से बहुत यत्न पूर्वक मिला है। इसमें लिखी मुख्य हुई मुख्य बातों में एकवाक्यता है। तर्कशास्त्रऔर बुद्धिवाद से यह वर्णन सम्मत है। न्यायालय में जिस तरह के प्रमाण से किसी अपराधी को मृत्यु की सज़ा देनी उपयुक्त होगी उससे अधिक दृढ़तर प्रमाण इस वर्णन की सत्यता के बारे में हैं। इस लिये यदि किसी धर्मग्रन्थ

के परलौकिक वर्णन से यह कुछ विसङ्गत हो, तो भी इस वर्णन को सत्य मानने में हानि नहीं है। धर्मग्रन्थों की यह अवस्था हो गयी है कि उनमें से कौन सा ग्रन्थ मानने योग्य और किन किन ग्रन्थों का कौन कौन सा भाग प्रक्षिप्त ठहराने योग्य है यह जानना बहुत कठिन होगया है। धर्मतत्वों में कदाचित् एकवाक्यता होगी, किन्तु प्रचलित धर्मग्रन्थों में एकवाक्यता करना या उनमें से सर्व-साधारण तत्व या वर्णन निकालना अतीव दुर्घट है। ऐसी हालत में तर्क शास्त्र एवं प्रत्यक्ष प्रमाण से, तथा विविध प्रयोगों से जो पारलौकिक वर्णन सुसङ्गत है, उसे केवल धर्मशास्त्र के कुछ संशयात्मक बचनों से विसंगत होने के कारण अविश्वसनीय समझना बड़ी भारी भूल होगी।

प्रसिद्ध शास्त्रज्ञ तथा संशोधक सर औलिवर लौज ने इस विषय के अपने 'रेमंड' नामक ग्रन्थ में, इस वर्णन को अनवेरिफ़ाएवल् मेटर् (असमर्थनीय बातें) शीर्षक एक अध्याय में लिखा है। उनको इस विषय पर पूरा विश्वास है। बल्कि वे इहलोक के समान परलोक को भी सत्य समझते हैं। इस विषय में अनेक समय उनका नाम सुनने में आता है। उनकी बातों का सारांश यही दीखता है कि परलोकगत मनुष्यों की कही हुई पार्थिव बातों को सत्य ठहराने के लिये जैसे सुलभ साधन हैं वैसी सुविधा उनके परलोक विषयक वर्णन के बारे में नहीं है। किन्तु उपरिनिर्दिष्ट कारणों से यह वर्णन सत्य मानने में हानि नहीं है।

यदि यह वर्णन भिन्न भिन्न धर्मों में लिखी हुई मृत्यु विषयक कल्पनाओं के अनुसार ही होता, तो कदाचित् यह मानना सम्भव होता कि यह वर्णन मीडियम (मध्यस्थ) के अतीन्द्रिय-संवेदना के अन्य किसी कारण का परिणाम है। स्वर्ग तथा नरक का वर्णन प्रचलित धर्म कल्पनानुसार ही यदि केवल लिख के आता और भिन्न भिन्न व्यवसायियों का भिन्न भिन्न प्रकार का वर्णन होता तो भी यह मत यथार्थ माना जा सकता था। किन्तु वास्तव में इन दोनों में से एक भी प्रकार का अनुभव नहीं आता। परलोकगत मनुष्य अपने अनुभव तथा समझ के अनुसार स्वस्थिति का वर्णन देते हैं। अनेक समय उनका दिया हुआ वर्णन तथा अनुभव अपनी पूर्व कल्पना के विरुद्ध है, यह वे अस्वीकार करते हैं और परलोक जाने पर अमुक प्रकार के अनुभव आवेंगे यह उनकी पूर्वकल्पना सर्वथा अयथार्थ हुई, यह बात वे निःपक्षपात बुद्धि से प्रकट करते हैं। इससे कदाचित् वाचकों ने समझ लिया हो कि क्या धर्मग्रन्थों में लिखी हुई सब बातें ग़लत हैं? प्रस्तुत लेखक का इतना ही मत तथा अनुभव है कि उनमें से कुछ बातें सत्य और कुछ असत्य हैं। मुनियों के लिखे हुए पुराणग्रन्थ आज अपने मूल स्वरूप में नहीं हैं। इन सब बातों पर ध्यान देते हुए आगे का परलोक-वर्णन पढ़ना चाहिये।

सब परलोकगत वनुष्यों का एक मत से कहना है कि मृत्यु के समय कुछ तकलीफ नहीं होती, यानी मरने की क्रिया दुःखविहीन

है। मृत्यु के पाँच मिनिट पूर्व उस मनुष्य के जो विशिष्ट गुण धर्म होते हैं मृत्यु के पाँच मिनिट पश्चात वे जैसे के तैसे अवाधित बने रहते हैं। उसके जो विचार, कल्पना, या मनोविकार होंगे उनमें किसी तरह का अन्तर नहीं होगा। केवल मृत्यु के समय जो बीमारी का बादल आया हुआ होगा वह नष्ट हो जाता है और उस मनुष्य को कुछ कुछ आराम मालूम पड़ता है। एक मृतक ने लिख दिया है कि सर्प को अपनी केंचुली छोड़ने पर जैसा प्रतीत होता है वैसा अपनी स्थूल देह छोड़ने पर हम को प्रतीत होता है। मृत्यु के पश्चात स्थूल देहधारियों को सूक्ष्म देहधारी देखते हैं। उनके लिये स्थूल देहधारी मनुष्य जो भतीव शोक करते हैं उससे सूक्ष्म देहधारियों को कष्ट होता है। वे अपना अस्तित्व अनेक उपायों से पार्थिव मनुष्यों को बतलाने का प्रयत्न करते हैं। वे अपना सूक्ष्म हाथ स्थूलदेहधारी मनुष्यों के हाथ पर रखकर या अन्य रीति से स्पर्श करके उनका समाधान करना चाहते हैं; किन्तु थोड़े ही समय में वे जान लेते हैं कि उनका यह प्रयत्न विफल है। कारण, उनके सूक्ष्म हाथ का स्पर्श स्थूल-देह पर नहीं होता। जिस जगह उनकी मृत्यु हुई होगी उसी स्थान में उनको अपना सूक्ष्मदेह खड़ा या समीप निरालंब उपस्थित सा मालूम होता है। उनकी उस अवस्था में हस्तपादादि अवयव रहते हैं, उनका सूक्ष्म-देह स्थूलदेह की प्रतिछाया है। स्थूल शरीर में जो कुछ त्रुटि होती है वह परलोकगमन के पश्चात नहीं रहती। यदि

कोई यहाँ अंधा या लूला लंगड़ा हो तो उसका देह कुरूप नहीं रहता। शस्त्र से कटा हुआ या नोक से छिन्न विछिन्न स्थूल शरीर जब सूक्ष्म देह को प्राप्त होती है तब उसकी पूर्णता में किसी तरह की न्यूनता नहीं रहती। इस अवस्थान्तर के पश्चात् परलोकगत मनुष्य को स्वकर्मानुसार भिन्न भिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। अपने दुःखी बान्धवों का समाधान करने का प्रयत्न करते समय उसको अपनी अवस्था का तथा अनुभवों का भी ध्यान रखना पड़ता है। स्वयंलेखन द्वारा जो अनुभव मृत्यु के समय आये हैं, वे महत्वपूर्ण तथा लाभदायक होने के कारण उनमें से कुछ वाचकों को बतलाना उपयोगी जान पड़ता है। यह सन्देश मेरे सामने स्वयं-लेखन-यंत्र द्वारा लिख के आये हैं। जिन्होंने यह सन्देश दिये हैं, वे सामान्य व्यक्तियाँ थीं। इसके अतिरिक्त किसी का नाम निष्कारण प्रकट करने से उनके सम्बन्धी कदाचित् अप्रसन्न हों अतः उनके नामों का उल्लेख यहाँ नहीं किया जायगा।

"मेरी मृत्यु आकस्मिक हो गयी, मुझको हृदय की व्यथा हुई थी, अनुभव करने का समय भी नहीं मिला, मैं यमपुरी में गया था, वहाँ चार काम किये, तप्त लोह हाथ में पकड़ा, गाड़ी खींची, अनशन किया। दूतों ने मुझ को तकलीफ दी। यहाँ आने से मेरा मन उल्लसित हुआ है। लोहदण्ड हाथ में पकड़ने से मेरा हाथ अभी तक कमजोर है। हाथ आप ही आप अच्छा होगा।"

" मैं पहिले पाँच दिन बीमार रहा। पाँचवें दिन प्रातः काल साढ़े चार बजे मेरी कुछ विलक्षण दशा हो गयी। वह मेरी समझ में भी नहीं आ सकी, उस समय विचित्र कृष्ण वर्ण कई एक आकृतियाँ मुझ को दीखने लगीं। कुछ समय के पश्चात् उनमें से एक आगे बढ़ कर मुझ से कहने लगी—" बाबा चलो अब देर मत करो। जब यह सब हो रहा था तब इहलोक के अपने सम्बन्धियों की तरफ मेरा चित्त नहीं था। मेरी आत्मा के शरीर से निकल जाने के दस मिनिट बाद मैं होश में आया, किन्तु निरुपाय था, आख़िर मेरा अन्त हुआ।"

" मेरे अंतकाल के अनुभव यह थे कि पहिले एक गुंसाई आया। उसके साथ दो मनुष्य थे। वे मुझ से कहने लगे कि तुम बहुत भले मनुष्य दीखते हो। तो चलो एक दफे मल्ल-युद्ध करेंगे। चलोगे ना ? किन्तु तुमको फिर हम वापिस नहीं आने देवेंगे।"

प्रथम आठ मनुष्य नज़र पड़े। उन्होंने मुझ से कहा " महाराज ! आप बहुत वृद्ध दीखते हैं। आप इस संसार में रह कर क्या कीजियेगा। आप मेरे सा आये तो बहुत अच्छा हो। उनके ऐसा कहते ही मैं घर की सब स्मृति छोड़कर उनके साथ जाने को तैयार हुआ। उसी समय उन्होंने मुझको उठाया और मैंने नेत्र मींच लिये। पश्चात् आधा मार्ग तय करने पर मुझ को घर की याद आगयी, किन्तु अब इससे हो ही क्या सकता था। वे वापिस नहीं भेजेंगे यह मुझे मालूम था। फिर वे मुझको यमपुरी

में ले गये। वहाँ मैं एक घंटे भर रहा। पश्चात् मैं सत्यलोक में गया। वहां नियम की शिक्षा मिली। मरते समय मेरा मन अपनी स्त्री में और पुत्र में बहुत आसक्त था।"

"मुझको तीन मनुष्यों का दर्शन हुआ। उन्होंने कहा कि तुम्हारा इस संसार में रहने का समय समाप्त हुआ। चलो! उठो! हमारे साथ चलो। फिर मैं उनके साथ भुवर्लोक में गया। वहां यमदूतों ने मुझ को रहने को रहने को एक स्थान दिया। वह चार फुट चौड़ा सात फुट लंबा और बारह फुट ऊंचा था। वहां दो कोठड़ियां थीं। एक में राव साहब (मेरे पिता) और दूसरी में मैं रहता हूं।"

"मुझ को मरते समय बीमारी नहीं हुई। एक दिन घूमने को जा रहा था। रास्ते में पांव में चोट लगी और सूजन हो आयी। डाक्टर को दिखलाया तो उन्होंने कहा कि इसका आपरेशन करना होगा। आपरेशन करवाया; उस समय पांव में से अधिक रुधिरस्राव होने से एक दम शक्ति जाती रही और तीसरे दिन मृत्यु हुई। उस समय मुझ को दो मूर्तियां नज़र पड़ीं जो मुझ को ले गई। उनके साथ मैंने चार दिन तकलीफ सही। वहां छः दिन रह कर फिर तपोलोक में गया। वहां जाने पर मुझे निर्देश मिले।"

"मेरा जब अन्त हुआ तब मुझे देवदूत दीखते थे। उनकी आकृति मनुष्य के समान थी। उन्होंने मुझको बुलाया। मैं उनके सहित तपोलोक में गया। वहां जाने में पांच घंटे लगे। मार्ग में

सब देवताओं की मूर्त्तियां दीखती थीं। मेरे समान कुछ लोग दीखते थे। मुझ को नदी पार होकर जाना पड़ा। वह नदी देखने में अत्यन्त सुन्दर है। जाने में बहुत तकलीफ हुई। तपोलोक में जाने वाले सब लोगों को यह नदी पार कर के जाना पड़ता है।"

"मेरी साढ़े आठ बजे मृत्यु हुई। सायंकाल को सात बजे सन्निपात हो गया। साढ़े सात बजे बीमारी कमती होने से मुझ को होश हुआ। इसलिये नेत्र खोलकर देखा। इतने में चार मनुष्य नज़र आये। उनको देखकर मैं डर गया। इस कारण मैंने फिर नेत्र बंद किये। पश्चात् वे चारों घसीट कर मुझ को यमपुरी में ले गये। वहां मुझ को दो दिन तक यातना सहन करनी पड़ी। अनन्तर दस दिन पर्यन्त वहां ही रह कर मैं तपोलोक में गया। वहां जाने पर मुझ को एक ने नियमों का शिक्षण दिया।"

इस तरह के संदेश मृत्यु समय की अवस्था के बारे में आते हैं। इनसे उस अवस्थान्तर के प्रारम्भ में उनको क्या प्रतीत होता होगा यह ज़ाहिर होता है। अयस्थान्तर में जाते समय कभी कभी ये लोग दूरस्थ पार्थिव मनुष्यों को साक्षात् दर्शन देते हैं। उस दर्शन से वे सम्बन्धी भयभीत तथा आश्चर्य चकित हो जाते हैं। इस तरह के कई दृश्यों का शोध पाश्चात्य संशोधकों ने किया है। जिज्ञासुओं की ये शोध सायकिकरिसर्च सोसायटी की नियत कालिक रिपोर्ट में तथा अन्यान्य परलोक-ज्ञान-विद्यार्थिओं की स्वतंत्र पुस्तकों में देखने को मिल सकते हैं—इससे ज़ाहिर होता है

कि इस क्षण सामान्य मनुष्य अपने सूक्ष्म शरीर का भौतिक दृश्य जितनी सुविधा से बतलाते हैं उतना अन्यान्य समय नहीं बतला सकते हैं अवस्थान्तर में जाने के पश्चात् मनुष्य किसी न किसी लोक में निवास करते हैं। अपने शास्त्रों में लिखे हुए किसी लोक में वे अपना स्थान बतलाते हैं। भुवः स्वः महः आदि लोक इससे सत्य प्रतीत होते हैं। जिनको इन लोकों का नाम भी मृत्यु केपूर्व मालूम नहीं था ऐसे मृत्युप्राप्त मनुष्यों से पूँछने पर वे इनका होना बतलाते हैं। उनका कहना है कि भुवरादि लोकों का नाम तथा स्थान पारलौकिक व्यक्तियों ने हमको बतलाया है। पाश्चात्य मृतात्मा भी ये ही लोकान्तर बतलाते हैं। वे सत्य लोकादि नाम तो नहीं बतलाते, किन्तु उनका कहना है कि हम किसी 'प्लेन' में हैं और सत्य 'प्लेन' है—ऐसा भी ज़ाहिर करते हैं। इन लोकों का स्थान नियत करना कठिन है। कई लोगों ने कहा है कि वह जगह नहीं है—अवस्थान्तर है, वह पृथ्वी के चारों ओर प्रसृत है। जितनी अधिक योग्यता का आत्मा होगा उतना ही वह उच्चतर लोक में निवास करता है। इन 'लोकों' का वर्णन कई परलोकगत मनुष्यों ने दिया है। उसमें स्पष्ट है कि उच्चलोक के मनुष्य अधः-स्थित लोक में जा सकते हैं और कनिष्ठ लोक के भी कुछ समय तक उच्चतर लोक में जा सकते हैं। वे लोक पृथ्वी से कितने दूर हैं इसके सम्बन्ध में परलोकगत आत्माएँ अपनी समझ के अनुसार वर्णन देते हैं। उस अवस्था में जाने पर उनको स्वकर्मानुसार

शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। यदि साधु तथा दुराचारी मनुष्य परलोक में निवास करते होंगे, तो ईश्वर की सृष्टि में न्याय का अभाव प्रकट होगा और ईश्वर के गुणों का विपर्यास होगा। संसार का न्याय और सत्य केवल इस लोक के लिए ही नहीं है। यह तत्व परलोक से आए कई संदेशों से स्थापित होता है, किन्तु जो शिक्षा मिलती है वह उस मनुष्य के सुधार के वास्ते दी जाती है। अनवरत किसी को शिक्षास्थान में नहीं रखा जाता। उच्चस्थित आत्माओं के उपदेश से उनकी अवस्था में सुधार होने पर वे अपनी उन्नति के कार्य कर सकते हैं। इस तरह को कनिष्ट आत्माओं को उपदेश करने में तथा उनका उद्धार करने में उन्नतर आत्माओं का बहुत समाधान होता और इस निरपेक्ष सेवा से वे भी उच्चतम अवस्था को प्राप्त होती हैं। परलोक में आने पर सामान्यतः मनुष्य विस्मित होता है। उसकी पूर्वकल्पनाएँ कुछ और प्रकार की होती हैं और प्रत्यक्ष अनुभव उन कल्पनाओं से विपरीत होता है, इसलिये यह विस्मय द्विगुणित हो जाता है। यदि जीते जी यह परलोक विषयक ज्ञान हो जाय तो उनको यह विस्मय न हो और अखिल संसार का अतीव कल्याण हो। उनके ऊपर देखरेख करने के लिए गुरु नियत रहते हैं। उनकी आज्ञा में उनको सदैव रहना पड़ता है। यदि उनकी आज्ञा का पालन न किया जाय, तो कठोर शिक्षा सहन करनी पड़ती है। वास्तव में उनकी आज्ञा भङ्ग करना असम्भव है। वे अपने अधिक ज्ञान से

परलोकगत आत्माओं पर देखरेख कर सकते हैं। उनकी देखरेख परलोकगत मनुष्य की उन्नति के लिए होती है। वे नाराज़ हो गये तो कभी कभी उस परलोकगत मनुष्य को पुनः पृथ्वी पर जन्म लेने की भी वे आज्ञा देते हैं। साधारणतः पृथ्वी पुनः आने की कोई इच्छा नहीं करता। जिस तरह भारतवर्ष के परलोकगत आत्मा गुरु का अस्तित्व बतलाते हैं, उसी भाँति परदेशस्थ आंग्ल तथा अन्य देशीय आत्माएं 'गव्हर्नर्स' का अस्तित्व सूचित करते हैं। इस प्रकार भिन्न भिन्न लोक वह भी बतलाते हैं। इस कारण गुरु का या उसी के समान किसी अधिकारी व्यक्ति का अस्तित्व मानना आवश्यक होता है। जिन्हें यह मान्य नहीं था और जो निःसन्देह नास्तिक थे वे परलोकगमन के पश्चात् इस बात की सच्चाई के बारे में सन्देश देते हैं। ऐसे कई परलोकगत मनुष्यों से वार्तालाप करने का प्रस्तुत लेखक को अवसर प्राप्त हुआ है। उस अवस्था में मनुष्यों को अन्न वस्त्रादिकों की आवश्यकता रहती है। उनका देह सूक्ष्म परमाणुमय होने से उनका खाद्य अन्न भी सूक्ष्म परमाणु का रहता है और वह उनको गुरु से अथवा किसी अज्ञात रीति से मिलता है, ऐसा वे प्रतिपादन करते हैं। सभ्यता के विचार उनके अवाधित होने के कारण उनको वस्त्रादिकों की भी आवश्यकता रहती है। अन्न के समान वस्त्र भी उनको उसी रीति से मिलता है। परलोकगत मनुष्यों के फोटोग्राफ लिये गये हैं। उनसे भी यह बात स्पष्ट होती है के परलोकगत मनुष्य वस्त्रधारण करते

हैं। यदि ऐसा न होता तो उनके फोटो नग्नावस्था के आते। परलोक में जाने पर कुछ समय तक उनको जागृति नहीं आती। वे बतलाते हैं कि भिन्न भिन्न मृतात्माओं को भिन्न भिन्न समय में जागृति आयी। उनको आत्मोन्नतिकारक या अन्य प्रकार के कर्म करने का अवसर मिलता है। वे अपने कार्य में इतने मग्न रहते हैं कि वे समय व्यर्थ नहीं खोते। कई आत्माओं ने अपनी दिनचर्या-सविस्तर बतलायी है। उसे पढ़ने से पाठकों को इस विषय में बहुत ज्ञान होगा।

सुभद्राबाई ऋषि:—"तुम कहते हो कि मैं नहीं आती और बातचीत नहीं करती, लेकिन मेरे लिये एक तरफ कुआ और दूसरी तरफ़ बावड़ी है। मेरा दिन कैसे जाता है यह मैं अभी कहती हूं, सुनो—

प्रातः आरती पूजा वगैरा होती है, दो घंटे जप, उसके बाद आरती करके तुम्हारी ओर आना होता है। उधर गुरु कहते हैं काम वे किये रहे जाते हैं। तो भी मैं तुम्हारा समाधान करने के लिये काम छोड़ कर और वक्त निकाल कर इधर आती हूं। तिस पर भी तुम कहते हो कि आती नहीं और बोलती नहीं। दो घंटे जप, एक घंटा लक्ष या आवश्यकता हुई तो कुछ नियम, बीनना और गिनना, पांच घंटे निद्रा, एक घंटा विश्राम, एक घटा आरती, पश्चात दो घंटे पुराणकथा जो कुछ वहां होती है उसे सुनने को मैं जाती हूं। एक घंटा तुम्हारी तरफ एक घंटा गुरु की

तरफ जाना होता है। एक घंटा सैर करना। वहां भी सैर करने से तबियत ठीक रहती है, इस लिए जाना पड़ता है। इसके लिये जैसे इस लोक में परवानगी लेनी पड़ती है वैसे ही वहां भी। आठ दिन तक मैंने गुरु के पास जा कर आज्ञा मांगी तब जाने लगी। इसी तरह मेरा दिवस भर का समय निकल जाता है। मुझको अन्य नये काम करने की भी फुरसन नहीं मिलती। अब मुझको पांच मिनिट की फुरसत है, परन्तु मैं उत्तर दिये बगैर नहीं जाऊँगी। जल्दी कहो तीन मिनिट हो गये, दो रहे। अच्छा अब रात को साढ़े आठ बजे आऊँगी।"

"मैं प्रातःकाल तीन बजे उठ कर शौच मुख मार्जन करके थोड़ा सा दूध लेता हूं, पश्चात् वाहन पर बैठ कर दो कोस घूमने जाता हूं। घर लौटते लौटते चार बजते हैं। आने पर स्नान करता हूं। फिर संध्या, जप, पूजा, करता हूं। पूजा होने पर ध्यान करता हूँ, फिर अर्ध्यप्रदान होता है। पूजा होने तक चूल्हे पर आध पाव चावल पका के वैश्वदेव करता हूँ। फिर वस्त्रान्तर करके मन्दिर में जाता हूं। वहां गुरु का दर्शन करके तथा तीनों काल की आरती देख कर घर को वापिस लौटता हूँ। घर आने पर जल्दी पचाने वाला कोई एक पदार्थ स्वतः खाने के लिये हाथ से बनाता हूँ। ग्यारह बजे भोजन होता है। मैं दिन को न सोता और न निद्रा या वांए करवट लेटता हूं। फिर कई ग्रन्थ पढ़ने में मेरा समय जाता है। ऐसा करते करते चार बजते हैं। फिर सवा

चार बजे घर से मन्दिर को जाता हूँ। फिर रात को साढ़े नौं बजे घर आकर दूध पीता हूँ। दस बजे तक गीतापाठ होता है। ग्यारह बजे तक जप करता हूँ। थोड़ी देर सोकर फिर तीन बजे उठता हूँ।

मैं त्रिकाल स्नान करता हूँ। पहिला प्रातःकाल पाँच बजे, दूसरा दोपहर को बारह बजे और तीसरा रात को बारह बजे। पांच बजे से पूजा वगैरा करके साढ़े पांच बजे से साढ़े दस बजे तक एक पांव पर खड़ा रह कर तप करता हूँ। फिर साढ़े ग्यारह बजे तक जप, पश्चात् भोजन और अनन्तर स्नान कर के एक घंटा आरती और जप करता हूं और एक घंटा सोता हूँ। सायं-काल को सात बजे से आठे बजे तक गुरुचरित्र का पाठ होता है। पश्चात् भजनादि। नौ बजे से साढ़े ग्यारह तक निद्रा फिर स्नानादि।"

"प्रातः उठ कर सब कार्य निपटने के पश्चात् स्नान जप तप पूजादि करती हूँ। अनन्तर एक घंटा के लिये आरती में जाती हूँ। वहां से घर आकर बैठती हूँ और फिर आरती के लिए जाती हूं। वहाँ आधा घंटा लगता है। वहाँ से आकर भोजन करके एक घंटा सोलेने पर सायं समय सायं आरती आदि होती है। वापिस आकर बिछौंने पर लेटती हूँ। फिर वहीं नित्य क्रम शुरू होता है।"

ऊपरि निर्दिष्ट उदाहरणों से परलोकगत आत्माओं की दिन-चर्या की कल्पना की जा सकती है। सब की दिनचर्या एक प्रकार

की नहीं होती। कई देव धर्मादि कार्य में लगे हुए रहते हैं। कई देशोन्नति की चिन्ता में मग्न रहते हैं। कुछ दिनों के पूर्व परलोक-वासी लार्ड किचनर का संदेश मेरे देखने में आया। उन्होंने स्वदेश के सम्बन्ध में बहुत चिन्ता व्यक्त की थी और उन्होंने कहा था कि मेरा लक्ष्य मातृभूमि के कल्याण की तरफ इतना लगा हैकि इस परलोक के कुछ कार्य करने की भी मुझको फुरसत नहीं है वे अभी भी मृत्युलोक को अपना ही मानते हैं। इतना घनिष्ट प्रेम इस लोक पर उनका है। आर्यावर्त निवासी देशभक्तों ने यह ही हाल कहा है। वे हमको कई तरह का साहाय्य दे सकते हैं। उनकी चिन्ता तथा प्रेम व्यर्थ नहीं जाती। सूचना द्वारा या अन्य रीति से इहलोकस्थ लनुष्यों को वह साहाय्य दे सकते हैं। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण उचित स्थान पर अन्य अध्याय में दिये जावेंगे। इस शास्त्र के अभ्यास से यह सिद्ध हुआ है कि परलोक इहलोक की छाया है "यथा इह तथा परे" यह महामंत्र अनुभवजन्य ज्ञान द्वारा स्थापित हुआ है। परलोक का इहलोक से दृढ़ सम्बन्ध है। वहाँ की अदृश्य बातों का परिणाम इस लोक पर देखने में आता है, किन्तु इसका कारण भौतिक इन्द्रियगोचर नहीं है। यथापि उसका परिणाम निःसन्देह आश्चर्यजनक रीति से दिखाई देता है। आकस्मिक रीति से इहलोक में जो अन्यान्य बातें होंती हैं वे सब पारलौकिक सृष्टि का परिणाम हैं। जिसका कारण अपनी समझ में न आने से उसे ईश्वरी चमत्कार या अन्याय कोटि में डालते

हैं, वह वास्तव में दैवी सूक्ष्म लोकस्थ कारणों का कार्य्य है। यह केवल कविकल्पना या स्वकपोलकल्पित विचार नहीं है। अनेक बरसों के अनुभव का यह सन्देह रहित अनुमान है। इसको पढ़ कर पाठकों को ख्याल होगा कि लेखक मनमानी बातें लिख रहा है। हम उसके वचन पर क्यों कर विश्वास करें ? यदि इस सम्बन्ध में किसी को संशय हो तो वह अन्यान्य ग्रन्थ पढ़ कर तथा स्वयं अनुभव कर अपना संशय दूर कर सकता है।

परलोकगत आत्माओं को भोजन पानादि के समान निवास-स्थान की भी आवश्यकता रहती है। उनके गृह स्थूल मृत्तिका या ईंट पत्थर के बने हुए नहीं होते। वे सूक्ष्म पदार्थों के ही होते हैं। उनके पूर्व मृत सम्बन्धी या परलोकस्थ अन्य व्यक्तियाँ उनके लिए गृहादि निर्माण तथा सुसम्पन्न कर रखते हैं। इहलोक में बालक जन्मने के समय जिस भाँति व्यवस्था की जाती है उसी भाँति परलोक में मृत्यु समय हमारे मृत बंधुगण हमारे लिए तैयारी कर रखते हैं। इस स्थान पर स्वर्ग तथा नरकादि विषयों की कल्पनाओं को स्पष्ट करना उचित होगा। प्रचलित धारणा ऐसी है कि मृत्यु के पश्चात् इहलोक के कर्मानुसार मनुष्य को स्वर्ग या नरक में स्थान मिलता है। शंभुगीतादि पुराण ग्रन्थों में देवलोक निरूपण विभाग में लिखा है कि:—

प्रेतलोकस्तथैवस्तो लोकोऽपि नरकाभिधः।
दुःख दावानलज्वाला पूरितं भीषणालयम्॥

मनुष्य नरक में या प्रेतलोक में गमन करने पर उन्नति कारक या सुधार के कोई कर्म नहीं कर सकते। कारण उसी ग्रन्थ में लिखा है कि:—

कर्मं भूर्मृत्युलोकोऽस्ति कर्मक्षेत्रंच यज्जगुः ॥

अर्थात् मृत्युलोक में ही कर्म कर सकते हैं और उसका फल मृत्युलोक में या परलोक में मिलता है। किंतु अन्य कर्म परलोक में नहीं हो सकता। तथा साधु कर्म किया हो तो स्वर्ग में जाकर स्पृहणीय स्थान तथा अवस्था में वास कर सकेगा और पुण्य के क्षीण होने पर मृत्यलोक में फिर आना पड़ेगा। इस प्रकार आवागमनचक्र रहता है। इस चक्र से मुक्त होने के लिए भगवद्-भक्ति ही उपाय है। यह शाश्वत काल तक यातना सहन करने का स्थान नहीं है। कई परलोकगत आत्माएं कहती हैं कि हमको वहाँ जाना पड़ा था, किन्तु वहाँ कुछ समय तक रहकर हम अच्छी अवस्था में आकर रहे और अपने सुधार का तथा अन्य लोगों की भलाई के लिये कार्य कर रहे हैं। अर्थात् उस लोक में भी कार्य-क्षमता है। इस लोक में जैसे अपराधियों को दण्ड भोगने के पश्चात् साधारण व्यवसाय करने की आज्ञा दी जाती है, उसी भाँति परलोक में भी व्यवस्था है। नरकादि का अभाव है, ऐसा इस शास्त्र का सिद्धान्त नहीं है। अन्तर केवल इतना ही है कि नरक में शाश्वत निवास करना पड़ा है; इस बात का समर्थन परलोकगत आत्माओं के संदेशों से नहीं होता। स्वर्गादि स्थान में

निवास का भी यह ही हाल है। नरकगामी आत्माओं के उद्धार के वास्ते उच्च श्रेणी की व्यक्तियां प्रयत्न करती हैं। उस कार्य में उनको बड़ी प्रसन्नता होती है। एक आंग्ल परलोकगत आत्मा ने कहा है "The greatest joy of heaven is emptying hell." पूर्वग्रन्थों के वर्णन में और परलोकगत आत्माओं के किये हुए वर्णन में फरक होने का कारण कुछ जाहिर नहीं होता। प्रत्यक्ष प्रमाण अधिक विश्वासनीय मानना चाहिये। कई विद्वान अंध श्रद्धा से पुराण ग्रन्थों पर अतिशय विश्वास रखने के कारण प्रत्यक्ष अनुभव में संशय रखते हैं और इसको असत्य भी समझते हैं। पुरातन ग्रन्थों का यह हाल है कि उनमें परस्पर विरोध बहुत हैं। "नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्" इस बचन के अनुसार कौन सा ग्रन्थ प्रमाणिक मानना चाहिये यह भी नहीं कहा जा सकता। यदि सनातनधर्म के ही ग्रन्थ विश्वासनीय मानें तो यवनादि अन्य जातियों का समाधान होना असम्भव है। इसलिए प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानना आवश्यक तथा उचित होगा।

कुछ लोग यह समझते हैं कि मृत आत्माओं का आह्वान करना ऊचित नहीं है। यह विचार शायद इस लिये होता है कि उन्हें यह नहीं मालूम कि मरने के बाद मनुष्य किस अवस्था में रहता है। परलोक विद्या के सम्बन्ध की अब तक जो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनमें ऐसा कहीं नहीं लिखा कि मृत आत्माओं का आवाहन नहीं करना चाहिये। इसके विपरीत परलोकगत

आत्माएं हम से मिलने के लिये, बातचीत करने के लिये बड़ी लालायित रहती हैं। और जब हम उनकी उपेक्षा करते हैं अथवा उनसे असहयोग करते हैं तो उन्हें बड़ी निराशा होती है। इसके विपरीत यदि आत्माओं का सम्बन्ध अपने आत्मीय जन या उन लोगों से हो जाय जिनसे उन्हें अत्यन्त प्रेम है तो उन्हें अपने परलोक जीवन में बहुत कुछ सहायता मिलती है। इसलिये यह प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अपनी सम्बन्धी आत्माओं की उनके उद्योग में सहायता करें। एक आत्मा ने अपने संदेश में यह स्पष्ट लिखा है कि यदि आप हम से इस प्रकार बातें करने का मार्ग नहीं निकालते तो हमें मन मारकर चुपचाप बैठे रहना पड़ता।

## भविष्य ज्ञान

आत्माओं को भविष्य का ज्ञान है या नहीं, वे किसी का भविष्य बता सकती हैं या नहीं यह एक जटिल प्रश्न है। कुछ लोग आत्माओं से केवल इसीलिये वर्त्तालाप करते हैं कि आत्माएं उन्हें भविष्य की बातें बता दें। ऐसे प्रश्नों का उत्तर कभी कभी कोई ऊंची आत्मा जो किसी अवसर पर आजाती है, दे देती है। परन्तु, कुछ आत्माएं ऐसे प्रश्नों का अटकलपच्चू जवाब भी दे देती है जो बिलकुल गलत होते हैं। परन्तु परलोक सम्बन्धी अन्य पुस्तकों में कई स्थानों पर ऐसा लिखा देखा गया है कि आत्माओं ने जो भविष्य वाणियां की, वे आश्चर्य जनक रूप से सत्य प्रमाणित हुई हैं। इस लिये इस प्रश्न को स्थिर चित्त से अनुभव करते

रहना चाहिये। भविष्य बताने में आत्मा की अज्ञानता की कठिनाई ही नहीं है, परन्तु संदेश देने की कठिनाई तथा अन्य अनियमित बातें भी हैं। एक बार स्वामी रामतीर्थ जी की आत्मा से इस सम्बन्ध में पूछा गया तो उन्होंने अपने संदेश में कहा—आप को मालूम है कि आत्माएं अपने सांसारिक स्वरूप में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं करती— उनकी जो सीमाएं संसार में हैं वे ही प्रायः मरने पर भी रहती हैं। वे एक दम सीमा का उलंघन नहीं कर सकती। यदि उनकी शक्ति में भविष्य जानना होता तो बड़ा ही भयावना होता; अर्थात् संसार की आन्तरिक वाह्य शान्ति बिल्कुल भंग हो जाती। हमारा भविष्य अपने हाथ में है। यदि आप अपने को कुत्ता समझने लग जायं तो आप कुत्ते हो जायंगे। संसार की जीवन सम्बन्धी बातें केवल भौतिक शरीर त्याग कर देने से ही मालूम नहीं हो जायंगी, बल्कि उसके लिये बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। परन्तु स्मरण रखो, वे साधारण बातें बता सकती है। आत्माएं उच्चत्तम बातों के सम्बन्ध में अधिक नहीं जानती। उदाहरण के लिये आत्माओं को अपने पूर्व जन्म का ज्ञान नहीं रहता–वे नहीं बता सकतीं कि संसार का क्या उद्देश्य है। एक बार एक आत्मा से ये प्रश्न किये गये तो उसने उत्तर में लिखा कि मैं इन समस्याओं को बिल्कुल नहीं समझ सकता। आत्माएं यह तो कहती हैं कि सब चीजों का कारण ईश्वर है और उसका अस्तित्व है, परन्तु अभी तक यह किसी भी आत्मा

ने नहीं कहा कि मुझे ईश्वर के दर्शन हुए हैं। हां वे ईश्वर के दर्शन करने की इच्छुक अन्तःकारण से रहती हैं। नास्तिक को नास्तिकता के कारण दण्ड नहीं मिलता, परन्तु परलोक की बातों को देख कर तथा ऊंची आत्माओं के अनुभव सुनकर वह चक्कर में पड़ जाता है। परलोक का विस्तृत वर्णन अभी तक प्राप्त नहीं हो सका, इसलिये इस अज्ञात देश को साधारण बातों पर ही सन्तोष करना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें लिखी जा सकती है। जिन लोगों को परलोक वर्णन विषय का अधिक अनुभव प्राप्त करना हो वे मि० हूल ओवन की पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं। उन्हों ने २५ वर्ष तक अध्ययन करके बहुत ही रोचक ढंग से परलोक का वर्णन किया है।

## पुनर्जन्म

यहां पुनर्जन्म के सम्बन्ध में भी कुछ लिखना अप्रसंगिक न होगा। बहुत लोग परलोक विद्या के सिद्धान्त को पुनर्जन्म के सिद्धान्त से विपरीत समझते हैं। यह उनकी भूल है कुछ लोग गीता का यह प्रमाण देते हैं।

वासां स जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपरापि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि अन्यानि संयाति नवानि देही॥

अर्थात् जिस भांति मनुष्य पुराने वस्त्र को छोड़ कर नये वस्त्र धारण कर लेता है वैसे ही आत्मा इस शरीर को छोड़ कर नया शरीर धारण कर लेता है।

परन्तु यह उनकी भूल है कि मरने के बाद आत्मा का तुरन्त जन्म हो जाता है। इसलिये इस सम्बन्ध में जितनी जल्दी यह भ्रम दूर हो सके उतना ही उनके लिये तथा जिन्हें वे बहकाते हैं उनके लिये अच्छा है। ऐसे लोग यह नहीं समझते कि यदि आत्माओं का इतनी जल्दी पुनर्जन्म हो जाया करता तो श्राद्धतर्पण आदि का शास्त्रों में उल्लेख नहीं होता। इससे प्रकट होता है कि जिन ऋषियों ने श्राद्धतर्पण आदि का विधान बनाया था, उन्हें परलोक विषय का अधिक ज्ञान था इस लिये उन्होंने मनुष्य मात्र के लिये श्राद्ध, तर्पण आदि कर्मों का करना कर्त्तव्य निर्धारित कर दिया। पर लोक गत आत्माओं के समाचार न मिलने के कारण कुछ लोग यह समझने लग गये हैं कि यह श्राद्धतर्पण आदि केवल रूढ़ि है और कुछ लोग समझते हैं कि यह केवल पितृों को स्मरण करने का एक साधन मात्र है। कुछ लोग तो यहां तक कहने पर उतारू हो गये हैं कि ये केवल पोप और ब्राह्मणों की ठग बाजी है। पेट भरने के और माल उड़ाने के लिये उन्होंने यह प्रपंच रच रखा है।

यदि हम गीता को ही आधार मान कर इस विषय का विषनेषण करें तो मालूम हो जायगा कि भगवान श्री कृष्ण चन्द्र पर लोक के अस्तित्व से इन्कार नहीं करते। ऊपर जो श्लोक उद्धृत किया गया है उससे परलोक का असितत्व और भी अधिक दृढ़ता से प्रमाणित होता है। यदि हम उपर्युक्त श्लोक को गीता के दूसरे श्लोकों के साथ पढ़ें तो यह भ्रम सहज ही दूर हो सकता

है। देहकी और पुराने वस्त्र की उपर्युक्त श्लोक में जो उपमा दी गयी है, वह पूर्णोपमा नहीं है बल्कि दो वस्तुओं की तुलनात्मक उपमा है। श्लोक का वास्तविक अर्थ यह है कि जिस भांति मनुष्य पुराने वस्त्रों को फेंक कर नये वस्त्र पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा अपने एक शरीर को छोड़ कर दूसरा शरीर ग्रहण करती है। इस श्लोक से यह कहीं प्रकट नहीं होता कि आत्मा स्थूल शरीर के बिना किसी विलम्ब के ग्रहण कर लेती है। यदि हम इस प्रकार का आशय उपर्युक्त श्लोक का नहीं लगाते तो भगवान कृष्ण का गीता के अन्य श्लोकों का अर्थ परस्पर विरोधी सिद्ध होगा उदाहरण के लिये।

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालम् क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।

अर्थात् वे (आत्माएं) स्वर्गलोक का सुख भोगकर पुण्य क्षीण होने पर वे मृत्यु लोक में प्रवेश करती हैं।

जब परलोक का अस्तित्व स्वीकार कर लिया गया तो एक यह महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होता है कि आत्मा परलोक में कितने समय तक निवास करती है। इस सम्बन्ध में कोई निश्चित समय नहीं बताया जा सकता इसलिये इस विषय पर हठ नहीं किया जा सकता। पर लोक गत आत्माओं से जो संदेश प्राप्त हुए हैं उनसे यह प्रकट हुआ कि परलोक में रहने का समय आत्माओं के मनुष्य योनि और मरने के बाद के कर्मों पर अवलम्बित है, परन्तु एक बात स्थिरता पूर्वक कही

जाती है कि पर लोक गत आत्माएं संसार में आने के लिये इच्छा पूर्वक तैयार नहीं होतीं। आत्माएं या तो दण्ड स्वरूप मृत लोक में आती हैं, अथवा कोई ऐसा नया अनुभव करने आती हैं जो वहां नहीं हो सकता या किसी ऐसे विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिये आती हैं जिस से मानव जाति का कल्याण हो सके। इस सम्बन्ध में परलोक के जो विधान हैं वे बहुत ही जटिल हैं और प्रत्येक आत्मा का विचार उसके कर्मों के अनुसार किया जाता है। जब किसी आत्मा का मृत लोक में जन्म हो जाता है तो वह संदेश देने नहीं आती—इसका सूचना किसी दूसरी आत्मा से प्राप्त हो जाती है। कभी कभी ऐसे संदेश के अनुसार जन्म होते हुए मिले हैं जिससे आत्मा के संदेश की सत्यता प्रकट हो जाती है। मेरे अपने अनुभव में भी कुछ ऐसे संदेश आये हैं जो बिल्कुल सत्य प्रमाणित हुए।

परलोक गत आत्माओं में सब से प्राचीन आत्मा विजय नगर के राजा रामदेव की आयी थी जिसने अपना संदेश मुझे दिया था। ये महाराज तलिकोट की लड़ाई में सन् १४६५ में मारे गये थे। उनका संदेश संस्कृत में एक ऐसे व्यक्ति के द्वारा आया जो बहुत ही कम संस्कृत जानते थे। महाराज से हिन्दी में जो प्रश्न किये गये उनका उन्होंने बहुत महत्व पूर्ण उत्तर दिया। उनसे पूछा गया कि आप हमारी हिन्दी भाषा किस प्रकार समझ जाते है? उन्होंने उत्तर दिया कि मैं सूक्ष्म शरीर में हूं इसलिये आप के

मन के विचारों को समझ सकता हूं।" पाश्चात्य परलोक विद्या प्रेमियों ने चोन आफ आर्क और प्रसिद्ध चीनी धर्माचार्य कन्फ्यूस से भी बातें की हैं।

परलोक विद्या के मानने वाले प्रायः सभी लोग पुनर्जन्म मानते है क्योंकि उनके सामने पर लोक गत आत्माओं के संदेश हैं। हिन्दू धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म ग्रन्थों में प्रायः पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं किया गया, परन्तु वे उन ग्रन्थों को प्रमाण मानने की अपेक्षा उन संदेशों पर अधिक विश्वास करते हैं जो पर लोक गत आत्माओं से ही प्राप्त होते हैं। कभी कभी यह संदेश ऐसी आत्माओं के द्वारा आये हैं जो पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर विश्वास नहीं करते थे परन्तु पर लोक में जाकर उन्हें अपना मत बदलना पड़ा। उन्होंने कहा है कि यद्यपि हम पुनर्जन्म के सिद्धान्त को क्यामत के दिन के विपरीत मानते हैं, परन्तु वास्तविक बातों को देखकर हमें अपना मत बदलना पड़ा है।

---

# पांचवां अध्याय

## कुछ रोचक संदेश

भी कभो हमें अपने प्रयोगों में ऐसे रोचक संदेश प्राप्त होते हैं जिनसे परलोक सम्बन्धो बातों पर कुछ प्रकाश पड़ता है। इन प्रयोगों में कितने ही प्रयोग इण्डियन स्पिरिचुअलिस्टक सुसाइटी को ओर से किये गये हैं। ये संदेश प्रायः सब लोगों के लिये सिद्ध होंगे—इन में मरने के बाद जीवात्मा जिस स्थिति में रहता है। उसका वर्णन है। नीचे जो संदेश दिये जाते हैं, उनमें से कुछ आत्माओं के नाम देना इसलिये उचित नहीं जान पड़ता जिन लोगों की सम्बन्धी आत्माएं हैं, वे इसे पसन्द न करें।

### १—क्षमा शीलता

श्रीमती सुभद्रा बाई ने हमें क्षमा शीलता के विषय में निम्न-लिखित संदेश दिया है :—आप का यह भाव कि यदि कोई हमें

कष्ट दे तो हमें उससे बदला लेना चाहिये आप के दृष्टि कोण से ठीक है। मैं आप को ऐसा रखने के लिये दोषी नहीं ठहराती। परन्तु यदि मैं भी ऐसा ही भाव रखूं तो क्या सत्य लोक में रह सकती हूँ? कदापि नहीं। यदि मैं ऐसे नीच और दुष्टता के कर्म करूँ तो मेरा सारा आनन्द नष्ट हो जायगा और मुझे आप के संसार के चारों ओर मंडराना पड़ेगा। आपने तो बहुत सी पुस्तकें पढ़ी हैं, आप कर्मों का परिणाम भी जानते हैं परन्तु मैं आप को अपने अनुभव से कुछ कर्मों का फल लिखती हूँ। दो वर्ष पूर्व मेरी एक मित्र जब यहां आये तो वह बड़े उदास थे। उसने अपने जीवन में बहुत सा पुण्य कार्य्य भी किया था और बड़े धार्मिक थे। जब वे अपना काम कर चुकते तो वे अकेले में बैठ कर विचार करने लगते। थोड़े दिन के बाद वे प्रसन्न दिखाई पड़ने लगे। इस पर मैंने उनसे पहले की उदासी का कारण पूछा। वे बोले—मैं स्वयं तो बड़ा प्रसन्न था, परन्तु अपनी मृत्यु के बाद अपने सम्बन्धियों का आचरण मुझे बड़ा अप्रिय लगा उससे मुझे बड़ी चिढ़ हुई और मैं उनके प्रति घृणा करने लगा। इस लिये मैं उन्हें कष्ट देने का उपाय सोचने लगा।" इस प्रकार वह अपने सम्बन्धियों को कष्ट देने का निश्चय कर उन्हें समय समय पर देने लगा।

परन्तु इसका परिणाम क्या हुआ? परिणाम यह हुआ कि वह सब से नीचे के लोक में ढकेल दिया गया और वहां वह

कल्पनातीत रूप से दुखी रहने लगा। तो क्या मैं भी उसका अनुकरण करूँ ? आप ही बताइये। जो लोग बदला लेना चाहते हैं, उन्हें मृत्यु के बाद अवश्य दण्ड भोगने के लिये तैयार रहना चाहिये। इस संसार में दोनों प्रकार के मनुष्य रहते हैं। जिन लोगों में क्षमा शीलता के भाव हैं, उन्हें चाहिये कि वे दूसरों के अपमान जनक आचरण को बिना बदले का भाव लाये सहन कर लें। जिन लोगों को किसी के अपमान जनक व्यवहार से कष्ट नहीं पहुँचता वे स्वर्गीय सुख का अनुभव करते हैं। यह बात अवश्य है कि ऐसे उपदेशों को लोग कम सुनते हैं। क्षमा शीलता एक दैवी प्रसाद है इससे अधिक मुझे और कुछ नहीं कहना। फिर जिस का मन जैसा चाहे वह वैसा करे।

## २—पापों का दण्ड

पापों के दण्ड के सम्बन्ध में श्रीमती सुभद्रा देवी ने कहा—

परलोक का कानून यह है कि दण्ड देते समय जीव के पाप और पुण्य दोनों कर्मों का विचार कर लिया जाता है। हत्या या अन्य दुष्कर्मों के लिये कोई दूसरा दण्ड नहीं दिया जाता। यहां अपराधों के लिये दण्ड का विधान ऐसा है कि जीव को पाप का दण्ड भोगते समय, दण्ड ही भुगतना पड़ेगा; अर्थात् उतने समय तक वह अपने सुकर्मों का फल नहीं भोग सकता। एक बार दण्ड आरम्भ हो गया तो जीव के जितने पाप होंगे उन सब का दण्ड उसे भोगना पड़ेगा। दण्ड कितने ही प्रकार से दिया जाता है।

दण्ड की कितनी ही श्रेणियां हैं। जब जीव पापों का फल भोगता है तो उसे मृत्यु लोक में जन्म लेने की इच्छा होती है और जब वह पुण्य भोगता है तो उसे मृत्यु लोक से घृणा होती है।

साधारण वचन भंग करने आदि अपराधों के लिये अलग दण्ड विधान नहीं है। मनुष्य को उसके सब कर्मों का विचार करके दण्ड दिया जाता है। यदि उसके जीवन में पुण्य का मात्रा अधिक है तो उसका विचार पृथक रूप से किया जायगा। कुछ लोग अपने पुण्यों का फल पहले भोग लेना चाहते हैं और कुछ पापों का दण्ड पहले इस लिये भोग लेना चाहते हैं कि उनका पाप अल्प मात्रा में है। परन्तु पाप पुण्य के भोग की पसन्दगी सब को नहीं मिलती यह पसन्दगी केवल उन्हीं धर्मात्माओं को ही मिलती है जिनके जीवन में नाम मात्र का पाप हुआ हो। साधारण लोगों के विषय में उनके सब कर्मों का विचार एक साथ किया जाता है। पर लोक में आने वाले आदमी तीन श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। एक वे जो अच्छे हैं (२) और तीसरे बुरे। जो सब से अधिक पापी होते हैं उन्हें निकृष्ट अथवा बुरी श्रेणी में समझना चाहिये।

प्राणियों की इच्छानुसार काम नहीं किया जाता है—सामान्यतः लोग मध्यम श्रेणी में रखे जाते हैं। एक दूसरी आत्मा से विचार करने के बाद मैं इस विषयएक उदाहरण दूंगी—

३. एक आत्मा के जाति धर्म तथा उच्च कर्मादिक के विषय में विचार—

एक प्रयोग में एक आत्मा जिस का नाम " डी " है उसके साथ बातचीत करके हमको बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ था। उससे हमको अपनी धार्मिक व्यवस्था का बहुत अमूल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था। मृत्यु लोक में जब वह था तब वह बहुत ही ईश्वरी आज्ञा का पालन करने वाला पुरुष था। धन की लालच उसको ज़रा नहीं थी—उसने बात चीत करते हुए बहुत सी ऐसी महत्व की बातें कहीं जिससे हमको इस संसार में कैसे चलना चाहिये उसका बहुत सा बोध होगया—उसने कहा "कि मैं बहुत बेचैन रहता हूं काहे से कि मैंने कोई पुण्य कर्म अपने जीवन में नहीं किया था—अब यहाँ रह कर मुझको कुछ करना चाहिये—

प्रश्न—पुण्य कर्म से तुम्हारा क्या मतलब है ? आत्मा उत्तर देती है—" अब मैं तुमको बतलाता हूं कि हम पुण्य कर्म किस को कहते हैं। संसार में लोग ऐसा समझते हैं कि जप-तप-दान पुण्य यात्रा आदि सब स्वर्गीय सुख के मूल कारण हैं परन्तु ऐसा नहीं है। तथापि ये जो कुछ हो उसको ऐसा ही छोड़ो—मैंने किसी जीव के संतोषार्थ कुछ नहीं किया था। जो कुछ मेरे करने का धर्म था वह भी मैंने इस प्रकार नहीं किया था जिससे मेरा ही पूर्णतः संतोष हो गया होता—नौकरी चाकरी यही एक धर्म नहीं था—

केवल जप-तप-दान धर्मादि से ही स्वर्ग में उच्च पद प्राप्त नहीं होता है—जो संसारिक विषयों में लिप्त हो रहे हैं उनके लिये जप तप दान पुण्य इत्यादि ऊपर चलने के रास्ते बता दिये गये हैं—हम को चाहिये कि हम लोग प्राण संयम करके ईश्वर को ढूंढने की कोशिश करें—

और यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि हमारा जन्म मरण सब ईश्वर के हाथ में है प्राणी मात्र को प्यार करना यह एक असली शुद्धाचरण है। ब्राह्मणों को तो भोजन कराना और अछूतादिकों को न खिलाना यह पुण्य का आचरण नहीं है। सब में एक सद्भाव रखना चाहिये। यह बात बहुत जरुरी है—

प्रश्न—यह बात तो कोई महत्व की नहीं है यह तो एक गोल और साधारण कहावत है। आप कृपा कर के इस बात को और अच्छी तरह से साफ साफ कह सकेंगे? आत्मा उत्तर देती है कि "जिस कारण से मुझ को यहाँ दुख भोगना पड़ा है वही कारण है जिस से मुझे कहना पड़ा है कि केवल धार्मिक आचार विचारों से ही परमेश्वर नहीं मिलते हैं। और तरह से यदि कहा जाय तो ऐसा समझ लीजिये कि परोपकार और सद्भाव यही एक उत्तम पथ आगे जाने का है"—

४ एक आत्मा की दिनचर्या के विषय में—

एक प्रयोग में आत्मा "अ" जो एक कारापोरकर नाम के पुरुष का सम्बन्धी होता है अपनी दिनचर्या का एक मनोहर

वृत्तान्त देने लगा—उसने कहा कि यहां मैं अपना समय बहुत आनन्द से काटता हूं। मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं है। यहां मैं बहुत ही प्रसन्न रहता हूं। मैं मृत्युलोक में तो बहुत खटपट में रहा करता था अब तो मुझे उससे घृणा होती है यहां भी बहुत से मनुष्य बराबर काम काज में लगे ही रहते है मेरी समझ में नहीं आता है कि यहाँ रह कर भी वे क्या काम किया करते होंगे। ऐसा मालुम होता है कि मृत्युलोक में रहकर उनको उतना समय नहीं मिला था जिस में वे लोग अपनी मनोवृत्ति को पूरी तरह से काम में लाकर दिखाते।

यहाँ एक बगीचे के एक कोने में एक पानी का झरना है उसके चारों तरफ वृक्ष लगे हुये हैं वह बेल पत्तों से आच्छादित है मेरे विचार से यही स्वर्गीय सुख है मुझे और किसी वस्तु की इच्छा नहीं होती—मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि हे ईश्वर मुझे इस सुख से कभी विमुख मत करना–मुझे आशा है कि वे मुझ से कभी क्रोधित नहीं होंगे--

## ५ पति के प्रति एक पत्नी की चिंता

एक प्रयोग के समय बात चीत करते हुये एक मिस्टर "के" की स्त्री आत्मा जो एक हमारे मित्र-वर्ग में से हैं कहने लगी कि मुझे अपने पति को बहुत ही चिन्ता लगी रहती है। तब हमने उन से कहा कि क्या आप कृपा करके कुछ समाचार लिख देंगी तो

वे बोलीं कि "आज तुम ने यहां निवास किया है यह बहुत अच्छा किया है। मेरी आप से बात चीत करने की बहुत इच्छा है परन्तु मौका नहीं मिलता है कि आप से बात।चीत हो जाय—आजकल आप इतने उदास क्यों रहते हैं—आत्मा से और बहुत सी बातें पूंछी गयी परन्तु उसने उत्तर देने से इनकार किया। शायद इसी कारण से कि इस समय सीएन्स में और भी बाहर के सज्जन उपस्थित थे। यह आत्मा स्वयम् मिस्टर "K" के की स्त्री ही थी इस विषय की पुष्टता के बहुत से समाधान दिये और यह भी बताया कि उनके कितने भाई थे कितनी बेहनें थीं यह सब उत्तर एक ऐसे मध्यस्थ के द्वारा मिले थे जो इन बातों से बिलकुल अभिज्ञ न था—आत्मा ने कहा कि मैं विचार में पड़ी हूं कि मैं लिख कर बताऊं अथवा चुप रहूं सत्य तो यही है कि मैं यहां आई थी केवल आप से बातचीत करने के लिये पर अब मैं आप को विशेष कष्ट देना नहीं चाहती कृपा करके फिर किसी मौके पर आकर के बात चीत कीजिये-थोड़ी देर में जब बाहर के आये हुए सज्जन चले गये तब वह आत्मा कहने लगी कि मुझसे आप का दुख देखा नहीं जाता। मुझे खास इसी लिये आप के वास्ते ज्यादा दुख होता है कि अब आप की संभाल तथा फिकर करने वाला कोई नहीं है यह बात ठीक है ना ? आप भी ऐसा ही समझते हैं ना या आप अपने विचारों को कुछ अपने मन में छिपाते हैं—मैंने इतना नहीं जाना था कि आप को मेरी इतनी चिन्ता होगी—मेरी इतनी

चिन्ता मत कीजिये और अपने बाल बच्चों को संभालिये—ज्यादे साफ साफ कहने में मुझे लज्जा आती है मुझ से आप की यह आपत्ति देखी नहीं जाती आप को प्रसन्न चित्त देख के मुझे आनन्द होता है अब एक पारसी आत्मा आ गई हैं और मुझे जो कुछ कहना है सो मैं आप से स्वप्न में कहूंगी।

## ९. परलोक के मंदिरों के विषय में—

मिस्टर ऐयर की बात चीत उनके एक सम्बन्धी मिस्टर दोरा स्वामी की आत्मा से हुई—आत्मा ने परलोक की एक विचित्र और बहुत अद्भुत कथा सुनाई और कहा कि शायद तुम्हारी इच्छा जानने की है कि यहां के मंदिर आदि कैसे होते होंगे-जैसे तुम्हारे वहाँ के वैसे ही यहां के होते हैं। फरक इतना होता है कि तुम्हारे संसार की तरह यहां सब धूम धाम झाड़ फानूस पड़दे तरह तरह के वस्त्र आभूषण इत्यादि नहीं होते हैं और सब बातें एक सी होती हैं। क्योंकि एक ढंग के मंदिर यहां बहुत थोड़े होते हैं। हम सब एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं एक ही को सब मानते हैं दूसरा देव कोई नहीं माना जाता। इसी कारण से यहां हम लोगों में कुछ फरक नहीं होता—मुंह देखने के आइने में जिसके पीछे पारा चढ़ा होता है कोई अपना मुंह देख तो उसको उसकी मूर्ति जरूर नजर पड़ेगी लेकिन उसके पीछे क्या है सो नजर नहीं आवेगा। किसी को यह देखने की इच्छा हो कि इसकी पीठ पर क्या है तो वह उसके पारे को हटा कर कांच में आर

पार देखले। तब उसको सब साफ़ नज़र आ जायगा इसी तरह मृत्युलोक के जीव उस आइने में देखते हैं जो किसी विद्वान ने उनकी भेट कर दिया है। इसी कारण से पृथक् पृथक् जातियां और मत मतान्तर बन गये हैं–हैं सब सत्य और ठीक–कोई किसी रास्ते जाय, पर पहुँचते हैं सब वहीं—जो कोई उसके भीतर घुसता नहीं है और अच्छी तरह विचार नहीं करता वह कुछ जान नहीं पाता और दूसरे लोग जो शिक्षा उसको देते हैं वह सुनता भी नहीं—एक ज्ञान वान आदमी जो जानता है कि आइने के पीछे पारा चढ़ा हुआ है वह उसको हँस करके तुच्छ करके कह देगा कि यह तो पारे का कारण है--माया से यह पृथ्वी माता ढकी हुई है और तुम सब अन्धे हो रहे हो और नहीं जानते कि उसके पीछे क्या है। Parshoti Lal

इस लिये मैंने यह उत्तर दिया है कि मिस्टर ऋषि को ज्ञात हो जाय जब समय आवेगा तब उनको सब हाल मालुम हो जायगा। जैसा निस्प्रह कार्य वे कर रहे हैं उससे यहां की सब आत्मा उनसे बहुत प्रसन्न रहती हैं और हम सब लोग सदा उनकी जय मनाते हैं–ईश्वर उनका कल्याण करे—

प्रश्न—क्या आप कृपा करके अपनी दिनचर्या के विषय में कुछ और समाचार हम को देंगे ? उत्तर–हां–देखो उस रोज मैंने अपनी बैठक बन्द रखी थी और मंदिर को गया था जो रोज सवेरे पहला काम करना होता है उसको ठाकुर सेवा कहते हैं। इस

काम का कोई खास समय या घंटा बांधा हुआ तो नहीं है परन्तु हम सब लोग एक ही कायदे से चलते हैं और उसको बराबर निबाहते हैं—दूसरा काम हमारा है गुरुजी के पास जाना, सत्य बोलना सीखना, दूसरी बुद्धि की बातें सुनना और फिर मंदिर को जाना, वहां जब तक चित्त लगे बैठना। प्रभू की प्रार्थना करना—तदुपरान्त कुछ थोड़ा सा फलाहार करना—हम लोग अग्नि से कुछ धरांने या तलने को बड़ा पाप समझते हैं—इससे अग्नि अपवित्र हो जाती है—तदुपरान्त विद्वान पुरुषों से बातचीत करना और जो लोग पढ़े लिखे नहीं होते वे चुपचाप सुना करते हैं—इसके बाद हम को घर आने की आज्ञा हो जाती है—

और फिर जहां जिसकी खुशी में आवे घूमे फिरे। अपने मित्र बांधवों से मिलने जाय—संध्या समय मृत्यु लोक में अपने पुराने सगे सम्बन्धियों से यदि किसी तरह बात चीत हो सकती हो तो कुछ समय उनके साथ आनन्द की वार्ता में बितावे जैसे मृत्यु लोक के जीव परलोक वासियों से बात चीत करने की इच्छा किया करते हैं वैसे ही परलोक वासी भी उत्सुक रहते हैं कि घड़ी भर उनकी क्षेम कुशल पूछ कर मन को प्रसन्न करें—दूसरे दूर दूर के लोकों से आत्माएं बात चीत करने को बहुत खुशी होते हैं और यदि मौका न मिला तो बहुत उदास और दुखी होकर अपने अपने निवास स्थान तथा लोकों को निराश हो कर वापिस चले जाते हैं—

हमेशा जब हम को कहीं जाना होता है तब आज्ञा लेकर जाते हैं और कोई गुप्त रीति की बात करने के लिये गुरुजी की खास आज्ञा लेनी पड़ती है—जब आज्ञा मिल जाती है तब वह पक्की आज्ञा होती है। फिर कोई कुछ नहीं कह सकता किसी तरह की टीका फिर हो नहीं सकती—

## ७. यात्रा तथा श्राद्धादिक के विषय में एक आत्मा के विचार—

एक सीएन्स करते हुये हमने दोरा स्वामी की आत्मा से यात्रादिक के फल तथा योग्यता तथा आवश्यकता के विषय में पूछा था तो उसने कहा कि यात्रा करने को जाने की कोई अवश्यकता नहीं है अथवा जो लोग अपने को ब्राह्मणों के नाम से प्रख्यात करते हैं उनको भी खिलाने पिलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। बिचारे गरीबों की सहायता करो वस्त्रादिक से उनका पोषण करो पात्र कुपात्र का विचार करते हुये—बिना विचारे हुये अयोग्य दान एक बड़ी भूल है और उससे उलटी बुराई निकलती है—परन्तु इस मृत्युलोक में लोग आंख मीचे एक ढर्रे पर चले जाते हैं—

यह बात नहीं है कि संसार सब एक समान है अथवा एक रीति का बंधा हुआ है परन्तु आदमियों ने अपना मन एक तरह का बना रखा है। इसलिये वे यह जानते हैं कि सब संसार एक ही रीति का बांधा हुआ है—जिस आदमी ने इस सांसारिक जीवन

को अच्छी तरह समझ लिया है उसके लिये मूर्ति पूजन की, यात्रा की तथा दान पुण्य की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती--

प्रश्न—अब कहिये श्राद्धादिक के महत्व की बाबत आप का क्या विचार है—

उत्तर—आत्मा ने कहा कि "इसका महत्व और आवश्यकता तभी तक है कि जब तक तुम यह बात नहीं समझते हो कि ये क्यों करना चाहिये–ये सब कर्म का बंधन है और प्रत्येक जीव को इस मृत्युलोक में कर्मानुसार चलना चाहिये। तब तक कर्म कते रहना चाहिये जब तक वह पुरुष ज्ञान के तत्व को अच्छी तरह से न समझ जाय–तब तक कर्म बंधन को छोड़ देना महापाप है।"

इस विषय में लाहोर में एक बड़े कट्टर आर्य समाजी के घर पर एक प्रयोग हुआ था–उसका एक पुत्र जो स्वर्ग वासी हो चुका था उसकी आत्मा से बात चीत हुई थी तो उसकी आत्मा ने कहा कि स्वर्ग लोक के लोगों के विचारों में इस विपय पर बहुत मत भेद है कि श्राद्धादिक करना अथवा न करना चाहिये। कुछ लोगों ने कहा कि जरूर करना चाहिये तो कुछ लोगों की राय हुई कि न करना चाहिये। आत्माओं का आशय पाया गया कि यह विषय विचारणीय है–इस विषय पर कोई मर्यादा या पक्का कायदा बांधा नहीं जा सकता—

## ८. स्वर्ग में उच्च पद प्राप्त करने का उपाय—

यहां हमारी सोसाइटी के एक सभासद मिस्टर आचार्य हैं उनके एक सम्बन्धी राघवेन्द्राचार्य की आत्मा ने हम को एक बहुत ही उपयोगी समाचार दिया था उन्होंने कहा कि जब वे इस संसार में वर्तमान थे तब वे एक परम वैश्नव ब्राह्मण का जीवन निर्वाह करते थे—सनातन-धर्मी होते हुए भी उन्होंने धर्म के आचार विचार तथा सामाजिक भेद-अभेद पर कभी ज्यादे ज़ोर नहीं दिया। उनके सब विचार खुले मन के सामाजिक सुधार के थे। इसी कारण से वे हमेशा मन और कर्म की उदारता और पवित्रता की शिक्षा दिया करते थे और कहा करते थे कि ये ही स्वर्गीय उच्चता की कुंजी है—

उनके व्याख्यान बड़े महत्व के हैं। उसका कारण यही समझ में आता है कि स्वर्ग में रहकर के आत्मा के विचार एक दम उदार हो जाते हैं—श्राद्धादिक कर्म-कांड की आवश्यकता के वे पक्षपाती नहीं थे और यह सिद्ध रूप से कहते थे कि जो पुरुष कर्म-कांड करता है ये श्राद्धादिक केवल उसी के कल्याणकारी होते हैं—

यहां सात लोक ( स्वर्ग ) गिने जाते हैं यदि इनके और भाग किये जांय तो बहुत से हो सकते हैं—

## ९. संवत्सर तथा नये वर्ष के दिन के उत्सव की तैय्यारी तथा स्वर्ग लोक में धूम धाम

स्वर्ग लोक तथा मृत्युलोक दोनों को पृथक् पृथक् दरसाते हुए

सुभद्रा बाई ने एक अद्भुत रोचक वृत्तान्त सुनाया था। उन्हों ने कहा कि आज हिन्दुओं का संवत्सर का दिवस है ; इसके निमित्त हमारे लोक में बहुत धूम-धाम हो रही है। हमारे उतावले वाँचक-गण एक दम इसमें से यह मतलब निकाल लेंगे कि ये सब समाचार हमारे मन की गढ़न्त तथा गपोड़े हैं और वे लोग मेरी इस बात का विश्वास नहीं करेंगे कि लेखक के ध्यान में यह विचित्र कथा नहीं आई थी और न उसका विचार ही उठा था। जिस समय ये समाचार सुभद्राबाई ने हमसे कहे थे उस समय वे बड़ी जल्दी में थी—उन्होंने कहा कि उस धूमधाम में शामिल होने के लिये उनको बहुत सी तय्यारियां करने को थी।

## १०. मरण समय के कुछ अनुभवों का वर्णन—

मिस्टर सुरवे हमारी सोसाइटी के एक सभासद हैं। उनको स्त्री सुशीला बाई को मरे हुई कुछ थोड़ा समय हुआ है। उनकी आत्मा ने अपने मरने के समय का अनुभव हम से कहा है—वह कहती हैं कि जिस समय मेरे प्राण निकलते थे उस समय "ईश्वर के दो दूत जिनकी शकल अपने आदमियों जैसी थी मेरे सामने आकर उपस्थित हुए। वह मुझे ले गये—उस समय तक मैं सांसारिक रोग पीडा से ग्रसित हो रही थी पर तब वह सब न जाने कहां चली गयी और मैं भली चंगी हो गयी और मुझ को बड़ी खुशी होने लगी मानो मैं कहीं प्रदेश यात्रा को जारही थी—मुझ को पहले तो सब नया नया नजर आने लगा। उसको देखकर मैं

कुछ घबरा गयी। वहां के नये मनुष्य, नये स्थान, नये राग रंग देखकर थोड़ी देर तक कुछ व्याकुल सी हुई। परन्तु कुछ काल के पीछे मुझे इस मृत्युलोक की पिछली बातें याद आने लगीं और ऐसी कुछ भ्रान्ति सी जैसी स्वप्न में होती है होने लगी। अब मुझे कुछ भी मालुम नहीं होता है। संसार खेल तमाशे के सदृश मालुम पड़ता है।"

## ११. परलोक संसार के सुख भोग का थोड़ा वर्णन

आत्माओं ने ऐसा वर्णन किया है कि परलोक संसार के सुख भोग इस मृत्युलोक से कहीं बढ़ कर हैं। वहां का यह सब चमत्कार हमारी बुद्धि में कैसे समा सकता है इस विषय के समाचार हम आत्माओं से अकसर पूछा करते हैं—हमारी एक-सीएन्स में एक आत्मा ने परलोक धाम की बहुत ही रोचक कथा सुनाई थी—उसने कहा कि "मृत्युलोक में जब कोई बाजीगर अथवा जादूगर अपना तमाशा करता है उस समय वह अपने पिटारे में से बहुत से रुपये बाहर निकाल करके फैला देता है। लोग कहते हैं कि यह खिलाड़ी तो बड़ा धनी मालूम होता है क्योंकि जितने रुपये कहो उतने निकाल कर रख देता है परन्तु जब उसका खेल पूरा हो जाता है तब लोगों से पैसा पैसा मांगता फिरता है। तो क्या समझते हो कि वह सचमुच हो इतने रुपये बना लेता है ? यदि ऐसा ही हो तो फिर पीछे से लोगों से भीख क्यों मांगता है। ऐसा ही हिसाब इस मृत्युलोक संसार का है।

यहां के सुख भोग सब मृगतृष्णा की तरह झूठे हैं; आदमी को निराशा में रखने वाले हैं—मरण पश्चात लोग परलोक संसार में लिप्त होने लग जाते हैं और यहां आकर बहुत ही सुख मानने लगते हैं।"

## १२. आत्म-घात करने पश्चात आत्मा को परलोक में जो अनुभव होता है उसका कुछ वर्णन—

एकसीएन्स करते हुए एक आत्मा आई जिसने यहां इस लोक में आत्म घात किया था। मरण पश्चात परलोक में जाकर उसे जो अनुभव हुआ उसके विषय में वह कहने लगा कि मुझ को मिस्टर जी ने खास करके बुलाया है। उसने अपना वही पुरुष होना बहुत से प्रमाण देकर सिद्ध कर दिया। अपने मरने का सन् संवत ठीक ठीक बतला दिया और बहुत से पुरुषों के नाम भी बतला दिये जो मध्यस्थ को मालूम भी नहीं थे—उसने कहा कि अब मैं बहुत प्रसन्न रहता हूं। पर इसके पहले कुछ बरसों तक संसार में दुष्कर्म करने और आत्मघात करने के कारण मैंने यहां बहुत दुःख भोग किया था। इतने बरसों तक मैंने पूर्ण नरक यातना का भोग भोग लिया है। यहां आकरके—प्रत्येक मनुष्य से मैं यह बात सत्य सत्य कह दूंगा कि चाहे जो कुछ हो जाय परन्तु आत्मघात कभी मत करना—जो कुछ दुख तुम्हारे ऊपर आपड़े उसे सह लेना पर किसी प्राणी के निमित्त अपना

आत्मघात मत करना। मृत्युलोक में मार-पीट जैसा घोर दुख जेल-खाने में रह करके और पुलिस बंधन में दिया जाता है वैसा ही दुख मुझ को यहां बहुत दिनों तक दिया गया था। जब जीव को मार पीट तथा और सब दुखदायी त्रास बहुत दिनों तक दिये जाते हैं तो उसके शरीर में जलन तथा ऐसी पीड़ा हुआ करती है मानों उसको लोग चिमटे से नोचते खसोटते हैं। अपने महान दुख के अनुभव का वर्णन मैं इसीलिये तुम सब से कहे देता हूं कि मेरी अन्तःकरण से यह इच्छा है कि जैसे दुख मुझे भोगने पड़े हैं वैसे दूसरे किसी को न भोगने पड़ें। मैं स्पष्ट रूप से कहे देता हूं कि कोई मेरे दुश्मन का दुश्मन भी हो वह भी आत्मघात कभी न करे। मैं मृत्युलोक के पास के लोक में रखा गया था। वहां जो जप तप प्रायश्चितादिक मुझ से कर वाये गये उसके कारण से और गुरू जी की कृपा तथा आशीर्वाद से अब मैं सुख से दिन काटता हूं। जो दुख मुझे दिये जाते थे उनको मैं सह नहीं सकता था और रोज प्रार्थनाएं किया करता था। उस पर विचार होकर के मुझ पर कुछ दया करने की आज्ञा हो गयी। कृपया इस समाचार को सब लोगों के पठनार्थ छापे में छपा देना, जिससे सब को खबर हो जाय और संसार का भला हो। मेरे जैसे जाति-च्युत गिरे हुये दुष्ट को आपने दया करके याद किया है इसका मैं आप को बहुत धन्य वाद देता हूँ—त्रास की शिक्षा जो यहां दी जाती है वह वही है जिसको आप नरक कहते हैं।

## १३. एक विदुषी स्त्री के पारलौकिक कुछ अनुभवों का वर्णन-

मरण पश्चात जीव एक ऐसे उत्तम देश में प्रवेश करता है जिस देश का सब कार्य न्याय मर्यादा से होता है। वह इस मृत्यु-लोक से बिलकुल भिन्न तथा विचित्र गति का है। वहाँ के सब लोग अपने गुरू की आज्ञा तथा मर्यादाओं को बड़े आनन्द के साथ शिरोधार्य करते हैं। वहाँ के गुरू जी अपनी प्रजा का लालन पालन बड़े प्रेम से करते हैं-कलकत्ते के एक नामांकित सद्गृहस्थ की स्त्री की आत्मा ने इस विषय की पुष्टि करते हुये अपने स्वर्ग के अनुभवों का कुछ परिचय दिया-उसने कहा कि " मैं बराबर आत्म संमय करती हूं-प्रातः स्नान करके पजा सेवा करती हूँ और धार्मिक शास्त्र की पुस्तकें पढ़ा करती हूँ। मैं जब मृत्युलोक में थी तब मैंने ऐसा धार्मिक जीवन कभी नहीं बिताया था यहाँ ईश्वर के एक प्रबन्ध कर्ता ने मुझ को आज्ञा देकर यह सब मुझ से कर वाया है-मैं यहां बहुत ही प्रसन्न रहती हूँ। थोड़े दिन तक दूसरे किसी लोक में जाने की मुझे आज्ञा नहीं है"—

## १४. वयोमान और मध्यस्थ ( जिसके द्वारा परलोक से बातचीत हो सके )

मध्यस्थ की डयूटी जिसको उसके कार्य क्रम का ज्ञान तथा धर्म कहते हैं अभी तक तो बहुत ही अल्प रूप से सुन्ने में आया

है। मध्यस्थ कैसा मनुष्य हो सकता है उसके बाहरी शारीरिक चिन्ह तथा कोई उस की योग्यता के और कोई लक्षण जिससे उसको पहले से पहचान लिया जाय ऐसी जानने में नहीं आए हैं–इस योग्यता का आधार न तो किसी खास अवस्था पर निर्भर है और न किसी खास स्त्री पर अथवा पुरुष पर—साधारणतः पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में ऐसी योग्यता ज्यादे देखने में आती है–हमारे सीएन्स में एक मिस्टर जे० ई० सकलट वाला को उसके स्वर्ग वासी पुत्र की आत्मा ने एक समाचार दिया था—उपरोक्त सज्जन एक वृद्ध अवस्था के सद्‌हस्थ हैं आखों से कम नजर पड़ता है शरीर की ये सब अशक्तियां होते हुये भी वह अपने हाथ से जो कुछ उनका पुत्र कहता गया लिखते चले गये—दो तीन दफ़े पेहले जब बात चीत करने का काम पड़ा था तब उनसे एक लाइन भी नहीं लिखी गयी थी। परन्तु इस दफे तो आत्मा ने उनके हाथ को ऐसी मजबूती से पकड़ लिया था कि वे बराबर लिखते चले गये मानो कोई दैवी शक्ति उनसे काम करवा रही थी–उनकी पुत्री के द्वारा भी जो उस बैठक में बैठी थी उस आत्मा ने बातचीत करने की इच्छा प्रगट की थी पर उसके हाथ से लिखा ही नहीं गया–शायद उसको यह काम पहले ही पहले पड़ा था। इसी लिये वे लिख नहीं सकी थीं–सर ए० कोनान डोयल ने लिखा है कि प्रत्येक स्त्री अपूर्ण मध्यस्थ होती है। उसको चाहिये कि वह इस तरह से अभ्यास करके ओटोमेटिक राइटिंग की

पूर्णता को प्राप्त करले–यदि वह इस तरह अभ्यास में लगी रहेगी तो निश्चय उसको सफलता प्राप्त हो जायगी—

## १५. एक स्वर्गवासी पुत्र की आत्मा घड़ी में चाभी भरती है—

हमारे परलोक वासी आत्माओं के काम करने के ढंग और अपने सगे सम्बन्धियों को मदत पहुंचाने के मार्ग यथार्थ में अति गुप्त और गूढ़ हैं–जहां तक हम जानते हैं हमारे सांसारिक नियमों से उनका कुछ भी पता नहीं लगता है। इसी कारण से बहुत से ईश्वरी कामों को जो अपने आप होते रहते हैं सुन करके तथा देख करके अति ही आश्चर्य होता है–एक मिस्टर एस० जी अपने पुत्र के स्वर्गवास हो जाने से बहुत ही दुखी थे आये और अपने पुत्र की आत्मा के साथ बहुत सी बात चीत करते रहे–उन्होंने मुझ से एक अद्भुत लीला का वर्णन किया जो उनके घर में उनकी आखों के सामने हुई थी–एक रोज रात को ९ बजे उनकी क्लाक ( घडी ) चलते चलते बन्द हो गयी। उसमें चाभी नहीं भरी गयी थी। उनका पुत्र जब जीता था तब बराबर चाभी दिया करता था। इस वखत मि० एस को अपने पुत्र का ध्यान आ गया और उन्होंने कहा कि हे मृत पुत्र जैसे तुम पेहले चाभी दिया करते थे वैसे ही आज भी चाभी भर दो–इतना कहते ही घड़ी ठीक हो गयी। चलने लगी और दूसरे दिन सबेरे के ९ बजे

तक बराबर बारह घंटे चलती रही—मि० एस० ने यह बात दूसरे दिन अपने एक मित्र से कही। उसको बड़ा अचंभा मालुम हुआ कि घड़ी में पेहले दिन चाभी नहीं भरी गयी थी और जिस समय तक मि० एस० ने अपने स्वर्गीय पुत्र को चाभी भरने को कहा घड़ी बन्द पडी रही—

## १६. मरण पश्चात शांति ( आराम )-

बहुत सी आत्मा जो तुरन्त ही मर करके स्वर्ग में पहुँची हैं वे बहुधा करके अपने इष्ट मित्र सगों के साथ बात चीत करने को नहीं आ सकतीं। ऐसा कुछ लोग कहते हैं। परन्तु ऐसे भी उदाहरण मिले हैं कि जिनसे यह मालुम होता है यह कोई पक्का कायदा या नियम नहीं है कि सदा ऐसा ही हो—यहां एक डाक्टर की मृत्यु तुरन्त ही हो चुकी थी कि हमने एक सीएन्स करके एक दिन एक आत्मा से पूछा। उस डाक्टर के विषय में हमारी मित्र आत्मा ने हम से कहा। कि अभी कुछ समय तक डाक्टर की आत्मा आने लायक नहीं है वह आत्मा आराम कर रही है स्वस्थ लेटी हुई कुछ काल तक वह इसी अवस्था में रहेगी। फिर वह जागृत अवस्था में आवेगी—कोई जीव जिसके ऊपर दैवी करुणा हो जाती है उसे यह प्राथमिक शिक्षा समान भोग नहीं भोगना पड़ता। और नहीं तो दूसरे सब साधारण मनुष्यों को यह शिक्षा भोगनी पड़ती है—मैंने तुम को पहले ही कह दिया है कि यहां के अस्पताल का मालिक मैं ही हूँ। जब

वह अच्छा होकर होश में आ जायगा तब मैं उसको अपने साथ लेता आऊँगा—उसको अस्पताल में ले आये हैं इसी कारण से मुझे खबर है कि वह इस लोक में आया है नहीं तो मुझे उसके आने की क्या खबर होती—

ऐसे समाचारों से विदित होता है कि परलोक यात्रा करने पर कुछ आत्माओं को वहां आराम करना पड़ता है अपने अपने कर्मों के अनुसार यह अवस्था भिन्न भिन्न लोगों की अलग अलग होती है—

## १७. ईश्वर की अस्तित्व के विषय में—

एक सीएन्स में मिस्टर राहाते के भाई गोपालराव की आत्मा ने बहुत से बड़ी बुद्धिमानो के समाचार सुनाये—हमने उनसे पूछा कि बहुत से लोग इस संसार में ईश्वर को नहीं मानते हैं। इसी कारण ईश्वर के चमत्कारिक कार्यों को देख कर हमने उनसे इस विषय में अपने कुछ विचारों को प्रकाशित करने को कहा—इसका कारण यह हुआ था कि उसी समय मि० राहाते के एक पड़ोसी देवलोक सिधारे थे—आत्मा ने कहा कि वह ईश्वर को स्वयं देखने की बहुत ही कोशिश कर रहे हैं पर अभी तक तो सफलता नहीं हुई है—उस आत्मा ने एक ऐसी भेद को बात कही जो मध्यस्थ ने कभी सुनी भी नहीं थी। उसके सुनने से विश्वास होगया कि यह वही आत्मा है। उदाहरण के तौर पर हमने आत्मा से कहा कि अमुक दिन आप कुछ कर्म कांड

देखने के लिए पधारिये—जब कर्म कांड के विषय में आत्मा से पूछा तो उसने कहा कि उस रोज तो श्राद्ध का दिन है यह बात तो मध्यस्थ को बिलकुल मालूम ही नहीं थी—ऐसे गुप्त समाचारों को सुन कर आत्मा से बातचीत करने वाले विद्यार्थी को मालूम हो जाता है कि वह किस आत्मा से बातचीत करता है और वह कैसी आत्मा है यद्यपि कभी कभी उससे बात चीत में उसके नाम इत्यादि में बहुधा भूले हो जाती हैं—

## १८. एक अद्भुत अनुभव---

स्वर्गवासी आत्मा भी हमारी ही तरह जीव आत्मा होती हैं सिर्फ उनके देह नहीं होती। उनके भी देहधारियों की तरह स्वभाव तथा इन्द्रियों के सब धर्म होते हैं यहां जो उनके इष्ट मित्र सगे सम्बन्धी रहते हैं। उनसे प्रत्येक आत्मा का प्रेम और कम नहीं हो जाता—एक समय प्रयोग करते समय जब मैं अति चिन्तित होगया तब मैंने अपने एक मित्र स्वर्गीय आत्मा के साथ बातचीत करने का विचार किया—मि० ओक जो अकसर स्वर्ग लोक से बातचीत किया करते हैं तुरंत आकर मुझसे बातचीत करने लगे। थोड़ी देर तक आनन्द की बातचीत होती रही। फिर मैंने अपने दुःखों और चिन्ता के समाचार उनसे कहे। परन्तु उन्होंने उसका उत्तर देने में अपनी असमर्थता दिखलाई—जब मैंने उनको उत्तर देने के लिये बहुत कुछ दबाया तब तो वे बिलकुल चुप हो रहे। इससे मेरे मन को बहुत ही क्लेश

हुआ क्योंकि मुझे पूर्ण आशा थी कि मुझे उनसे अच्छी सलाह मिलेगी—

उन्होंने लिखना बन्द कर दिया और मेज से कोई खटका नहीं मिलने लगा पर थोड़ी ही देर पीछे मेज ऊँची नीची होने लगी और मुझे मालूम होगया कि मि० ओक फिर आ गये। उन्होंने कहा कि वे स्वयं मेरे प्रश्नों का उत्तर दे नहीं सकते थे इस लिये वे सुभद्राबाई को उत्तर देने के लिये बुला लाये—थोड़ी देर बाद सुभद्राबाई ने कहा कि मि० ओक जल्दी से मेरे पास आये और मुझसे कहा कि मि० ऋिषि के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये तुम मेरे साथ चलो—और मैं आगई इस बखत मुझे अवकाश नहीं है संध्या होगई है कल सबेरे आकरके मैं तुम्हारी प्रत्येक उत्तर दे दूंगी—

## १६. स्वर्ग आत्मा को कितना ज्ञान होता है—

यद्यपि स्वर्ग आत्माएँ सर्वदर्शीय तथा अखिल गोचर नहीं होती, तथापि उनको हमारी अपेक्षा सांसारिक व्यवहारों का अधिक ज्ञान होता है—एक सीएन्स में स्वर्ग आत्मा गोपालराव राहाते से उनके भाई ने कुछ गुप्त व्यवहारिक बातें पूछी तो उन्होंने कहा कि उपासिनी महाराज के पास जाकर अपनी बातों का निश्चय कर लो—मि० जयकर उस समय मध्यस्थ का काम कर रहे थे परंतु उनको भी यह भेद बिलकुल मालूम नहीं था कि उपासनी महाराज बम्बई में आये हुए हैं। यह कैसे भारी

आश्चर्य की बात है कि आत्मा को यह बात मालुम होगई और उसने अपने भाई से कहा कि उनके पास जाओ—मि० राहाते यहां उनसे मिलने गये तो पता लगा कि महाराज कल बम्बई से चले गये —

२०. एक पति की चिन्ता के विषय में--

दो अयोगों में एक नव यौवना विधवा स्त्री के पति की आत्मा ने अपने हाथ से लिख कर बड़े चिन्तनीय समाचार हमको दिये—इस विधवा का नाम विमला था वह इस स्पीरीचुएलिज्म (परलोकविध्वा) को विलकुल नहीं जानती थी और किसी सीएन्स में पहले कभी शामिल भी नहीं हुई थी—उसका पति हमारे साथ बातचीत करते हुए कि मुझे अपनी स्त्री की बहुत ही चिंता रहती है। मैं उसके क्षेम कुशल का अभिलाषी हूं। अपनी स्त्री के आत्मिक दुःखों से बहुत पीड़ित होता हूं। उसने अपनी स्त्री के लिये कहा कि तुम बम्बई में ही रहना—मेरी समझ में आता है कि बम्बई में रहने से तुम्हारे दुखों की निवृत्ति होगी और मन को बहुत कुछ शान्ति मिलेगी—यह विधवा बाई इस समाचार को पाकर बहुत ही आश्चर्य में आई और यह समाचार उसके पति की आत्मा ने ही दिया है इस बात का उसको पूर्ण विश्वास हो गया—इन समाचारों का उसको लेश मात्र विचार नहीं था और ये जितना वृत्तान्त हुआ उसका एक अंश भी उसके चित्त में कभी नहीं आया था—

२१. सुख और दुःख के विषय सुभद्राबाई के विचार--

सुभद्राबाई हमको परलोक संसार के अमूल्य समाचार दिया करती हैं वह हमसे बातचीत करने को इतनी उत्सुक रहती हैं उनका उत्साह और बराबर समय पर हाजरी का अनुभव हमारे बहुत से सभासदों को विदित हो चुका है। उनके कार्यों की दक्षता हमारे जानने में अच्छी तरह आ चुकी है। सिर्फ हिन्दुस्तान के ही नहीं विलायत तक के लोग जानते हैं। विलायत से मिस्ट्रेस रोबर्टसन हमको लिखती हैं कि सुभद्राबाई बहुत करके वहां के सीएन्सोंमें पधारती हैं। वे एक दिवस मामूली तरह चली आई थीं और सुख दुःख के विषय में कुछ बातचीत करतीं रहीं— उन्होंने कहा कि सुख के लिये प्रत्येक मनुष्य कोशिश करता है पर उसको यह मान नहीं होता है कि सुख के पीछे दुःख भी आता है। कोई मनुष्य बिलकुल सुखी नहीं है बहुत सी आत्माएँ कह देती हैं कि वे बहुत सुखी है वे यह केवल अपने मृत्युलोक के सब इष्ट मित्रों को संतोष कराने के लिये कहती हैं और ऐसे बनावट के समाचार कहने के वास्ते उनको आने की आज्ञा लेनी पड़ती है—

२२. परलोकगत व्यक्ति के अस्तित्व का प्रमाण--

जो आत्मा आकर हमसे बातचीत करे उसके विषय में

हमको जान लेना चाहिये कि वह कौन है। एक सीएन्स में मि० जो० की आत्मा से पूछा था कि अपनी लड़कियों के नाम बतलाओ। उसने सब के नाम ठीक ठीक बताये थे एक नाम में कुछ भूल हुई थी—मध्यस्थ थे मिस्टर जयकर और उनको नाम बिलकुल नहीं मालुम थे और कोई ऐसे उपाय भी नहीं थे जिससे वे उनके नाम जान सकते—जब मध्यस्थ कोई नया मनुष्य होता है तब आत्माओं को आजाने मनुष्य की अध्यक्षता में नामों का बताना कठिन कार्य मालुम होता है। इसका कारण यह कहा जाता है कि नामों से कोई मतलब सिद्ध नहीं होता है और इसी कारण से मध्यस्थ के द्वारा नाम बताने में बहुत ही कठिनाई पड़ती है—

## २३. टेबल (मेज) का एक विचित्र अनुभव--

स्पीरीचुएलिज्म (परलोक विद्या) के अभ्यासकों को सीएन्स के समय के टेबल के खटके का ही अनुभव मामूली तरह होता ही है और सब बातें जानते हो हैं परंतु एक दफे हमको बड़े आनन्द का एक अनुभव टेबल के खटकों का हुआ था—हमारे एक आत्मा मित्र ने हमसे वायदा किया था कि वह रात को ९ बजे जरूर आवेगा। किसी कारण से हम उस ठीक समय पर वहां हाजिर नहीं हो सके और हमने सीएन्स दस बजे रात को शुरू किया था जब हमने टेबल को बड़े जोर से हिलते देखा जिसको देख कर हम भी बड़े अचंभे में आगये। यह एक हमारा

अद्भुत अनुभव हुआ चार पांच दफे टेबल घूमती फिरी और सत्य तो यही है कि हमको कमरे के एक दीवार तक पहुंचा दिया। हम फिर जोर करके उसको अपने ठिकाने पर लाने लगे तो टेबल के पैर ऐसे उलटे सीधे होने लगे कि जैसे कोई बालक जिद में आकर पैरों को पछाड़ता है। तब हमने अपने हाथों को टेबल के नीचे लगाया तब भी हमको यही मालूम होता था कि वह टेबल उछलती नाचती कूदती है और चारों तरफ बड़े जोर के भरे हुए खटके देती है। उस टेबल की उछल कूद देखने लायक थी उसको अच्छी तरह दाब लेना एक पहलवानी का तमाशा होगया था—दुर्भाग्य वश ऐसी लीला को अपने वश में ले आना अथवा किसी तरह टेबल को आज्ञानुसार शान्त रखना संभव नहीं था क्योंकि ये सब क्रियाएँ हमारे आत्मा मित्रों की रुचि पर होती हैं—प्रत्यक्ष रूप से सामने आने के विषय में सुभद्राबाई ने कहा कि इस नये काम में एक घंटा लग जायगा। और अब देर बहुत होगई है इस कारण हमने अपने विचार को बदल दिया कि फिर कभी किसी मौके पर देखा जायगा—

२४. अनजानी आत्माओं से बातचीत के विषय में—

मरण के पश्चात आत्माएँ बातचीत करने को अपने मित्रों तथा सगे सम्बन्धियों के पास आती हैं यह एक साधारण जानी हुई बात है। तौ भी कभी कभी ऐसे २ पुरुषों की आत्माएँ बात चीत करने को आती हैं कि जिन को जब वे जीते थे यहां हमने

कभी देखा हो नहीं था-एक सज्जन मि० ओक और दूसरे मि० कालाम्बीकर की आत्मा जिनको जीते हुए हमने कभी नहीं देखा और जानते भी नहीं बहुधा आते हैं और हमसे बातचीत करते हैं। वे हमको स्वर्ग लोक के बड़े उपयोगी और शिक्षा पूर्ण समाचार देते हैं। हमारी बहुत सी सीएन्सेसों में उन्होंने अपना अस्तित्व दिखलाने की बहुत कोशिश की और हमको अपने घर बार के निजी समाचार कह सुनाये। कभी २ जब वे अपनी बात कहते थे उनमें से मि० कालाम्बीकर की आत्मा उस क्लेश को याद करके जो उन्होंने मरण समय में पाया था एक दम दुःख में डूब जाती थी मि० ओक तो बहुत कम कोई समाचार देते थे जो कुछ हम उनसे पूछते थे बस उसका उत्तर वे दे देते थे। इन दोनों आत्माओं की मनोवृत्ति पृथक् २ थी यद्यपि मध्यस्थ एक ही था। इससे स्पष्ट होता है कि वहां की दोनों आत्माओं के भाव भिन्न भिन्न प्रकार के थे-मि० ओक कहते थे कि वे खानदेश में पचवाड़ के निवासी थे उनकी आत्मा एक हँसमुख स्वभाव की है। उनको हमारे साथ बर्ताव करते पांच बरस से ज्यादे हुआ है वे कहते हैं कि उनकी स्त्री अभी तक वहां अपने बाप के घर रहती है स्वर्गलोक के बहुत से वृत्तान्त उन्होंने हमको सुनाये हैं जिसमें से एक वृत्तान्त स्वर्ग के जेलखाने का बहुत ही अद्भुत सुनाया—मि० कालम्बीकर ने अपने मरण समय के अनुभवों को बड़ी रोचक कथा कह सुनाई-उन्होंने कहा कि जब उनके

मरने का समय हुआ था उस समय प्रभू के दो दूत आये। वे उनको अपने साथ उनके नवीन निवास स्थान पर ले गये—वे पूना में नाना पेठ के रहने वाले थे और उन्होंने उनके मित्रों के तथा सगे सम्बधियों के नाम बताये जो अभी तक वहां रहते हैं—

## २५. स्वप्नावस्था का स्पष्टी करण

सुभद्राबाई ने मुझको मेरे स्वप्नों के सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्ञान की बातें कही हैं। कितनी ही दफे वे स्वप्न में मेरे निकट आती है परंतु जब मैं जागता हूं तब मुझे कुछ याद नहीं रहता है कि क्या बातचीत स्वप्न में हुई थी—जिस समय वे मेरे पास बातचीत करने आई थी यदि उसी समय मैं जाग जाता तो संभव है कि कुछ अनुभव मुझको स्मरण रहता—कभी कभी ऐसा होता है कि जिन स्वप्नों से मुझे कुछ भी मतलब नहीं होता वे याद रह जाते हैं—

सुभद्राबाई ने कहा कि बहुत से स्वप्न तो मेरे मन के उद्वेग के कारण से ही होते हैं। उनमें सत्यता का कुछ अंश नहीं है—मैंने कितनी दफे उनसे कहा कि तुम स्वप्न में मुझसे मिलना पर उन्होंने कहा कि उससे कोई अर्थ सिद्ध नहीं होगा क्योंकि जागने पर तो आपको कुछ याद ही नहीं रहता-हम रोज सबेरे बिला नागा बातचीत करते हैं। उसको वे बहुत पसंद करती हैं और प्रातःकाल ६ बजे ही बिना भूले आकर उपस्थित हो जाती हैं-बहुत से लोगों को तो यह बिश्वास नहीं आवेगा कि रोज़ सबेरे

आ जाती हैं इसके सिवाय जब कभी हम सीएन्स करते हैं वे आकर उपस्थित हो जाती हैं। और इस विद्या के प्रचार में मदद करने को वे बहुत ही चिन्तित रहती हैं—

## २६. परलोक संसार में एक झगड़ा

मरण पश्चात इस जीव का दूसरा जन्म (अर्थात् इस लोक से जाकर परलोक में वास) प्रायः ऐसा ही है जैसा इस संसार का जीवन—जो समाचार परलोक के हमको मिलते हैं वे बिलकुल इस संसार के समान ही मालुम होते हैं। इसमें जरा भी संदेह रखने की ज़रूरत नहीं है—सीएन्स करने के समय दो दफे मि० कालाम्बीकर ने हमसे कहा कि उन्होंने स्वयं देखा है कि उस लोक के दो आदमी आपस में लड़ाई करते थे और उस लड़ाई का एक विचित्र हाल सुनाया—उन्होंने कहा "कि कल मैं एक बगीचे की तरफ चला जाता था कि थोड़ी दूर पर मैंने बहुत से आदमियों की भीड़ देखी—पहले तो मुझे वहां जाने में संकोच हुआ परंतु फिर मैंने निश्चय किया कि वहां मैं जरूर जाऊँगा—भीड़ में धक्कम धक्का करते हुए मैं आगे बढ़ गया और देखा कि दो आदमी क्रोध में भरे हुए आपस में लड़ रहे हैं। मैंने विचार किया कि मैं उस झगड़े को बन्द करदूं। परंतु बदले में मुझे भी एक घूंसा पड़ गया इस पर मुझको बहुत क्रोध आया। पर मैं उनको छोड़ कर दूर हट करके खड़ा हो गया। परन्तु यह अधर्म कब तक सहन हो सकता था? अब यह तमाशा हुआ

कि ईश्वर के चार दूत जो उधर होकर चले जा रहे थे उन्होंने उन दोनों झगड़ालुओं को पकड़ लिया और ले जाने लगे—मैंने उनसे कह दिया कि मैंने उनका झगड़ा रोकने की कोशिश की पर उन्होंने मेरी बात जरा नहीं सुनी इस पर तो वे दूत बहुत ही क्रोधित हुए और उन्होंने उनको क़ैद कर लिया और मुझसे कहा कि तुम भी साथ चले चलो—मुझे बड़ा पश्चात्ताप होने लगा कि मैं नाहक उनके बीच में बोला और अपने को इस झगड़े में फंसा लिया—सच पूछो तो मुझे उनसे कुछ मतलब नहीं था परंतु झगड़े को विगर रोके हुए मुझसे रहा नहीं गया। मैं बीच में बोला उसका यह परिणाम हुआ। पीछे से पछतावा करने से क्या होता है बिना कुछ कहे हुए मैं उनके साथ चला गया। वे हमको एक बड़े अफसर के पास ले गए जो हमेशा ऐसे मामलों का न्याय किया करते हैं। वे जिसका जैसा कसूर होता है उसको वैसी शिक्षा देते हैं। उनके सामने जाने का यह मेरा पहला हो अवसर था। जब मुझसे कहा गया कि सब हाल कह दो तब जो कुछ हुआ था वह मैंने कह सुनाया—तब विचार करके हाकिम ने न्याय किया कि उन अपराधियों को बेंत लगाया जाय, मैं उस झगड़े से साफ बच गया। फिर मैंने उनको एक अच्छी सीख दी उसका उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया और जैसा अनुचित व्यवहार उन्होंने मेरे साथ किया था उसकी क्षमा मांग ली तब से हम और वे मित्र हो गये हैं"—

## २७. परलोक में कायाकल्प—

बहुत से आदमियों को आश्चर्य होता होगा कि परलोक में भी वृद्धावस्था होती होगी और फिर इतने वृद्ध आदमियों का क्या होता होगा। आगे उनको क्या दशा होती होगी। सुभद्राबाई इस विषय में हमसे कहती हैं कि स्वर्ग लोक में एक नियम है जिससे जवानी आ जाती है। साधारण और अच्छे भजनानन्दी ईश्वर परायण आदमियों का विचार करके यह उत्तम नियम बनाया गया है। ईश्वर के परमभक्त लोग अपनी सेवा तथा भक्ति के बल से वहां हजारों बरस तक ऐसे ही रहा करते हैं उनका एक बाल बांका नहीं होता और बाकी के साधारण लोगों को या तो जवानी अवस्था फिर से मिल जाती है अथवा ९० बरस की अवस्था के पीछे उनको फिर जन्म लेना पड़ता है—

## २८. एक आत्मा का मज़ाक—

प्रभू की माया ऐसी चली आई है कि जन्म मरण और उसके बाद फिर जन्म मरण बराबर चला ही जाता है इस विषय में बाजो बाजी आत्माएं बातचीत करते हुए कुछ हँसीठट्ठे की कोई कोई बात कह देती हैं। एक आत्मा अपने एक मित्र के साथ बात करते हुए कहने लगी "बिल्लियाँ दौड़ती हैं वे चूहों को पकड़ती हैं और खा जाती हैं तुम दौड़ धूप करत हो और लक्ष्मी संचय करते हो उसका भोग नहीं भोगते हो जोड़ जोड़ करके रखते हो।

क्यों ? क्या तुम बिल्लियों से भी बढ़ कर मूर्ख हो ? जैसे बिल्लयाँ मरजाती हैं ऐसे ही तुम भी एक दिन मर जाओगे ? तो फिर तुम रुपये का संचय क्यों करते हो ? मैं तुमसे बहुत अप्रसन्न हूं। तुम मुझको भूल गये हो। मैं बहुत गरीब प्राणी हूँ। मैं तुम को एक योग्य उचित शिक्षा दिये बिना चला जऊंगा ऐसा मत समझ रखना—अपना धन मुझे दे दो मैं उस से आनन्द उड़ाऊँगा "—

## २६. लोकमान्य तिलक के संदेश—

महान पुरुष जिन्होंने अपने जीवन में अपने देश के निमित्त कार्य किया हैं वे भी कभी कभी दया करके पधारते हैं और हम से देश के समाचारों की चर्चा करते हैं—हमारे लिये इस बात का प्रबंध करना असंभव है कि वे महान लोग जब चाहें तब अपने इष्ट मित्रों तथा सहयोगियों से बात चीत कर लिया करें। यह हमारी अयोग्यता है—यह हमारा परम धर्म है कि जैसे बने तैसे हम इस काम के करा देने में उनकी सहायता करें-एक समय लोकमान्य बी० जी० तिलक की आत्मा ने जो हमारे देश के बड़े भारी नेता हो गये हैं आकर के हम को वह समाचार दिये—वे कहने लगीं कि जो लोग मातृभूमि के लिये उसकी स्वतंत्रता के लिये सर्वदा बड़े बड़े उपाय किया करते हैं उनकी मदत के लिये मैं हर समय तैय्यार हूं—हिन्दुस्तान की नाव इस समय बीच गंगा में पड़ी है—तुम को उचित है कि जिस काम के पीछे हम

लोग इतने दिन से पड़े हुए हैं अब उस काम को करते रहो। जो दुख पड़े सो सहलो और उसको पूरा कर के तब पीछा छोड़ो–मुझ को सुन करके बहुत दुःख हो रहा है कि हिन्दू मुसलिम द्वेष दिन दिन बढ़ता चला जाता है "—

उन्होंने कहा कि "स्पिरिचुएलिस्टिक" विद्या तथा परलोक वासियों से बात चीत कर सकने के ज्ञान की विद्या का फैलाव जो आज कल हिन्दुस्थान में चल रहा है वह एक बड़े ही उत्तम दरजे का कार्य है और मैं नहीं कह सकता कि जो अच्छा काम है उसकी प्रशंसा कौन नहीं करेगा–हिन्दुस्थान में ज़रूरत इस बात की है कि उसके प्रत्येक प्रान्त और देश में ऐसे मनुष्य तैय्यार हों जो जितनी उत्तम विद्याएं हैं उनके जानने वाले हों, हर काम में प्रवीण हों–सब विद्याओं में निपुण हों–लगे रहो तो एक दिन तुम को तुम्हारी मेहनत का फल मिल जायगा।"

३०. आत्मा के हस्ताक्षर के पहिचानने के विषय में–

बहुधा लोग ऐसा प्रश्न करते हैं कि 'आटोमेटिक राइटिंग" अर्थात् वह लेख जो आत्मा अपने बल से तुम्हारे हाथ में शक्ति देकर तुम्हारे ही हाथ से तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर लिखा देती हैं वे अक्षर बिलकुल वैसे ही मिलते हैं जैसे कि वह आत्मा अपने जीवन में इस लोक में लिख सकती थी–मेरे अनुभव से तो ऐसा मालूम होता है कि बहुधा अक्षर नहीं मिलते हैं क्योंकि उस आत्मा को तो एक मध्यस्थ के हाथ के द्वारा लिखा देना होता है।

यह बात स्वाभाविक ही है कि ये अक्षर उस आत्मा के अक्षरों से मिल नहीं सकते—परन्तु एक समय हम को इस विषय का एक नवीन अनुभव हो चुका है—एक समय एक सीएन्स में जिसमें बा० जमना दास मेहता स्वयं बिराजे हुए थे ऐसा हुआ कि आत्मा ने जो लेख लिखा या उसके नाम के अक्षर ठीक उन अक्षरों से मिलते थे जो उनकी पत्नी उनके जीवन में लिखा करतीं थीं। यह बात महाशय को माननी पड़ी और बहुत से अनुभवो लोगों से अनुभवी लोगों से भी इस वात का पता लगता है कि कितनी ही दफे ऐसे मौके हुए हैं जिसमें अक्षर मिलते हुए पहचानने में आये हैं।

### ३१. संदेश प्राप्ति के समय धैर्य की आवश्तकता—

परलोक आत्माओं से बात चीत के समय बहुत धीरज रखनी उचित है यह बात अच्छी तरह से बहुत दफे निश्चय हो चुकी है कि हमारे परलोक वासी सुहृदों की आत्माओं के साथ बात चीत करते समय बहुत धैर्य को जरूरत है एक सज्जन जो हमारी सभा के नये सभासद् हुये थे, वे अपनी स्वर्ग वासिनी स्त्री की आत्मा से बत करने के बहुत ही उत्सुक थे और दो चार सोएन्सों में बराबर इसी लिये पधारे भी थे परन्तु उसका फल कुछ न हुआ। एक मौके पर उनके ससुर जी से उनको बात चीत हुई थी उस से उनको आत्मा से बात चोत करने को सत्यता का विश्वास हो गया। परन्तु उतने से उनका संतोष नहीं हुआ—उनको अपनी

स्त्री के विषय में कुछ समाचार पाने की बहुत इच्छा और उत्सुकता थी। तब हम ने दूसरी स्वर्ग वासी आत्माओं से प्रार्थना की कि उनकी स्त्री की आत्मा को कृपा करके पता लगा कर उनसे मिला दो—कुछ समय तक निराशा होती रही परन्तु जब उनका पता लग गया तब तो इस पति को अपनी स्त्री से बहुत ही संतोष जनक और प्रसन्नता के समाचार मिलने लगे—ऐसे ऐसे विचित्र उदाहरणों से हमारी समझ में यह बात अच्छी तरह आ गई कि इस नवीन आत्मिक विद्या की खोज के लिये धैर्य और स्वस्थ चित्तता की अति ही आवश्यकता है—

## ३२. परलोक संसार का भाषा के विषय में-

यह सवाल एक बड़ी कठिनाई का आ जाता है कि परलोक वासियों के साथ किस भाषा म बात चीत करना चाहिये-हमारे परलोक वासी मित्र मि० ओक ने जवाब दिया कि भाषा की कठिनाई हम को भी अकसर दुख देती है और जब ऐसी कठि-नता आ पड़ती है तब हम एक दुभाषी को बीच में रख कर काम निकाल लेते हैं—बहुत करके स्वर्गलोक में मन के वेगरूपी चिन्हों से बात चीत होती है यह शक्ति किसी आत्मा में कम किसी में ज्यादे होती है तब वे और दूसरे उपायों से बात चीत कर लेते हैं। दूसरी भाषाओं में लिखना तो बहुत ही कठिन होता है और इस काम के लिये बहुत विद्या और योग्यता की जरूरत होती है" उन्होंने कहा कि जब विदेशी भाषाओं में बात चीत होती

है तब अपने विचारों को स्पष्ट करके कहने में एकदम गड़बड़ हो जाती है। कुछ कहा तो कुछ समझ पड़ जाता है—

## ३३. एक आत्मा चित्र खींच करके दिखलाती है-

एक दिन संध्या समय जब हम एक ख़ास आत्मा को बुलाने के लिये सीएन्स करके बात चीत करने की तियारी कर रहे थे उस समय एक ऐसी आत्मा आकर के उपस्थित हो गयी कि न तो वह अपना नाम बताती थी और न अपना कुछ हाल बताती थी। उसने टेबुल के द्वारा बताया कि वह मि० जयकर की कोई सम्बन्धी होती थी। मि० जयकर उस वखत टेबल पर बैठे हुए थे टेबल के द्वारा और समाचार मिले कि वह एक चित्र कार है और उसको मरे हुए ११ बरस हो गये हैं हमने बार बार उससे प्रार्थना की परन्तु मि० जयकर के हाथ से भी, जिनको बहुत जल्दी लिखने का अभ्यास हैं कुछ भी लिख कर नहीं बताया—अन्त को यह बात मालुम हुई कि वह आत्मा कुछ तसवीरें खींचना चाहती हैं उसके पोछे उसने अपना नाम बताया और अपने निजो समाचार भी कुछ दिये—उस आत्मा ने एक चिड़िया की, एक घोड़े की और एक मनुष्य की तसवीरें खीचीं मध्यस्थ को तसवीर खीचने का बिलकुल अभ्यास है ही नहीं—

## ३४. स्वर्ग की आत्मा द्वारा डाक्टरी-

तीन दफे ऐसा हो चुका है कि यहां के डाक्टर जे० एज़ीकी

एल के भाई डाक्टर एब्राहेम जो इस समय स्वर्ग में वास कर रहे हैं यहाँ के रोगियों की चिकित्सा की और उनके लिये दवाओं के इलाज तथा नाम भी लिख दिये। दवाओं के नाम अलग अलग ओइजा० बोर्ड पर लिख दिये थे और उनसे रोगियों को फायदा हुआ–बीमारों के रोग ऐसे थे कि किसी को रूमेटिज्म था। किसी को डिसपेपसिया और किसी को दिल की बीमारी थी—आत्मा ने कहा कि उसके पास ऐसे अदृश्य साधन हैं जिससे वे वहीं से रोगियों की चिकित्सा कर लेते हैं नाड़ी परीक्षा और रोगी की नसों की परीक्षा इत्यादि कर लेते हैं–जिस वखत वे परीक्षा करते हैं उस समय रोगी को कह देते हैं कि पांच सात मिनट तक चुप-चाप बैठे रहना—

# छठा अध्याय

## मृत बालकों की परलोक में स्थिति

लकों का परलोक में क्या होता है इस सम्बन्ध में पुराणधर्माभिमानिओं की ओर से कुछ भी स्पष्टीकरण नहीं होता। जिनको वाचा या चलन शक्ति पूर्णतः नहीं आयी थी, ऐसे करोड़ों बालकों की माताओं को अपने अर्भक अनन्त निद्रा में जाते हुए देखने का दुःख सहन करना पड़ता है और प्रेम से अन्तिम चुंबन लेकर उस कोमल देह को मिट्टी में डालते समय उनके नेत्रों से शोकमय अश्रु बहते हैं। निराश हृदय से दुःखपूर्ण गृह की तरफ जाकर और उन बालकों के खिलौने, उनकी शय्या और अन्य स्मृत्युत्पादक चीजें देख कर, उन माताओं का हृदय शोकपूर्ण होता है और उनके चित्त में प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि इस अमर्यादित विश्व में वह बालक्क विद्यमान हो तो उसकी क्या स्थिति हुई होगी ?

अर्भकावस्था में जो परलोक में जाते हैं उनका क्या होता है ?

उनकी शरीरिक तथा मानसिक उन्नति होती है या नहीं? मिलने पर हमको पहिचान सकेंगे या नहीं? उनका समाधान करने के लिए उनको संभालने और पढ़ाने को वहाँ कोई रहता है या नहीं? क्या उनको मातृप्रेम की अपेक्षा होती है? और क्या वह न मिलने से उनका हृदय व्यथित होता है? इस तरह के हज़ारों प्रश्न गतकालीन असंख्य युगों में पूछे गये हैं और आज प्रत्येक मृत अर्भक के कुटुम्ब में ये ही सवाल किये जाते होंगे। परलोकस्थ मनुष्यों के दिये हुए संवादों द्वारा इस सम्बन्ध में जो ज्ञान उपलब्ध हुआ है, वह पाठकों को सादर भेंट करता हूँ।

इस बात का पूर्णतः ज्ञान होने के लिए यह तत्व ख़्याल में रखना चाहिये कि गर्भ (Conception) के समय अर्भक का स्थूल देहावगुण्ठित सूक्ष्म आकार रहता है। यह सूक्ष्म आकार सूक्ष्म परिमाणुमय पदार्थ का होता है, और वस्तु मात्र अविनाशी होने के कारण अर्भक का सूक्ष्मदेह कभी भी नष्ट नहीं होता।

मृत्युजन्य स्थित्यन्तर के समय बालक का सूक्ष्म आकार गर्भ (Conception) काल पर धारण किये हुए स्थूल वस्त्र से विलग्न होता है और जहाँ सब सूक्ष्म है और जिस अवस्था में भौतिक वस्तु का प्रवेश नहीं हो सकता, ऐसे लोकान्तर का वह निवासी होता है। यह स्थित्यन्तर भूलौकिक जन्म के समान है। ऐसा विधान करना ग़लत नहीं होगा। भूलोक में होते हुए जिनको मातृवात्सल्य प्रदर्शित करने का कभी भी योग प्राप्त नहीं हुआ

ऐसी हज़ारों सन्ततिविहीन नारियां परलोक में हैं। वे और इसी कार्य में अतिशय सुख मानने वाली दूसरी व्यक्तियां इस समय उपस्थित होती हैं और नयी परिस्थिति में आये हुए बालक का रक्षण करती हैं।

इहलोक के समान परलोक में भी बालकों की सँभाल की जाती है। मातृप्रेमविहीन बालकों की रक्षा करने में तथा उनकी वाकशक्ति जागृत करने में और ज्ञानमय वार्तालाप करने में अतिशय सुख मानने वाली कतिपय व्यक्तियां परलोक में रहती हैं उनके स्वार्थरहित निग्रह में भूलोक के समान बालकों की मानसिक तथा शरीरिक उन्नति हो कर वे परिणात अवस्था को प्राप्त होते हैं।

परलोक में सूक्ष्म देह बुद्धि की प्रथा मनोरञ्जक है। इहलोक के समान वहाँ भी बालकों को मातृप्रेम की आवश्यकता होने पर माता के निद्रावस्था में होते समय इस कार्य पर नियत की हुई व्यक्तियां उसकी संनिधि में उस बच्चे को लाती हैं। उस समय बालक के अस्तित्व के लिये आवश्यक प्रेम का आकर्षण किया जाता है। परलोक कितना समीप है, वहाँ के निवासी अपने कितने निकट आ सकते हैं, उनका अपने ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका हमें बहुत अल्प ज्ञान रहता है। बालक स्ववृद्ध्यनुरूप अपने से सम्बन्ध रखते हैं और हमारे परलोकगमन के समय हमको पहिचानते हैं और हमारा अभिन्दन करते हैं।

इहलोक के समान परलोक में भी पाठशाला, विद्यापीठादि

रहते हैं। नियत वयोमर्यादा के पश्चात् यहाँ विद्याभ्यास समाप्त होता है। इस प्रकार की परलोक में स्थिति नहीं है। परलोक निवासियों का अभ्यास अकुण्ठित होता रहता है और ज्ञानवृद्धि होती है। वहाँ के बड़े बड़े व्याख्यान-मन्दिरों में श्रेष्ठ व्यक्तियां सृष्टिनियम पढ़ाती हैं। सब को वहाँ अनुज्ञा रहती है और बहुत से लोग उस अवसर पर आते हैं। इस रीति से संसार की गूढ़ बातें उनको ज्ञात होती हैं। सद्गुण को वहाँ बहुत मान दिया जाता है और सद्गुणी लोगों की बहुत क़ीमत मानी जाती हैं। यहाँ के द्रव्यसम्पन्न मनुष्य उस स्थान में बहुत दरिद्री दिखलाई पड़ेंगे। दुर्दैव ग्रस्त मनुष्यों का साहाय्य करके परलोकस्थ श्रेष्ठ व्यक्तियों को वह स्थिति प्राप्त हुई है। दूसरे की उन्नति करने से अपनी भी उन्नति होती है।

एक परलोकवासी मनुष्य ने बालकों की पारलौकिक स्थिति के सम्बन्ध में आगे लिखे अनुसार वर्णन दिया है। भिन्न भिन्न वयस के करोड़ों बालक प्रति वर्ष परलोक में आते हैं। उनमें से कतिपय बहुत ही छोटे रहते हैं। लेकिन उनमें से कुछ भला बुरा जान सकते हैं। परलोक में वे क्या करते हैं इसकी खोज करना मनोरञ्जक है। वहाँ का यह नियम है कि पृथिवीतल से जो लोग पूर्ण आयु पूरी करने के पूर्व परलोक में आते हैं उनकी उस अवस्था तक मानवी उन्नति होना आवश्यक है। इससे यह जाहिर होगा कि अत्यन्त

अल्पवयस्क बालकों की भी मानसिक और आत्मिक उन्नति परलोक में होती है ।

परलोकगत मनुष्यों को देखने की जिनको शक्ति है ऐसे लोगों ने अपने मातापिता तथा बालकों के मिलने का वर्णन किया है। वे आपस में एक दूसरे को पहिचान सके हैं। कहा जाता है कि वर्षों के पश्चात् वे बालक बड़े लोगों के समान दीखते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि भूलौकिक अवस्था के अनुसार परलोक में भी शरीर की वृद्धि होती है। बहुत लोग अपने सन्तति सम्बन्धी कर्तव्यों के बारे में उदासीन रहते हैं। ईश्वर ने जब बालक रूपी पुष्प तुम्हारे अधीन किया है तब उसकी अच्छी तरह से संभाल करना तुम्हारा कर्तव्य है। इसकी उपेक्षा करने से इसके लिये परलोक में शासन होता है।

बालकों की मृत्यु के बारे में बहुत भ्रम् फैला है। संसार को इस विषय का अत्यल्प ज्ञान है। ससमर्थ भौतिक-देह-युक्त बालकों के इहलोक त्यागने के पश्चात् परलोक में भूत-दया-युक्त सज्जनों की देख रेख में उनकी उन्नति और वृद्धि होती है। यह मालूम होने पर हर एक राष्ट्र के और जाति के माता पिताओं को अत्यन्त संतोष होगा।

जिसका संवाद आगे दिया है वह मेरी कन्या है पाँच छः साल के पूर्व छः सात मास की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो गयी थी। उस समय मुझे इस विद्या का ज्ञान नहीं था। पत्नी की मृत्यु

के पश्चात् यह प्रयोग शुरू करने पर यह कन्या भी वार्तालाप करने को आने लगी। मुझे बहुत हर्ष तथा आश्चर्य हुआ। उसके संवाद से उसका अस्तित्व निःसन्देह स्थापित हुआ। आशा है कि इससे बालकों के दुःखी माता पिताओं को सनतोष होगा यह कन्या मेरी पत्नी के स्वर्गगत होने के पूर्व परलोकस्थित एक अनाथाश्रम में रखी गयी थी और वहाँ वह पाली पोसी जाती थी; यह बात मेरी पत्नी ने मुझसे कही थी। एक मृत कन्या का अपनी पाठशाला का दिया हुआ वर्णन आगे दिया गया है:—

"यहाँ पर हमारी पाठशाला में आठ शिक्षक और दो शिक्षिका हैं। कुल चार घंटे पढ़ाई होती है। पहले घंटे में दीवान मास्टर हमसे सुन्दर अक्षर लिखाते हैं। दूसरे घंटे में शिक्षिका कर्णिक सिलाई का काम सखलाती है। तीसरे घटे में अध्यापक करमरकर इतिहास और कविता की शिक्षा देते हैं। इतिहास का सातवाँ पृष्ठ पढ़ाया जाता है। चतुर्थ घंटे में गुरु चिटनिस गणित, भूगोल, भाषान्तर, गायन और शुद्ध लेखन सिखाते हैं। शाला के मुख्य गुरु डिपटी साहब के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनके रहने का घर शाला के समीप ही है। शाला तीन मंज़िल ऊंची है और ऊपर गची है। खेलने कूदने के लिये नीचे एक मनोहर और विस्तृत दालान है। गुलाब के पेड़ों ने उसको अधिक सुशोभित कर रखा है। अन्य तरह के भी पेड़ बहुत से हैं। वहीं पर पीतल का अष्टकोना एक घंटा है। एक लोहे का मोटा डंडा है जिसकी सहायता

से घंटा बजाया जाता है। डंडे के दूसरे सिरे पर एक पीतल की सांकल अटकाई हुई है। पाठशाला में जाते ही "गुरुदेव को बंदन" इस आशय का एक प्रार्थनागीत गाया जाता है। हमारी पाठशाला में दस मोटरें हैं। मैंने एक मोटर में बैठ कर दो बार सैर की थी। शाला में जाते समय मेरे साथ एक सेवक रहता है। शाला से प्रतिदिन बुलौवा आता है। मेरी उम्र आठ वर्ष की है। इस समय यहाँ पर कुल दस कक्षाएं हैं। हमारी कक्षा तीसरे मंज़िल पर है। मैं शाला में झोली ले जाती हूं। एक छोटा सा गोल ताला है। पुस्तकें कभी भी चोरी नहीं जातीं। यहाँ पर सायकिलें हैं, पर शाला में आने के लिए उनको कोई काम में नहीं लाता। शाला में कुवाँ और नल है। प्रत्येक कक्षा में पानी से परिपूरित एक बरतन रखा रहता है। पानी पीने के लिये पीतल व ताँबे के छोटे छोटे प्याले रहते हैं। शाला में स्लेट पट्टी भी ले जानी पड़ती है। यहाँ पर भी तुम्हारे यहाँ के समान पत्थर की स्लेटें, पट्टीयाँ हैं। वे ही हम ले जातीं हैं। शाला में बैठने के लिये टाट पट्टियाँ नहीं हैं। बेत से बुनी हुई कुर्सियां हैं। एक एक विद्यार्थिनी को एक एक कुर्सी बैठने के लिये दी जाती है। एक झंगा पहिन कर शाल मैं जाती हूं। सिर में तोता रंग का फीता बाँधती हूं। एक घंटे के वास्ते घर आती हूं। पीले रंग का पादत्राण और चट्टी पहनती हूं। मोजे नहीं पहनती। बाल छुट्टे ही रहते हैं। कभी कभी अंजीरी रंग की साड़ी भी पहिनती हूँ।

कल पाठशाला में समारंभ था। हम दोनों को पारितोषक मिले। मुझे रबर की गुड़िया और उसे गायन की पुस्तक और मिठाई के दोने मिले। सन्ध्या को सात बजे हम घर को आये। भोजन किया और सो गये। पारितोषक समारंभ में मुझे १०० पृष्ठ की एक पुस्तक मिली। पांचवी पुस्तक में ढिलाई का दुष्परिणाम शीर्षक एक पाठ है। चार पाँच दिन पहिले, इतिहास बढ़ाया गया था। (एक समय उसने कहा मेरी हँसी मत करो।) मेरी मा सुबह आयी थी। मुझे हँसी आती है। मुझे आप से बातचीत करना था। इसलिये मैं आयी हूं आज आपने लड्डू बनाये थे। मैं अब थकी हूँ। आज मेरी मा नहीं आवेगी। मुझे मा ने भेजा है। मैं तुम्हारी कन्या हूँ। मैं दिन के प्रथम भाग में शक्कर दूध और रोटी सेवन करती हूँ। मेरा इमतहान एक मास में होगा। यहाँ मेरे समान उम्र की सहेलियाँ हैं। उनके साथ मैं खेलती हूँ। एक का नाम मनोरमा और दूसरी का मानका है। दस बारह सहेलियाँ हैं। उनके साथ मैं खेल में जाती हूँ। तुम प्रातःकाल मेरा स्मरण करते थे; इसलिए मैं आयी। सबेरे शाला में गयी थी"

## एक अति ही विचित्र हंसाने वाली कथा–

एक दफे मेरी मृत लड़की ने लिख करके मुझसे कहा कि मेरी मांने मुझे आप के पास आने के लिये आग्रह किया है। मैं आप को एक तमासे की बात सुनाती हूं एक दिन मैं अपनी मां के साथ अपने बड़े गुरुजी के पास गई थी मेरी मांने उनको नमस्कार

किया तो मैंने भी नमस्कार किया—तब गुरुजी ने मुझ से कहा क हे बालक मैं तुम को एक नये शहर को भेज दूं? तब मैंने पूछा कि महाराज कहां—तब गुरुजी ने कहा "मृत्युलोक में"—इसको सुन कर मैं डर गयी और रोने लगी। मैंने कह दिया कि मैं वहां नहीं जाऊंगी मैं तो यहां ही बहुत खुश हूं—तब गुरुजी ने मेरी माता को की तरफ़ देख करके कहा कि तुम इससे पूछो। तुम इससे मेरी मां ने मुझ से पूछा तो मैं बहुत ही ज्यादे डरने लगी और गुरुजी के पर पकड़ कर कह दिया कि और जो आप की खुशी आवे सो करो परन्तु इस जगह से और कहीं मुझे मत भेजिये—मेरी यह बात सुनके उनके मन में क्या बात आगई सो तो मैं जानती नहीं पर उन्होंने कहा कि शाबाश मेरी प्यारी बच्ची कुछ मत डरो, जाओ मैं तुम को कभी नहीं भेजूंगा। मैंने तो सिर्फ़ तुम्हारी परीक्षा की थी—ऐसा करके मैं उस आपत्ति से बच गयी-यह लोक मुझ को बहुत ही पसन्द है। माता जी और मैं दोनों इस कार्य में तुम्हारी मदद करेंगी।

बच्चों के विषय में मि० बुश ने मुझको ये समाचार लिखे थे—

ऐसा कुछ नियम सा मालुम होता है कि जब परलोक से आत्मा आती हैं तो उनको इस संसार की प्रणाली के अनुसार उदर में आकर जन्म लेकर आना होता है और जिस व्यवस्था

तथा सांसारिक सुख दुःख के आडंबर को छोड़ कर चली गई थी उसी खेल में फिर पड़ना पड़ता है—

एक वृद्ध आदमी वृद्ध, एक अपाहिज अपाहिज होकर के, एक बच्चा बच्चे की तरह, एक औरत औरत ही होकर और पुरुष पुरुष होकर के जन्म लेता है बहुत जन्म जन्मान्तर तक इसी तरह जन्म मरण का अनुभव करते करते बहुत काल में दुख भोगा तथा रोगादिकों को सहन करते करते फिर फिर कर इस चौरासी लाख योनि को जीत लेने को कभी समर्थ हो जाता है जैसे वे यहां से गये थे यदि वे वैसे ही वापिस न आजाते तो वे कभी पहचाने न जाते—तुम्हारी लड़की जैसी मर कर के गयी थी यदि वैसे ही रूप ढंग से फिर लौट कर आवे तो तुम उसको पहचान लोगे—तो भी मुझे निश्चय है कि वह छोटी तो है पर उसको बुद्धि बहुत है—भजन के प्रभाव से चाहे वह एक बड़ी औरत हो गयी हो परन्तु उसके शरीर के बल पराक्रम से वह अभी बालक ही मालुम होती है। प्रबन्धानुसार बहुत ज्यादे काम लेने के लिये उसको परिपक्वता को पहुंच ही जाना चाहिये। यदि कोई जीव बालकपन में ही मर जाय ( वह मरा हुआ ही पैदा हुआ हो और अपनी माता के शरीर से अलग कभी न रहा हो ) तो आत्मा जिसका आन्तरिक भाग शरीर का अच्छी तरह बना भी नहीं है आत्मा ने शरीर अच्छी तरह से धारण नहीं कर पाया है तो वह बढ़ता चला जाता है जब तक वह पूर्ण रीति से जवान

न हो जाय—यही समाचार परलोक वासी सब आत्माओं से एक से मिले हैं—छोटा बालक बड़ा होकर पूर्ण मनुष्य हो जाता है या पूर्ण स्त्री हो जाता है—और एक वृद्ध पुरुष या स्त्री फिर से जवान हो जाता है उसकी इन्द्रियों में जवानी मालूम पड़ती है क्योंकि वृद्धावस्था और उसकी अशक्ति तो सिर्फ देहधारी के लिये होती है।

एक स्कूल का वृत्तान्त—

चौथी अगस्त सन् १९२८ को जब हम एक प्रयोग कर रहे थे कि वह अचान्चक आगयी और अपने स्वर्ग लोक के स्कूल का एक बड़ा सुन्दर हाल कहने लगी। उसने कहा कि "एक बड़ा मैदान है उसमें एक बगीचा है जिसके भीतर एक बड़ासा मकान बना हुआ है जिसके सात भाग किये हुये हैं। पहले में प्रार्थना होती है, दूसरे में सिखाया जाता है कि प्रार्थना के समय अपने चित्त को उसमें कैसे लगा देना और उसके पहले क्या करना चाहिये। तीसरे भाग में पठनपाठन होता है जहां हम को सब विद्याएं सिखाई जाती हैं। चौथे भाग में भोजन कराया जाता है। पांचवे भाग में जप तपादि सिखाया जाता है। चित्त की एकाग्रता बहुत जरूरी है और रोज़ सिखाई जाता है। संस्कृत विद्या भी यहां सिखलाई जाती है। छटे भाग में सब अध्यायक लोग एकट्ठे हो करके बैठते हैं। और सातवें भाग में बाग बगीचे की कृषि विद्या सिखाई जाती है। मेरी दिनचर्या निम्न रीति से पूरी

होती है। मैं सवेरे ४-३० बजे उठती हूं और घर के सब काम करके पांच बजे तक प्रार्थना में जाने के लिये तैयार हो जाती हूं। वहां हम को एक घंटा लग जाता है; उसके बाद हमारे साथ एक अध्यापक हम को लेकर मंदिर को जाते हैं। हम को घर लोटते हुए ७-३० बजे जाते हैं तब हम अपना पढ़ना लिखना शुरू कर देते हैं। हम आधे घंटे तक पुस्तकें पढ़ते हैं। पुस्तकों की जिल्दें बन्धी हुआ नहीं हैं और बहुत सी पुस्तकें तो पेड़ों की छाल पर लिखी हुई होती हैं। लाल अक्षुरों से लिखी हुई होती हैं। पत्ते हमारी इस टेबल से भी बड़े बड़े होते हैं। उनको छूने का हमको हुक्म नहीं है। वे टांग दिये जाते हैं तीन घंटे तक विद्या पढ़ाई जाती है। फिर हम सब मंदिर को जाते हैं। जहां से १२ बजे लोट कर आते हैं। तब हम अपना भोजनादिक करते हैं और फिर पढ़ने बैठ जाते हैं। ४-३० बजे तक बहुत सा समय हमारा धर्म शास्त्र के अभ्यास में जाता है, विद्याध्ययन करने में और प्रभू के मनन करने में जाता है फिर आधे घंटे तक हम को कृषि विद्या सिखाई जाती है। फिर सात बजे हम मंदिर को जाते हैं और वहां ईश्वर प्रार्थना आदि करते हैं। एक अध्यापक साथ आकर हम को घर तक पहुंचा जाता है। रात को १० बजे फिर ईश्वर भजन होता है उसके पीछे हम कुछ आहार आदि करते हैं। इसके उपरान्त कोई आदमी पढ़ते लिखते रहते हैं तो कोई लोग कुछ और कार्य किया

करते हैं। हम रात को १२ से ४ तक सोते हैं। लड़के लड़कियां एक जगह नहीं रहते हैं। परन्तु सब जातियों की लड़कियां एक ही जगह रहती हैं"।

---

# सातवां अध्याय

## परलोक संसार से बात चीत करने की विधि--

रलोक संसार वासियों से साधारण रूप से बात-चीत मध्यस्थ के द्वारा हो सकना संभव है। कायदा है कि " मध्यस्थ न होने से स्वर्ग लोक से बातचीत नहीं हो सकती " यह बात इससे समझ में आती है कि स्वर्ग लोक वासियों से बातचीत करने के लिये मनुष्य में इस आत्मिक विद्या की योग्यता होनी जरूरी है। वग़ैर मध्यस्थ के बात कर लेना संभव हुआ हो ऐसे अवसर कम ही देखने में आये हैं और प्रत्येक मनुष्य को इस काम में दूसरे की सहायता लेनी पड़ती है या अपने आप उसकी योग्यता प्राप्त करनी पड़ती है। जैसे कि बहुत से आदमी समझते हैं कि स्पीरीचुएलिज्म में ही ये योग्यता सीखनी पड़ती है सो बात नहीं है। संसार के हर एक कार्य हम को किसी ऐसे होशियार आदमी के पास जाकर सीखना पड़ता है जो उस विद्या में निपुण हो

चुका हो। तो इसमें कोई आश्चर्य की बात ही नहीं है कि मनुष्य को परलोक से बातचीत करने के लिये आत्मिक विद्या जानने वाले की मदत लेनी ही पड़ती है। मध्यस्थ उसको कहते हैं जो पुरुष इस लोक और परलोक के बीच वहां के वासियों से बातचीत कर सकने की योग्यता रखता हो। उसकी साइकिक तथा आत्मिक योग्यता दो संसारों के बीच मेल कराने का पात्र होती हैं। उसके बग़ैर बातचीत हो सकना संभव नहीं है। मध्यस्थ के सिवाय जो लोग सरकल (टेबल के चारो तरफ़) बैठते हैं उनकी पवित्र शुद्ध मनोवृत्ति भी इस काम में बहुत कुछ असर डालती है। वे लोग ऐसे होने चाहिये कि न तो हरेक बात को जल्दी से विश्वास ही कर लें और न वे इस काम की टीका करने में बहुत भाग लेते हों। दोनों अवगुण उनमें अतिशयता को न पहुंच गये हों। साधारण बृत्ति के आदमियों के साथ कार्य की सफलता होती है। इस कार्य की सफलता के लिये आदमी की मनोवृत्ति कैसी होनी चाहिये सो हम इस पुस्तक के किसी प्रकरण में पहले मि० बुश की चिट्ठियों के आशय से जिसमें बड़े महत्व की विद्वत्ता भरी है लिख आये हैं सो देख लेना चाहिये। इस बिद्या के सीखने वाले मुमुक्ष को उचित है कि जब इसके साधनों के अभ्यास का आरम्भ करे उससे पहले उस प्रकरण को अच्छी तरह से मनन करले; जिससे उसको उन आपत्तियों में न पड़ जाना पड़े जो इस विद्या की स्वाभाविक

आपत्तियां होती हैं। जहां अच्छा है तहां बुरा भी है ही—फिर परलोक वासी भी इस कार्य में तुम्हारी सहायता करने की कृपा रखें ये बात भी आत्म विद्या के चलाने में जरूरी है वे अन्तःकरण से दया करके यह सोचलें कि मृत्यु लोक में तुम्हारी सहायता करनी चाहिए। हमारी शक्ति से ये बात बाहर है कि हम आत्माओं को अपने वश में रखें या वे हमारी आज्ञा मानें ऐसी शक्तियां परजाने का विचार करना ही मूर्खता है। प्रेम बन्धन एक ऐसी बलवान शक्ति है जिससे वे कृपा करके हमारे कार्य में हाथ बटाती हैं और जब सब साजसामान ठीक हो तो वे हम से बातचीत करने को तैयार रहती हैं। अपनी साइकिक शक्ति हमारे कार्य में लगाने की शक्ति उनको प्राप्त करनी पड़ती है। बाज़ी दफे जो वे हम लोगों से बातचीत नहीं कर सकतीं इसका कारण यही है कि बहुत सी आत्माओं को यह बात नहीं मालूम होती कि मृत्युलोक वालों से कैसे बातचीत करना चाहिये। वे अपने विचारों को हमसे अच्छी तरह प्रकट नहीं कर सकतीं। बाज़ी बाज़ी आत्माएं इतनी बुद्धिमान और प्रवीण होती हैं कि आप दूसरों की गुरू बन जाती हैं और उन को लाकर के सीएन्सों में शामिल करा देती हैं। सीएन्स की बैठक के समय आत्माओं से पधारने की जो नम्र बिनती तथा प्रार्थना की जाती है उसमें से एक बुलाने की शक्ति निकलती है जिससे आत्माओं को इच्छा हो जाती और वे कृपा

करके हमारी सीएन्स में भाग लेने लगती हैं—अकसर ऐसा हो जाता है कि वे अपने मन से चले आती हैं और बहुत ऐसी आत्माएं आकर बातचीत करने लगती हैं जिनको हम बिलकुल नहीं जानते हैं—आत्माओं से बातचीत के जो बहुत से नये नये उपाय निकाले गये हैं वे सब सिर्फ आटोमेटिक राइटिंग को ही मदत पहुंचाते हैं और उनसे कुछ मतलब नहीं निकलता है—सीएन्स करने के लिये मध्यस्थता की योग्यता का होना बहुत ही ज़रूरी है और यदि यह योग्यता नहीं है तो और कोई तदबीर काम नहीं देती और कोई अच्छा फल नहीं होता—बहुत से लोगो ने मूर्खता से इसके लिये सब तरह के उपाय निकाले परन्तु उसके तत्व तथा नियमों के बिना जाने उनकी आशा निराशा में ही परिणत हुई—आजकल इस बात की कोशिश हो रही हैं कि एक ऐसी मेशीन या यंत्र निकाला जाय जिससे बिना मध्यस्थ के स्वर्ग से बातचीत हो जाया करे। परन्तु अच्छे विद्वानों का ऐसा मत है कि इसमें सफलता होनी मुशकिल है। वे साइकिक शक्ति किसी यंत्र द्वारा मिलना कठिन है अथवा उनमें नही हो सकती।

बहुत अच्छे यंत्र द्वारा साइकिक शक्ति की आवश्यकता कुछ कम होजा सकती है परंतु बिलकुल आवश्यकता न रहे सो नहीं हो सकता

परलोक संसार के साथ बहुत से उपायों करके बातचीत हो सकती है जिनमें से टेबुल टरनिंग, आटमेटिक राइटिंग और ट्रेन्स इत्यादि हैं। हर एक रास्ते का महत्व उसके साथ रहता है

और बैठक करने वाले को उसके प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं—इससे भी बढ़ कर महत्व के विषय हैं क्लेअर वोएन्स तथा दिव्य दृष्टि होना, क्लेअर ओडिएन्स तथा प्रत्यक्ष होकर बात चीत करना, डाइरेक्ट वोइस तथा सामा सामने कान से सुनना, फोटोग्राफी तथा आत्मा की तसबीर ले लेना और मेटीरियेलाइजेशन तथा स्थूल रूप धर के सामने आना, ये सब मन तथा नेत्रों को बड़ा आनन्द देने वाली शक्तियां हैं परन्तु ये योग्यता क्वचित कहीं होती हैं और मुशकिल से प्राप्त होती हैं—आटोमेटिक राइटिंग बातचीत करने का सब से आसान सीधा रास्ता है। मैं प्रत्येक मुमुक्षु को शिक्षा देता हूं कि अपने घर में अपने घर के लोगों को साथ लेकर इसका अभ्यास करें—इससे आसान दूसरा रास्ता कोई नहीं है इसी रास्ते पर जब तक तुमको सफलता प्राप्त न हो अभ्यास करते चले जाओ—इस विद्या के ख़ास नियमों का बाँधना मुशकिल है क्योंकि ये विद्या मृत्यु लोक तथा परलोक दोनों से मिल करके चलती है। कभी कभी ऐसा भी हो जाता है कि मध्यस्थ बहुत प्रवीण होता है तो भी उत्तर ठीक ठीक नहीं मिलते और कभी कभी ऐसा भी हो जाता है कि परिणाम बहुत अच्छे हो जाते हैं। मि० बुश लिखते हैं कि इस कार्य में मुख्य भाग परलोक वासियों का होता है, उन्हीं पर सब निर्भर है। वे कृपा करें तो हमारी शक्ति भी काम करती है—वातावरण अच्छा होना आपस में सब में अति प्रेम होना ये स्वर्ग से बातचीत करने की विद्या के मूल मंत्र हैं।

# परिशिष्ट ।

## महाभारत में मृत पुरुषों के दर्शन ।

स्प्रिचुएलिज़्म की आज योरुप और अमरीका में धूम है । उन देशों में इस विज्ञान की खोज गत अस्सी नब्बे वर्षों से की जा रही है । वहाँ के मनीषो विद्वज्जन इस विज्ञान को अग्रसर करने के लिये सदा सचेष्ट बने रहते हैं । इंगलेंड में और फ्रांस में इस विज्ञान का अध्ययन अत्यधिक किया जा रहा है । वहाँ केवल इसी विज्ञान के प्रचारार्थ कई एक अच्छे अच्छे साप्ताहिक पत्र भी निकलते हैं । जो लोग अपने समय का एक सैकंड भी वृथा गँवाना पाप समझते हैं, वे क्या निष्प्रयोजन ही इस विज्ञान की चर्चा में अपना अमूल्य समय नष्ट करेंगे ? कदापि नहीं । उन लोगों ने इस विज्ञान द्वारा बड़ा लाभ उठाया है । उन लोगों को जन्मान्तरवाद में पूर्ण विश्वास हो गया है । वे अब मृत्यु को महा भयङ्कर घटना नहीं समझते । वे अब अपने प्रियजनों के वियोग-जनित शोक के शिकार नहीं बनते और किसी आत्मीय बन्धु के मर जाने पर हताश नहीं होते । इस विज्ञान द्वारा वहां के लोगों

ने असाध्य-साधन कर दिखलाया है और हमारे इतिहास पुराणों में वर्णित परलोक सम्बन्धी वर्णनों की सत्यता प्रमाणित कर ली है। इस विज्ञान की योरुप और अमरीका में अभी शैशवावस्था है। जिस समय यह विज्ञान प्रौढ़ावस्था को पहुँचेगा, उस समय संसार में लोगों के सहियों के विचारों में क्रान्ति उत्पन्न होगी और तब हमारे सनातन धर्म का डंका सारे विश्व में बजेगा।

इस निबन्ध में हम आज यह दिखलाना चाहते हैं कि हमारे प्राचीन कालीन महर्षियों द्वारा रचित इतिहासों में भी स्प्रिचुअलिज्म का उल्लेख किया गया है। महर्षि द्वैपायन वेदव्यास ने अपनी लोकप्रसिद्ध महाभारत संहिता में इस विज्ञान का अच्छा निदर्शन कराया है। हम अपने इस विज्ञान प्रेमी और जिज्ञासु देशवासियों से अनुरोध करेंगे कि यदि वे संस्कृत भाषा जानते हैं, तो उन्हें महाभारत का आश्रमवास पर्व देखना चाहिये। यद्यपि इस पर्व में केवल ३९ ही अध्याय है; तथापि जिन्हें अवकाश का अभाव है, वे इन ३९ अध्यायों को न पढ़ केवल व्यास-युधिष्ठिर संवादात्मक २७ वें अध्याय से ३५ वें अध्याय तक अवश्य इस पर्व को एक बार पढ़ कर देख लें कि उनके पूर्व पुरुष इस विज्ञान में कहां तक योग्यता संपादन कर चुके हैं। हमारा विचार था कि हम आनुपूर्वी वर्णन श्लोकों में देते, किन्तु स्थान के संकोच से हम उक्त अध्यायों का संक्षिप्त सार, इसलिये दिये देते हैं, जिससे लोग मूल ग्रन्थ को विशेष रुचि के साथ पढ़ें और इस

विज्ञान की प्राचीनता और सत्यता पर विश्वास करें। यद्यपि लोगों के विश्वास करने अथवा न करने से लेखक की कुछ भी क्षति नहीं और न विज्ञान की प्राचीनता और सत्यता ही की कोई क्षति हो सकती है। तथापि लेखक कर्तव्यानुरोध से यह आवश्यक समझता है कि जिस विज्ञान से लेखक के अशान्त चित्त को शान्ति मिलती है, जिस विज्ञान द्वारा लेखक को दीर्घकाल से विछुड़े हुए आत्मीय वन्धुवान्धवों से वार्तालाप कर आनन्द प्राप्त होता है, उस विज्ञान का अनुभव प्राप्त कर अन्य लोग भी अपने अशान्त चित्त को शान्त करें और चिर काल से विछुड़े हुए आत्मीय जनों से मिल कर आनन्दित हों। क्योंकि "परोपकाराय सतां विभूतयः" प्रसिद्ध लोकोक्ति है।

अच्छा, अब प्रकृति विषय की ओर ध्यान दीजिये। जब भीम के कटु वाक्यों से विरक्त हो धृतराष्ट्र राजप्रासादों को त्याग वन में तप कर शरीर त्यागने को चले, तब उनके साथ उनकी सती साध्वी पत्नी गान्धारी और पाण्डवों की माता और श्रीकृष्ण की बुआ कुन्ती तथा विदुर जी भी बन को गये। गान्धारी और धृतराष्ट्र तो अपने सौ पुत्रों के मारे जाने से अपार शोकसागर में निमग्न थे, और कुन्ती को अपने पुत्र कर्ण और पौत्र अभिमन्यु आदि के युद्ध में मारे जाने का अपार शोक था। इस शोक के आघात से तीनों के हृदय विदीर्ण हो रहे थे और न तो निज पुत्र पाण्डवों को साम्राज्य की प्राप्ति ही कुन्ती के इस शोकवेदना को

दूर करने में समर्थ हो सकी और न राज प्रासाद का निवास धृतराष्ट्र और गान्धारी के हृदयों के घावों को भर सका। इतना ही नहीं, वन में बास करते समय भी और तपश्चर्या में निरत रहने पर भी तथा वहाँ बड़े बड़े संसार त्यागी ऋषियों और मुनियों के उपदेशामृत को पान करके भी इन तीनों का मानसिक शोक दूर न हुआ और जब कभी अवसर आता तब वह शोक उभल पड़ता था।

एक दिन की बात है। पांचों भाई पाण्डव अपनी माता कुन्ती और चचा धृतराष्ट्र, विदुर एवं चाची गान्धारी के दर्शन करने को बन के बीच उनके आश्रम में पहुँचे। दैवात् उसी समय वहाँ उस वन में रहने वाले अनेक ऋषि और महर्षि वेदव्यास जी भी जा पहुँचे। इन तीनों दुःखियों के व्यथित हृदयों में शान्ति का सञ्चार करने के लिये व्यास देव ने अनेक शास्त्रीय उपदेश दे संसार की अनित्यता दिखलायी, पर उनके उन उपदेशों का उन तीनों दुःखियों पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। कुन्ती ने वेदव्यास जी के समस्त ज्ञानोपदेश को सुन अन्त में कहा—भगवन्! आप तो मुझे एक बार कर्ण को दिखला मेरी मनोकामना पूरी करें। इसी प्रकार धृतराष्ट्र और गान्धारी ने दुर्योधनादि पुत्रों को एक बार दिखला देने के लिये व्यासदेव से प्रार्थना पूर्वक अनुरोध किया।

तब वेद व्यास जी ने कुन्ती से कहा—कुन्ती! तेरी अभिलाषा पूरी होगी। तेरी समस्त मानसिक पीड़ाएँ दूर होंगी। फिर

व्यास ने गान्धारी से कहा—हे गान्धारी! रात बीतने पर सोकर उठे हुए लोगों की तरह, तू अपने पुत्रों और बधुबाधवों को तथा पितृकुल के लोगों को देखेगी। कुन्ती कर्ण को, सुभद्रा अभिमन्यु को, द्रौपदी अपने पांचों पुत्रों को, अपने पिता को और अपने भाइयों को देखेगी। तुम लोगों के मनों में परलोक सम्बन्धी जो दुःख बहुत दिनों से बसा हुआ है, उसे मैं अब दूर कर दूंगा। अब तुम सब लोग गङ्गाजी के तट पर चलो। वहाँ तुम लोगों को समर में मारे गये तुम्हारे स्वजन दिखलायी पड़ेंगे।

व्यास जी के इन वचनों को सुनकर वे सब लोग हर्षित हो गये और हर्षध्वनि करते हुए श्री गङ्गाजी की ओर चल दिये। धृतराष्ट्र अपने मंत्री, पांचों पाण्डवों और सभागत महर्षि मण्डली तथा गन्धर्वों सहित गङ्गा तट की ओर चले। धीरे की। चलते हुए वे सब गङ्गातट पर जा पहुंचे और तट पर ही टिक गये। मृत पुरुषों को देखने की अभिलाषा रखने वाले, वे सब लोग, रात होने की प्रतीक्षा करने लगे। उन लोगों को वह दिन सौ वर्षों के समान, लंवा जान पड़ा। जब भगवान् सूर्यदेव अस्ता चल गाती हुए; तब उन लोगों ने सायं-सन्ध्योपासनादि अन्दिक कर्म किये। (अध्याय ३१)

सन्ध्योपासन से निवृत्त हो, वे सब लोग व्यास जी के डेरे पर पहुँचे और पाण्डवों तथा ऋषियों सहित धृतराष्ट्र, व्यास देव जी के निकट जा बैठे। धृतराष्ट्र के साथ गान्धारी आदि

स्त्रियां भी बैठीं। पुरवासी तथा अन्य जन भी यथा योग्य स्थानों पर जा बैठे। तब परमतेजस्वी व्यासदेव ने गङ्गा के जल में घुस मृतात्माओं का आह्वान किया। पाण्डव और कौरव पक्षों के शिवीरों और अनेक देशों के महाभाग राजाओं का जल के निकट वैसा ही तुमुल कोलाहल सुन पड़ा, जैसा कुरुक्षेत्र में युद्ध के समय हुआ था। तदनन्तर वे समस्त योद्धा जल के बाहिर आये। सब के आगे भीष्म और द्रोणाचार्य अपनी सेनाओं सहित चले आते थे। राजाद्रुपद और विराट अपने पुत्रों और सेना सहित बाहिर आये। द्रोपदी के पांचों पुत्र, सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु, भीम का पुत्र घटोत्कच, कर्ण, दुर्योधन, महारथी शकुनि, दुःशासनादि धृतराष्ट्र के महाबली पुत्र, जरासंध के महापराक्रमी पुत्र भगदत्त, जलसिंधु, भूरिश्रवा, शल, शल्यां, छोटे भाइयों सहित कषसेन, राजपौत्र लक्ष्मण, धृष्टद्युम्न का पुत्र, शिखकी के समस्त पुत्र, छोटे भाइयों साहित धृष्टकेतु, अचल, वृष्ट का अलामुध, राक्षस, सोमदत्त, बाल्हीक का चेकितान आदि तथा अन्य बहुत से राजा, तेजोमय शरीर धारण किये हुए जल के बाहिर आये। जिस वीर की जो पोशाक थी जो ध्वजा और जो उसका बाहन था, वह उसी पोशा को पहिन और वही ध्वजा लगाये और उसी बाहन पर सवार वह देख पड़ा। इस समय उनमें यदि कुछ अन्तर पड़ गया था यही जी कि वे न तो जीवित दशा की तरह एक दूसरे

से वैर करते थे और न उनमें पूर्व समय जैसा अहङ्कार,क्रोध तथा डाह ही रह गया था। उनके आगे गन्धर्व गाते बजाते चले आते थे। बन्दीजन उनकी विरुदावली का बखान कर रहे थे और बढ़िया पोशाकों और आभूषणों से सजी हुई अप्सराएँ नृत्य कर रही थीं।

हर्षितमना वेदव्यास ने निज तपोबल से महाराज धृतराष्ट्र को दिव्य दृष्टि प्रदान की। दिव्य ज्ञान और दिव्य बल से युक्त गान्धारी ने उन समस्त अपने पुत्रों को और समर में हताहत अन्य लोगों को भी देखा। यह विलक्षण चमत्कार देख देखने वालों के रोंगटे खड़े हो गये किन्तु वे टकटकी बांधे देखते ही रहे। यह अद्भुत दृश्य उन लोगों को ऐसा जान पड़ा, मानों कपड़े पर खिंचे हुए स्त्री पुरुषों के चित्र हों। वेदव्यास जी की कृपा से धृतराष्ट्र दिव्य दृष्टि से उन सब को देख, परम प्रसन्न हुए। (अध्याय ३२)

क्रोध, ईर्ष्या, और पापों से शून्य वे समस्त लोग, जीवित पुरुषों से परस्पर मिले भेंटे। वेदव्यास जी की बतलायी विधि के अनुसार वर्ताव कर, धृतराष्ट्र आदि पुरुष और गान्धारी आदि स्त्रियां देव लोक वासी देवताओं की तरह हर्षित थीं। पिता अपने पुत्र से, पत्नियां अपने पतियों से, भाई भाइयों से, मित्र मित्र से बड़े स्नेह, बड़ी प्रीति और बड़ी भक्ति के साथ मिले। पांचों भाई पाण्डव अपने ज्येष्ठ सहोदर कर्ण से, सुभद्रा

नन्दन अभिमन्यु से और द्रौपदी के पांचों पुत्रों से मिले। व्यास देव के अनुग्रह से उन भूत क्षत्रियों का अहङ्कार दूर हो गया था। अतः वे लोग आपस में मिले भेंटे। उनकी पूर्व कालीन शत्रुता अब मैत्री में परिणत हो गयी। अपने बिछुड़े हुए भाई बन्धु और आत्मीय जनों से मिले। हर्षित-मना राजाओं के लिये वह स्थान स्वर्ग भवन के समान हो गया। उनका एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास हो गया था और वे अब परम हर्षित देख पड़ते थे। उस समय उन शूरवीरों में शोक, भय, उद्विग्नता, अप्रीति और अपकीर्ति का लेश मात्र भी न रह गया था। अपने अपने पिताओं, भाइयों और पुत्रों से मिला। राजघराने की विधवा स्त्रियों को बड़ा हर्ष हुआ। उनके मन का सारा दुःख दूर हो गया। रात भर वे मृतात्मा अपने अपने आत्मियों से मिले और हर्षित हो रात बीतने के पूर्व ही जैसे आये थे, वैसे ही चले गये। (अध्याय ३३)

आजकल के स्पिरिचुअलिस्टों को परलोक से जो संदेश मिले हैं उनसे यह बात सिद्ध है कि जो लोग मरते हैं, उनकी परलोक में जाने पर स्वजनों से भेंट होती है। यह बात भी महाभारत में लिखी है। उक्त अध्याय ही में लिखा है कि वेदव्यास जी ने विधवा स्त्रियों से कहा जो स्त्रियां अपने पतियों के साथ जाना चाहें वे सावधानता पूर्वक गङ्गा में प्रवेश करें। वेदव्यास के इस वचन को सुन अनेक पति-परायणा

स्त्रियों ने तदनुसार ही किया और वे परलोकवासी पतियों से जा मिली थी।

इसके आगे अध्याय ३४ और ३५ में लिखा है कि इस वृत्तान्त को जब राजा जन्मेजय ने वैशम्पायन के मुख से सुना तब उन्हें यह वृत्तान्त छलावा जान पड़ा और आजकल के लोगों की तरह इस पर विश्वास न कर सके कि और शङ्का कर बैठे कि जो आत्मा इस पाञ्चभौतिक शरीर को छोड़ देते हैं उनका पुनः दर्शन पाञ्चभौतिक शरीर धारी जनों को कैसे होता है। शास्त्रीय युक्तियों से वैशम्पायन जी ने जनमेजय की शङ्का का समाधान किया तो, किन्तु कुतूहल-प्रिय राजा जनमेजय का कुतूहल बढ़ता ही गया और अन्त में बोले—हे वैशम्पायन! यदि व्यास जी मुझे मेरे पिता (परीक्षित) का दर्शन उनके उसी रूप और वेष तथा अवस्था में करा दें, तो मुझे आपकी बातों पर पूर्ण विश्वास हो सकता है। (अध्याय ३५)

इस पर वेदव्यास जी ने राजा परीक्षित के दर्शन जनमेजय को कराये। केवल राजा परीक्षित ही के दर्शन हुए हों सो नहीं—बल्कि महाभारत में लिखा है कि सुरलोक से आये हुये मंत्रियों सहित अपने पिता को उनके पूर्ण रूप वेष और अवस्था में देखा। उनके साथ महात्मा शमीक और उनके पुत्र शृङ्गीऋषि भी थे। तदनन्तर अति हर्षित हो, यज्ञ के अन्त में जनमेजय ने अपने पिता को स्नान करवा कर, स्वयं स्नान किये। उस समय

राजा जनमेजय ने आस्तीक ऋषि से कहा—हे आस्तीक! मुझे अपना यह यज्ञ महा आश्चर्य-जनक जान पड़ा। क्योंकि मेरे शोक को नाश करने वाले पिता जी यहां पधारे हैं। ( अध्याय ३५ )

लोगों को प्रायः शङ्का हुआ करती है कि जब जीवात्मा को अपने शरीर के साथ समस्त इन्द्रियों को त्याग देना पड़ता है, तब परलोक गत जीव मृत्यलोक वासी एवं शरीरधारी पुरुषों जैसे क्योंकर दिखलायी पड़ते हैं। इसका भी समाधान महाभारत के शान्तिपर्व अ० २५८ श्लोक ३८ में स्पष्ट शब्दों में कर दिया गया है। वहाँ लिखा है :—

जैसे सुषुप्त अवस्था में समस्त इन्द्रियां शान्त हो जाती हैं, किन्तु जागते ही वे फिर अपने अपने कार्य करने लगती हैं; वैसे ही मनुष्य जब मरता है, तब वह शान्त हो जाता है, किन्तु उसका जीव परलोक में पहुंच पुनः वे ही समस्त इन्द्रियां प्राप्त करता है और उसकी इन्द्रियां अपने अपने व्यापार करने लगती हैं।

दूसरी शङ्का जो इस विज्ञान के सम्बन्ध में लोगों के मुख से प्रायः सुनी जाती है, वह है आटोमैटिकं राइटिंग के सम्बन्ध में, लोगों की समझ में यह बात नहीं आती कि एक मृतात्मा किसी जीवित पुरुष के शरीर में प्रवेश कर, उसके द्वारा किस प्रकार अपनी इच्छा के अनुसार काम करावा करता है। ऐसे

लोगों को यदि अपने घर की खबर हो तो वे कभी ऐसा नहीं कह सकते। महाभारत के वन पर्व में यदि वे लोग उस प्रकरण को देखें। जहाँ आत्मग्लानि से पीड़ित शरीर त्यागने को उद्यत दुर्योधन को पातालवासी दैत्यों ने बुलवा कर समझाया है। जो लोग इस प्रकरण को देखना चाहें, वे बन पर्व के अध्याय २५२ को आद्यन्त देख लें, दैत्यों ने दुर्योधन को धीरज बंधाते हुए कहा था :—

"तुम्हारी सहायता को बड़े बड़े वीर दानवों ने धराधाम पर जन्म लिया है। युद्ध के समय भीष्म, द्रोण, कृपाचार्यादि के शरीरों में भी अनेक अनेक दानव प्रवेश करेंगे। इससे वे लोग पाण्डवों के स्नेह को एवं दयाभाव को त्याग कर, तुम्हारे शत्रु पाण्डवों से लड़ेंगे। जब उनके अन्तरात्मा में दानव घुस जांयगे; तब वे इतने क्रूर हो जांयगे कि प्रसन्न हो वे पुत्र, पिता, भाई, बन्धु, शिष्य, जाति विरादरी, किसी बूढ़े को भी जीता न छोड़ेंगे। किन्तु युद्ध में उन सब को मार डालने। उनके शरीरों में दानवों का आवेश होने से उनके मन ऐसे निष्ठुर हो जांयगे, वे लोग स्नेह को त्याग हर्षित हो, अपने भाई बन्धुओं का संहार करेंगे × × × जो नरकासुर श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया था उसका आत्मा कर्ण के शरीर में प्रवेश कर, और पूर्व वैर को स्मरण कर, श्रीकृष्ण और अर्जुन से लड़ेगा। अर्थात्

"हतस्य नरकस्यात्मा कर्णमूर्तिमुपाश्रितः ।
तद्वैरं संस्मरन् वीर ! योत्स्यते केशवार्जुनौ ॥

२० श्लो० अ० २५२ बनपर्व

जब एक मृतात्मा एक जीवित पुरुष के शरीर में प्रवेश कर उस जीवित पुरुष से अस्त्र शस्त्र चलवा सकता है, तब क्या वह एक जीवित मनुष्य के हाथ से लिख नहीं सकता ! अवश्य लिख सकता है। अतः आटोमैटिक राइटिङ्ग (स्वयं लेखन) के सम्बन्ध में जो शङ्का की जाती है वह सर्वथा निर्मूल है।

यदि लोग आँख उठा कर देखें और घटनाओं की आनुपूर्वी आलोचना करें तो मृतात्माओं के जीवित पुरुषों के शरीर में प्रवेश करने की बात समझ में तुरन्त आ जाय। हम देखते हैं कि श्रोत्रिय ब्राह्मण-कुलोत्पन्न एड़े बड़े पदवी धारी ब्राह्मण आज मुर्गी के अंडों को खाने बिना भारत का उद्धार नहीं समझ रहे। बड़े बड़े धर्मात्मा महामना लोग मेहतरों, डोमों को प्रणव सहित मंत्रोपदेश देने ही से भारत का उद्धार मान बैठे हैं। हम पूछते हैं कि ये कृत्य उनसे क्या उनका अन्तरात्मा करवा रहा है ? कदापि नहीं। या तो उनको शरीर में कलिराज का आत्मा घुसा बैठा है—अथवा किसी दानव दैत्य का, उनका अन्तरात्मा कभी ऐसे दुस्साहस पूर्ण धर्म विरुद्ध कार्य न तो करवा सकता और न ऐसे गर्हित उपदेश दिलवा सकता है। ये सब दानव दैत्योचित कर्म दैत्य दानवों के आत्मा इन लोगों से करवा रहे हैं।

सारांश यह है कि स्पिरिचुआलिज्म का विज्ञान भारत की सम्पत्ति है–जो पाश्चात्य देशवासियों के हाथ में चली गयी है। वे इस सम्पत्ति को पाकर नये नये परलोक सम्बन्धि अनुसन्धान कर आशानुरूप लाभ उठा रहे हैं और हमारे देशवासी अतुलित सम्पत्ति-शाली होने पर भी शङ्का समाधान करते ही करते अनि-श्चित दशा में शरीर त्याग चल देते हैं। न स्वयं लाभ उठापाते और न दूसरों को लाभ उठाने देते हैं। इसीसे संशय की गर्हणा करते हुए भगवान् ने अर्जुन से कहा था।

नायं लोकोस्ति न परोः
न सुखं संशयात्मनः।

अतः संशय त्याग कर लोगों को इस विज्ञान से लाभ उठाना चाहिये।

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा,
दारागंज, प्रयाग।

———